ग़रीब व सादा व रंगीन है दास्ताने हरम
निहायत उसकी हसीन इब्तेदा है इस्माईल

सवानेह करबला

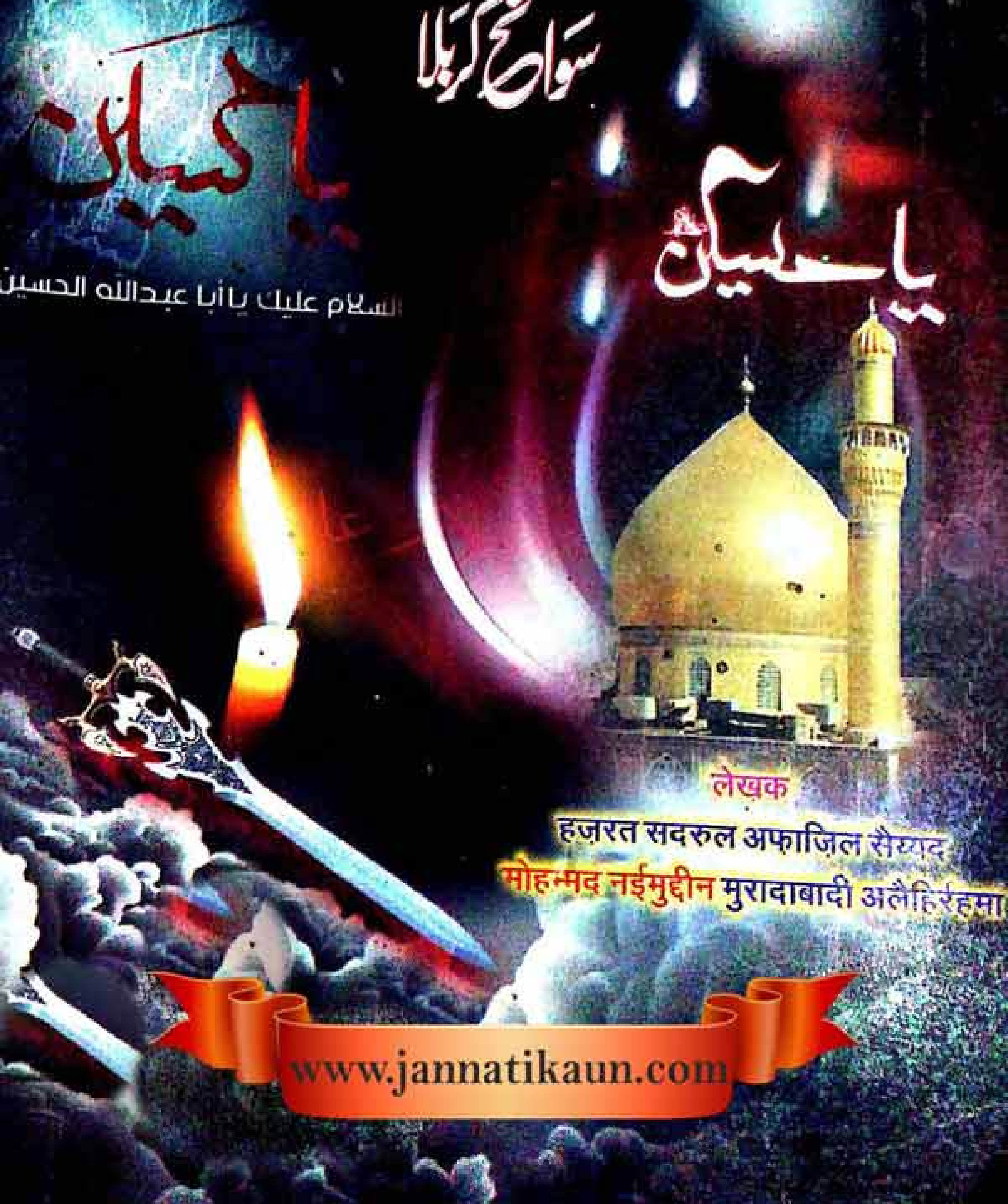

लेखक
हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल सैय्यद
मोहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमा

www.jannatikaun.com

ग़रीब व सादा व रंगीन है दास्ताने हरम
निहायत इसकी हुसैन इब्तिदा है इस्माईल

सवानेह करबला

JANNATI KAUN?

लेखक
हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल सैयद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी
रहमतुल्लाहि अलैहि

विषय सूची

उनवानात	सफ़्हा
रसूले करीम अलैहिस्सलाम की मुहब्बत	5
अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु	10
ख़लीफ़-ए-दोम	22
हज़रम उमर फारूके आज़म	28
हज़रम उमर फारूके आज़म की ख़िलाफ़त	30
ख़लीफ़-ए-सोम	32
ख़लीफ़-ए-चहारुम	37
अह्ले बैते नुबुव्वत	43
हज़राते हसनैन करीमैन	52
सैय्यदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन	61
शहादत के वाक़ेआत	67
हज़रत अमीर मुआविया	69
कूफ़ा को हज़रत मुस्लिम की रवानगी	71
हज़रत इमाम हुसैन की कूफ़ा रवानगी	74
दस मुहर्रम 61 हिजरी के दिलदोज़ वाक़ेआत	87
हज़रत इमाम आली मक़ाम की शहादत	107
वाक़ेआत बादे शहादत	118
इब्ने ज़्याद की हलाकत	122

JANNATI KAUN?

अल्हम्दुलिल्लाह अला एहसानेही। वाकेआते शहादत हज़रत इमामैन जलीलैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा में एक ऐसी तफ्सीली किताब की ज़रूरत थी जो मज़हबी एहतियात और दीनी दयानतदारियों के साथ जमा की गई हो और रफ़्ज़ व खुरूज के इफ़रात व तफ़रीत से पाक हो। मजालिसे शहादत में उसको बेखटक पढ़ा जा सके। पढ़ने वाले पर कोई शरई इल्ज़ाम न आए और वाइज़ीन के लिए वाकेआते करबला का यह बेहतरीन व भरोसेमन्द सरमाया हो मगर ऐसी कोई किताब मौजूद न थी। इस ज़रूरत को पूरा करने के लिए हज़रत सदरुल-अफ़ाज़िल मौलाना हाफ़िज़ हकीम मुहम्मद नईमुद्दीन साहब कुद्दिसा सिर्रुहू ने क़लम उठाया और किताबे नायाब।

सवानेह करबला

JANNATI KAUN?

तस्नीफ़ फरमा कर इस कमी को पूरा कर दिया। किताब के मुताले (पढ़ने) के बाद अस्हाबे इल्म व दानिश को मालूम होगा कि इस बहस में यह किताब अपना नज़ीर व जवाब नहीं रखती है। ज़रूरत है कि तमाम सुन्नी वाइज़ मज्लिस ख़्वानाने शहादत इस किताब से फाइदा उठायें और इसके मज़ामीन मअ़रिज़े बयान में लायें।

नाशिर

रज़वी किताब घर

423, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006, फ़ोनः नं० : 011-23264524

रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की मुहब्बत

हर शख़्स जिसको अल्लाह तआला ने अक़्ल व फ़हम (समझ) की दौलत से सरफ़राज़ फरमाया है यक़ीन के साथ जानता है कि जिसके साथ अक़ीदत व नियाज़ मन्दी ईमान में दाख़िल हो और बग़ैर उसको माने हुए आदमी मोमिन न हो सके उसकी मुहब्बत तमाम दुनिया से ज़्यादा ज़रूरी होगी। माँ-बाप, औलाद, अज़ीज़ व अक़ारिब के भी इंसान पर हुकूक़ हैं और उनका अदा करना लाज़िम है। लेकिन एक शख़्स अगर उन सबको भूल जाए और उसके दिल में एक शिम्मा (रत्ती) भर मुहब्बत व उल्फ़त बाक़ी न रहे और उन सबसे महज़ बेतअल्लुक़ हो जाए तो उसके ईमान में कोई ख़लल न आएगा क्योंकि ईमान लाने में माँ-बाप अज़ीज़ व अक़ारिब औलाद वग़ैरह का मानना लाज़िम व ज़रूरी न था। लेकिन रसूल अलैहिस्सलातु वस्सलाम का मानना मोमिन होने के लिए ज़रूरी है जब तक **ला इलाहा इल्लल्लाह** के साथ मुहम्मदुर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का मोतक़िद न हो हरगिज़ मोमिन नहीं हो सकता। तो अगर उसका रिश्त-ए-मुहब्बते रसूल अलैहिस्सलातु वस्सलाम से टूटा तो यक़ीनन ईमान से ख़ारिज हुआ। कि तस्दीक़े रिसालत बेमुहब्बत बाक़ी नहीं कर सकती। इसलिए शरीअ़ते मुतह्हरा ने रसूल अलैहिस्सलातु वस्सलाम की मुहब्बत हर शख़्स पर उसके तमाम अपने व क़रीबी अइज़्ज़ा व अहबाब से ज़्यादा लाज़िम की है। कुरआन पाक में इरशाद फरमाया :

तरजमा : ऐ ईमान वालो अपने बाप और भाईयों को दोस्त न समझो। अगर वह ईमान पर कुफ़्र पसन्द करें और तुम में से जो उन से दोस्ती करें वही ज़ालिम हैं। (सूरह तौबा आयत 23)

तरजमा : फरमा दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी औरतें और तुम्हारे कुंबा और तुम्हारी कमाई के माल और वह तिजारत जिसके नुक़सान का तुम्हें डर है और तुम्हारी पसन्द के मकान यह चीज़ें तुम्हें अल्लाह और रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो इंतिज़ार करो कि अल्लाह अपना हुक्म लाए और अल्लाह फासिक़ों

को राह नहीं देता। (सूरह तौबा आयत : 24)

तरजमा : और वह जो रसूलुल्लाह को ईज़ा (तक्लीफ़) देते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। (सूरह तौबा आयत : 61)

तरजमा : और अल्लाह व रसूल का हक़ ज़्यादा था कि उन्हें राज़ी करते अगर ईमान रखते थे। (सूरह तौबा आयत : 62)

तरजमा : किया! उन्हें ख़बर नहीं कि जो ख़िलाफ़ करे अल्लाह व रसूल के तो उसके लिए जहन्नम की आग है हमेशा उस में रहेगा। यही बड़ी रुसवाई है। (सूरह तौबा : 63)

मोमिनीन और मोमिनात की शान में इरशाद फरमाया :

तरजमा : और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानें यही हैं जिन पर अंक़रीब अल्लाह रहम करेगा। बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है।

तरजमा : मदीने वालों और उनके आसपास देहात वालों को लाइक़ न था कि रसूलुल्लाह से पीछे बैठ रहें और न यह कि उनकी जान से अपनी जान प्यारी समझें। (सूरह तौबा आयत : 120)

इन आयात से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत बाप व दादा, अंबिया व औलिया, औलाद, अज़ीज़, अक़ारिब, दोस्त, अहबाब, माल, दौलत, मसकन, वतन सब चीज़ों की मुहब्बत से और खुद अपनी जान की मुहब्बत से ज़्यादा ज़रूरी व लाज़िम है। और अगर माँ-बाप या औलाद अल्लाह व रसूल के साथ राब्त-ए-अक़ीदत व मुहब्बत न रखते हों तो उन से दोस्ती व मुहब्बत रखना जाइज़ नहीं। क़ुरआन पाक में इस मज़्मून की सैकड़ों आयतें हैं। अब चन्द हदीसें पेश की जाती हैं :

हदीस : बुख़ारी व मुस्लिम ने हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि

तरजमा : हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम में कोई मोमिन नहीं होता जब तक मैं उसे उसके वालिद और औलाद और सब लोगों से ज़्यादा प्यारा और महबूब न हो जाऊँ।

तरजमा : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तीन चीज़ें जिस में हों वह लज़्ज़त व शीरीनी (मिठास) ईमान की पा लेता है। (1) जिसको अल्लाह व रसूल सारे ज़माने से ज़्यादा प्यारे हों। (2) और जो किसी बन्दे को ख़ास अल्लाह के लिए महबूब रखता हो। (3) और जो कुफ़्र से रिहाई

पाने और मुसलमान होने के बाद कुफ़्र में लौटने को ऐसा बुरा जानता हो जैसा अपने आपको आग में डाले जाने को बुरा जानता है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हुज़ूर से निस्बत रखने वाली चीज़ों को महबूब रखना हुज़ूर की मुहब्बत में दाख़िल है कुदरती तौर पर इंसान जिस से मुहब्बत रखता है उस से निस्बत रखने वाली तमाम चीज़ें उसको महबूब हो जाती हैं। हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत रखने वाले भी हुज़ूर के वतने पाक के रहने वालों और हुज़ूर अलैहिस्सलात से निस्बत रखने वाली हर चीज़ को जान व दिल से महबूब रखते हैं।

तरजमा : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है हुज़ूरे अक़्दस रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अह्ले अरब को महबूब रखो तीन वजह से वह यह हैं। (1) मैं अरबी हूँ। (2) कुरआन अरबी है। (3) अह्ले जन्नत की जुबान अरबी है। (बैहक़ी शरीफ़)

तरजमा : हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस ने अह्ले अरब से दुश्मनी व कदूरत रखी मेरी शफ़ाअत में दाख़िल न होगा और मेरी मुहब्बत से फ़ैज़याब न होगा।

तरजमा : हज़रत सलमान फारसी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है फरमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम रसूले मुकर्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे फरमाया कि मुझ से बुग्ज़ (दुश्मनी) न करना कि दीन से जुदा हो जाएगा। मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर से कैसे बुग्ज़ (दुश्मनी) कर सकता हूँ हुज़ूर ही की बदौलत अल्लाह तआला ने हमें हिदायत फरमाई। फरमाया कि जो अरबों से बुग्ज़ (दुश्मनी) करे तो हम से बुग्ज़ (दुश्मनी) करता है।

इन अहादीस से साफ़ ज़ाहिर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निस्बत रखने की वजह से अह्ले अरब के साथ मुहब्बत रखना मोमिन के लिए लाज़िम और अलामते ईमान है। और अगर किसी के दिल में अह्ले अरब की तरफ़ से कदूरत हो तो यह उसके ईमान की कमज़ोरी और मुहब्बत की ख़ामी है। और अह्ले अरब तो हुज़ूर के वतने पाक के रहने वाले हैं। हुज़ूर से निस्बत रखने वाली हर चीज़ मोमिन मुख़्लिस के लिए क़ाबिले एहतराम और महबूबए दिल है। सहाब-ए-किबार रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन हुज़ूर की क़दमगाह का अदब करते थे। चुनांचे मिंबर शरीफ़ के

जिस दरजे पर हुज़ूरे अनवर अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ रखते ख़लीफ़-ए-अव्वल ने अदबन उस पर बैठने की न की। और ख़लीफ़-ए-दोम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की नशिश्तगाह (बैठने की जगह) पर भी बैठने की जुरअत न की। और ख़लीफ़-ए-सालिस, हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की नशिस्तगाह पर कभी न बैठे। (रवाहु तबरानी अन इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा) इस से अंदाज़ा करना चाहिए कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के आल व असहाब के साथ मुहब्बत करना और उनके अदब व ताज़ीम को लाज़िम जानना किस क़द्र ज़रूरी है। और यक़ीनन इन हज़रात की मुहब्बत सैय्यदे आलम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की मुहब्बत है और हुज़ूर की मुहब्बत ईमान।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बार–बार फरमाया कि मेरे अस्हाब के हक़ में खुदा से डरो खुदा का ख़ौफ़ करो। उन्हें मेरे बाद निशाना न बनाओ। जिस ने उन्हें महबूब रखा मेरी मुहब्बत की वजह से महबूब रखा और जिस ने उन से बुग्ज़ किया वह मुझ से बुग्ज़ (दुश्मनी) रखता है इसलिए उस ने उन से बुग्ज़ (दुश्मनी) रखो, जिस ने उन्हें ईज़ा (तक्लीफ़) दी उस ने मुझे ईज़ा (तक्लीफ़) दी, जिसने मुझे ईज़ा (तक्लीफ़) दी उस ने बेशक खुदाए तआला को ईज़ा (तक्लीफ़) दी, जिस ने खुदाए तआला को ईज़ा (तक्लीफ़) दी क़रीब है कि अल्लाह तआला उसे गिरफ़्तार करे। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

मुसलमान को चाहिए कि सहाब-ए-किराम का निहायत अदब रखे और दिल में उनकी अक़ीदत व मुहब्बत को जगह दे। उनकी मुहब्बत हुज़ूर की मुहब्बत है। और जो बदनसीब सहाबा की शान में बेअदबी के साथ ज़ुबान खोले वह दुश्मने खुदा व रसूल है। मुसलमान ऐसे शख़्स के पास न बैठे।

तरजमा : हुज़ूरे अक़्दस रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तुम उन लोगों को देखो जो मेरे अस्हाब की बद गोई करते हैं तो कह दो कि तुम्हारे शर पर खुदा की लानत। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

इन अहादीस से सहाब-ए-किराम रिज़वानुल्लाहु तआला अलैहिम अज्मईन का मरतबा और मोमिन के लिए उनके साथ मुहब्बत व इख़्लास व अदब व ताज़ीम का लाज़िम होना और उनकी बद गोइयों से दूर रहना साबित हुआ। इसीलिए अह्ले सुन्नत को जाइज़ नहीं कि शीओं की मज्लिस में शिर्कत करें।

अस्हाबे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मनों से मेल जोल मोमिन ख़ालिसुल-एतक़ाद का काम नहीं। आदमी अपने दुश्मनों के साथ नशिस्त (बैठना) व बरख़्वास्त (उठना) और बखुश दिली बात करना पसन्द नहीं करता। तो दुश्मनाने रसूल व दुश्मनाने अस्हाबे रसूल अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ कैसे पसन्द कर सकता है। अस्हाबे किबार में खुलफ़ाए राशिदीन यानी सैय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ सैय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. सैय्यदना हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि. सैय्यदना हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अज्मईन का मरतबा सबसे बुलन्द व बाला है।

JANNATI KAUN?

अबू बकर सिद्दीक़

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का नामे नामी अब्दुल्लाह है। आपके अज्दाद के अस्मा (नाम) यह हैं। अब्दुल्लाह (अबू बक्र सिद्दीक़) बिन अबी क़ुहाफ़ा उस्मान बिन आमिर बिन अमर बिन कअ़ब बिन सअद बिन तमीम बिन मुर्रा बिन कअ़ब बिन लुवी बिन ग़ालिब क़र्शी। हज़रत सिद्दीक़ का नसब हज़रत सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नसबे पाक से मुर्रा में मिलता है आपका लक़ब अतीक़ व सिद्दीक़ है। अबू यअ़ला ने अपनी मुसनद में और इब्ने सअ़द व हाकिम ने एक हदीसे सहीह उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लहु तआला अन्हा से रिवायत की है वह फरमाती हैं कि एक रोज़ में मकान में थी और अस्हाबे किबार सेहन में थे, मेरे उनके दर्मियान पर्दा पड़ा था, हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ लाए। हुज़ूर अक़्दस नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। जिसको "अतीक़ुम मिनन्नार" का देखना अच्छा मालूम हो वह अबू बकर को देखे। उस रोज़ से हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का लक़ब अतीक़ हो गया। आपका एक लक़ब सिद्दीक़ है। इब्ने इस्हाक़ व हसन बसरी और क़तादा कहते हैं कि सुबह शबे मेअ़राज से आपका यह लक़ब मश्हूर हुआ। मुस्तदरक में उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि हज़रत अबू बकर (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु) के पास मुश्रेकीन पहुँचे और वाक़य़-ए-मेअ़राज जो उन्होंने हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से सुना था। हज़रत अबू बकर को सुना कर कहने लगे कि अब हुज़ूर की निस्बत किया कहते हो? आपने फरमाया **लक़द सदक़ा इन्नी लउसद्देक़ुहू।** (हुज़ूर ने यक़ीनन सच फरमाया, मैं हुज़ूर की तस्दीक़ करता हूँ) इसी वजह से आपका लक़ब सिद्दीक़ हुआ हाकिम ने मुस्तदरक में निज़ाल बिन उस्बरा से बइस्नादे जैय्यिद (अहम) रिवायत की कि हम ने हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से हज़रत अबू बकर की निस्बत दरयाफ़्त किया तो आप ने फरमाया कि यह वह शख़्स हैं जिनका नाम अल्लाह तआला ने

बजुबाने जिब्रीले अमीन व बजुबाने सरवरे अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सिद्दीक़ रखा, वह नमाज़ में हुज़ूर के ख़लीफ़ा थे। हुज़ूर ने उन्हें हमारे दीन के लिए पसन्द फरमाया तो हम अपनी दुनिया के लिए उन से राज़ी हैं (यानी ख़िलाफ़त पर) दार कुतनी व हाकिम ने अबू यह्या से रिवायत की कि मैं शुमार नहीं कर सकता कि कितनी मरतबा मैंने अली मुर्तज़ा को बर सरे मिंबर यह फरमाते सुना है कि अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ुबान पर अबू बकर का नाम सिद्दीक़ रखा। तबरानी ने बसनदे जैय्यिद सहीह हकीम बिन सअद से रिवायत की है कि मैं ने अली मुर्तज़ा को बहलफ़ फरमाते सुना है कि अल्लाह तआला ने अबू बकर का नाम सिद्दीक़ आसमान से नाज़िल फरमाया।

हज़रत सिद्दीक़ हुज़ूरे अनवर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की विलादते मुबारका से दो साल चन्द माह बाद मक्का मुकर्रमा में पैदा हुए। यही सही है। और यह जो मशहूर है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत सिद्दीक़ से दरयाफ़्त फरमाया कि हम बड़े हैं या तुम। उन्होंने अर्ज़ किया कि बड़े हुज़ूर हैं, उमर मेरी ज़्यादा है। यह रिवायत मुरसल व ग़रीब है, और वाक़े (हक़ीक़त) में यह गुफ़्तगू हज़रत अब्बास से पेश आई थी।

आप मक्का मुकर्रमा में सुकूनत रखते थे। बसिलसिल-ए-तिजारत बाहर भी तशरीफ़ ले जाते थे। अपनी क़ौम में बहुत बड़े दौलतमन्द और साहिबे मुरव्वत व एहसान थे। ज़मान-ए-जाहिलीयत में क़ुरैश के रईस और उनकी मज्लिसे शूरा के रुक्न (हिस्सा) थे। मुआमला फ़हमी व दानाई में आप शोहरत रखते थे इस्लाम के बाद आप बिल्कुल इसी तरफ़ मसरूफ़ हो गये और इन सब बातों से दिल हट गया। ज़मान-ए-जाहलीयत में आपका चाल चलन निहायत पाकीज़ा और काम निहायत मतीन व शाइस्ता थे। इब्ने असाकिर ने अबुल-आलिया रबाही से नक़्ल किया है कि मज्मए अस्हाब में हज़रत अबू बकर से दरयाफ़्त किया गया कि आपने ज़मान-ए-जाहिलीयत में कभी शराब पी है? फरमाया, पनाह बखुदा, इस पर कहा गया, यह क्यों? फरमाया। मैं अपनी मुरव्वत व आबरू की हिफ़ाज़त करता था और शराब पीने वाले की मुरव्वत व आबरू बरबाद हो जाती है। यह ख़बर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को पहुँची तो हुज़ूर ने दो मरतबा

फरमाया कि अबू बकर ने सच कहा।

हज़रत सिद्दीक़ का इस्लाम : मुहद्देसीन की बड़ी जमाअत इस पर ज़ोर देती है कि हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सबसे पहले इस्लाम लाए। इब्ने असाकिर ने हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहू से रिवायत की है कि मर्दों में सबसे पहले हज़रत अबू बकर ईमान लाए। इसी तरह इब्ने सअद ने अबू रवा दोसी से इसी मज़्मून की हदीस रिवायत की। तबरानी मोअ्जमे कबीर में और अब्दुल्लाह बिन अहमद ने ज़वाइदुज़्ज़ाहिद में शुअ्बी से रिवायत की कि उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से सवाल किया कि सहाब-ए-किराम में अव्वलुल -इस्लाम कौन हैं। फरमाया अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत हस्सान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के वह अश्आर पढ़े जो हज़रत सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु की तारीफ़ में हैं। और उन में आपके सबसे पहले इस्लाम लाने का ज़िक्र है।

अबू नुऐम ने फ़ुरात बिन साइब से एक रिवायत की है, इसमें है कि मैंने मैमून बिन महरान से दरयाफ़्त किया कि अबू बकर पहले इस्लाम लाए या अली? उन्होंने जवाब दिया कि हज़रत अबू बकर बुहैरा राहिब के ज़माना में ईलान लाए। उस वक़्त तक हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा पैदा भी न हुए थे।

सहाबा व ताबईन व ग़ैरेहिम की एक बड़ी जमाअत उसकी क़ाइल है कि सबसे पहले मोमिन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ हैं और बहुत सो ने इस पर इत्तफ़ाक़ किया है।

अगरचे सहाब-ए-किराम व ताबईन वग़ैरेहिम की कसीर जमाअतों ने इस पर ज़ोर दिया है कि सिद्दीक़े अक्बर सबसे पहले मोमिन हैं। मगर कुछ हज़रात ने यह भी फरमाया कि सबसे पहले मोमिन हज़रत अली हैं। कुछ ने यह कहा कि हज़रत ख़दीजा सबसे पहले ईमान से मुर्शरफ़ हुईं इन अक़्वाल में हज़रत इमामे आली मक़ाम इमामुल-अइम्मा सिराजुल-उम्मा हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु अन्हुम ने इस तरह बराबरी दी है कि मर्दों में सबसे पहले हज़रत अबू बकर मुशर्रफ़ बईमान हुए। और औरतों में हज़रत उम्मुल-मुमिनीन ख़दीजा और नौ उम्र साहबज़ादों में हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन।

ख़ैसमा ने बसनदे सही ज़ैद बिन अरक़म से रिवायत की कि सबसे पहले हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ नमाज़ पढ़ने वाले हज़रत अबू बकर हैं। इब्ने इस्हाक़ ने एक हदीस रिवायत की कि हुज़ूरे अक़्दस नबी-ए-

करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सिवाए अबू बकर के और कोई ऐसा शख़्स नहीं जो मेरी दावत पर बे ग़ौर व फ़िक्र ईमान लाया हो। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अपने इस्लाम लाने के वक़्त से दमे आख़िर तक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बरकाते सोहबत से फ़ैज़याब रहे। और सफ़र व हज़र में कहीं हुज़ूर से जुदा नहीं हुए और सिवाए उस हज व ग़ज़वा के जिस की हुज़ूर ने इजाज़त अता फरमाई और कोई सफ़र हुज़ूर से अलग न किया। तमाम मुशाहिद में हुज़ूर के साथ हाज़िर हुए। हुज़ूर के साथ हिजरत की और अपने अयाल व औलाद को खुदा व रसूल की मुहब्बत में छोड़ दिया। आप जूद व सख़ा में आला मरतबा रखते हैं। इस्लाम लाने के वक़्त आपके पास चालीस हज़ार दीनार थे। यह सब इस्लाम की हिमायत में ख़र्च फरमाए। बर्दों (गुलामों) को आज़ाद कराना, मुसलमान असीरों (क़ैदियों) को छुड़ाना आप का एक प्यारा काम था, बज़्ल व करम में हातिम ताई को आप से कुछ भी निस्बत नहीं। हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, हम पर किसी शख़्स का एहसान न रहा, हम ने सबका बदला दे दिया सिवाए अबू बकर के कि उनका बदला अल्लाह तआला रोज़े क़्यामत अता फरमाएगा, और मुझे किसी के माल ने वह नफ़ा नहीं दिया जो अबू बकर के माल ने दिया। (रवाहुत्तिर्मिज़ी अन अबी हुरैरह)

ज़हे नसीब सिद्दीक़! कि हुज़ूरे अनवर सुल्ताने दारैन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी शान में यह कलिमे इरशाद फरमाए। हज़रत सिद्दीके़ अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सहाबा-ए-किराम में सबसे बड़े जानकार व अज़्का हैं। इसका बारहा सहाब-ए-किराम ने एतराफ़ फरमाया है। क़िरअते कुरआन, इल्मे अन्साब, इल्मे ताबीर में आप फ़ज़्ले जली रखते हैं, कुरआने कररीम के हाफ़िज़ हैं। (ज़िकरहू अन्नववी फ़ित्तहज़ीब)

अफ़ज़लीयत : अह्ले सुन्नत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि अफ़ज़ल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ हैं। इनके बाद हज़रत उमर उनके बाद हज़रत उस्मान, उनके बाद हज़रत अली, उनके बाद तमाम अशर-ए-मुबश्शेरह, इनके बाद बाक़ी अह्ले बद्र, इनके बाद बाक़ी अह्ले उहुद, इनके बाद बाक़ी अह्ले बैत, फिर तमाम सहाबा। यह इज्मा अबू मन्सूर बग़दादी ने नक़ल किया है।

इब्ने असाकिर ने हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से

रिवायत की फरमाया कि हम अबू बकर व उमर व उस्मान व अली को फ़ज़ीलत देते थे इस हाल में कि सरवरे अकरम अलैहिस्सलातु वस्सलाम हम में तशरीफ़ फरमा हैं। इमाम अहमद वग़ैरह ने हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया कि आपने फरमाया कि इस उम्मत में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बाद सबसे बेहतर अबू बकर व उमर हैं। रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा।

ज़हबी ने कहा कि हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से बतवातुर मन्कूल है, इब्ने असाकिर ने अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से रिवायत की कि हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू ने फरमाया, जो मुझे हज़रत अबू बकर व उमर ने अफ़ज़ल कहेगा तो मैं उसको मुफ़्तरी (तोहमत लगाने वाले) की सज़ा दूँगा।

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शान में बहुत आयतें और बकसरत हदीसें वारिद हुई हैं। जिन से आपके फ़ज़ाइले जलीला मालूम होते हैं। चन्द अहादीस यहाँ ज़िक्र की जाती हैं :

तिर्मिज़ी ने हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि हुज़ूरे अक़्दस नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत सिद्दीक़ से फरमाया, तुम मेरे साहिब हो हौज़े कौसर पर, और तुम मेरे साहिब हो ग़ार में। इब्ने असाकिर ने एक हदीस नक़्ल की कि हुज़ूर नबी-ए-करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया नेकी की तीन सौ साठ ख़स्लतें हैं। हज़रत सिद्दीक़ ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर इन में से कोई मुझ में भी है। फरमाया तुम में वह सब हैं तुम्हें मुबारक हो। इन्हीं इब्ने असाकिर ने हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की। हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अबू बकर की मुहब्बत और उनका शुक्र मेरी तमाम उम्मत पर वाजिब है। बुख़ारी ने हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि हज़रत अली ने फरमाया कि अबू बकर हमारे सैयद व सरदार हैं। तबरानी ने औसत में हज़रत अली मुर्तज़ा से रिवायत की, आपने फरमाया बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सबसे बेहतर अबू बकर व उमर हैं। मेरी मुहब्बत और अबू बकर व उमर की बुग्ज़ (दुश्मनी) किसी मोमिन के दिल में जमा न होगा।

ख़िलाफ़त : बकसरत आयात व अहादीस आपकी ख़िलाफ़त की तरफ़ मुशीर (बताती) हैं। तिर्मिज़ी व हाकिम ने हज़रत हुज़ैफ़ा से रिवायत की कि

हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया जो लोग मेरे बाद हैं, अबू बकर, उमर वग़ैरह का इत्तिबा करो। इब्ने असाकिर ने इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की कि एक औरत हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुई। कुछ दरयाफ़्त करती थी। हुज़ूर ने उस से फरमाया, फिर आएगी? अर्ज़ की, अगर मैं फिर हाज़िर हूँ और हुज़ूर को न पाऊं यानी उस वक़्त हुज़ूर परदा फरमा चुके हों। इस पर हुज़ूर ने फरमाया कि अगर तू आए और मुझे न पाए तो अबू बकर की ख़िदमत में हाज़िर हो जाना क्योंकि मेरे बाद वही मेरे ख़लीफ़ा हैं।

बुख़ारी व मुस्लिम ने हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की, हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलातु वस्सलाम मरीज़ हुए। और मरज़ ने ग़लबा किया तो फरमाया कि अबू बकर को हुक्म करो कि नमाज़ पढ़ायें। हज़रत आइशा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वह नर्म दिल आदमी हैं आपकी जगह खड़े हो कर नमाज़ न पढ़ा सकेंगे। फरमाया हुक्म दो अबू बकर को कि नमाज़ पढ़ाएं हज़रत सिद्दीक़ा ने फिर वही उज़्र पेश किया। हुज़ूर ने फिर यही हुक्म बताकीद फरमाया और हज़रत अबू बकर ने हुज़ूर की हयाते मुबारका में नमाज़ पढ़ाई। यह हदीस मुतावातिर है। हज़रत आइशा व इब्ने मस्ऊद व इब्ने अब्बास व इब्ने उमर व अब्दुल्लाह बिन ज़ुम्आ व इब्ने सईद व अली बिन अबी तालिब व हफ़्सा वग़ैरेहिम से मरवी है। उलमा फरमाते हैं कि इस हदीस में इस पर बहुत साफ़ दलालत है कि हज़रत सिद्दीक़ आमतौर पर तमाम सहाबा से अफ़्ज़ल और ख़िलाफ़त व इमामत के लिए सब से ज़्यादा हक़दार व औला हैं।

अश्अरी का क़ौल है कि हुज़ूर ने सिद्दीक़ को इमामत का हुक्म दिया, जबकि अंसार व मुहाजिरीन हाज़िर थे। और हदीस में है कि क़ौम की इमामत वह करे जो सब में अक़्रा हो। इस से मालूम होता है कि हज़रत सिद्दीक़ तमाम सहाबा में सबसे अक़्रा और कुरआने करीम के सबसे बड़े आलिम थे। इसी लिए सहाब-ए-किराम ने हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के अहक़ बिल-ख़िलाफ़ा होने का इस्तिदलाल किया है। इन इस्तिदलाल करने वालों में से हज़रत उमर और हज़रती अली भी हैं। रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु।

एक जमाअते उलमा ने हज़रत सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की

ख़िलाफ़त आयाते कुरआनिया से मुस्तंबत की है।

अलावा बरीं इस ख़िलाफ़ते राशिदा पर जमीअ् सहाबा और तमाम उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है। लिहाज़ा इस ख़िलाफ़त का इंकार करने वाला शरअ् का मुख़ालिफ़ और गुम्राह व बददीन है। हज़रत सिद्दीक़ का ज़मान-ए-ख़िलाफ़त मुसलमानों के लिए ज़िल्ले रहमत साबित हुआ। और दीने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो बड़े ख़तरे और हौलनाक अन्देशे पेश आ गये थे वह हज़रत सिद्दीक़ की राय साइबे तदबीर सही और कामिल दीनदारी व ज़बरदस्त इत्तिबाए सुन्नत की बरकत से दफ़ा हुए और इस्लाम को वह इस्तिहकाम हासिल हुआ कि कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन लरज़ने लगे और ज़ईफ़ुल-ईमान लाग पुख़्ता मोमिन बन गये आपकी ख़िलाफ़ते राशिदा का ज़माना अगरचे बहुत थोड़ा और निहायत क़लील है। लेकिन इस से इस्लाम को ऐसी अज़ीमुश्शान ताईदें और कुव्वतें हासिल हुईं कि किसी ज़बरदस्त हुकूमत के लम्बे ज़माने को इस से कुछ निस्बत नहीं हो सकती।

आपके ज़मान-ए-मुबारक के चन्द अहम वाक़ेआत यह हैं कि आप ने जैशे उसामा की तन्फ़ीज़ की जिस को हुज़ूरे अनवर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपने ज़मान-ए-मुबारक के आख़िर में शाम की तरफ़ रवाना फरमाया था। अभी यह लश्कर थोड़ी ही दूर पहुँचा था और मदीना-ए-तैयबा के क़रीब मक़ामे ज़ैख़शब ही में था कि हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस दुनिया से पर्दा फरमाया यह ख़बर सुन कर अतराफ़े मदीना के अरब इस्लाम से फिर गये और मुरतद हो गये। सहाब-ए-किराम ने इकट्ठा हो कर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पर ज़ोर दिया कि आप इस लश्कर को वापस बुला लें इस वक़्त इस लश्कर का रवाना करना किसी तरह मुनासिब नहीं। मदीना के पास तो अरब के तवाइफ़े कसीरा मुरतद हो गये और लश्कर शाम को भेज दिया जाए। इस्लाम के लिए यह नाजुक तरीन वक़्त था। हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलातु वस्सलाम की वफ़ात से कुफ़्फ़ार के हौसले बढ़ गये थे और उनकी मुर्दा हिम्मतों में जान पड़ गई थी। मुनाफ़िक़ीन समझते थे कि अब खेल खेलने का वक़्त आ गया। ज़ईफ़ुल-ईमान दीन से फिर गये। मुसलमान एक ऐसे सदमे में शिकस्ता दिल और बेताब व तवां हो रहे थे जिसका मिस्ल दुनिया की आँख ने कभी नहीं देखा। उनके दिल घायल हैं और आंखों से अश्क

जारी हैं। खाना पीना बुरा मालूम होता है। ज़िन्दगी एक नागवार मुसीबत नज़र आती है। उस वक़्त हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के जानशीन को नज़्म क़ाइम करना, दीन का संभालना, मुसलमानों की हिफ़ाज़त करना, इर्तिदाद के सैलाब को रोकना किस क़द्र दुश्वार था। बावजूद इसके रसूल अलैहिस्सलातु वस्सलाम के रवाना किए हुए लश्कर को वापस करना और मर्ज़िए मुबारका के ख़िलाफ़ जुरअत करना, सिद्दीक़ सरापा सिद्क़ का राबत-ए-नियाज़ मन्दी का गवारा न करता था और उसको वह हर मुश्किल से सख़्त तर समझते थे। उस पर सहाबा का इसरार कि लश्कर वापस बुला लिया जाए और खुद हज़रत उसामा का लौट आना और हज़रत सिद्दीक़ से अर्ज़ करना कि क़बाइले अरब आमद-ए-जंग और दरपए तख़रीबे इस्लाम हैं और कार आज़मा बहादुर मेरे लश्कर में हैं उन्हें इस वक़्त रूम पर भेजना और मुल्क को ऐसे दिलावर मरदाने जंग से ख़ाली कर लेना किसी तरह मुनासिब मालूम नहीं होता। यह हज़रत सिद्दीक़ के लिए और मुश्किलात थीं। सहाब-ए-किराम ने एतराफ़ किया है कि उस वक़्त अगर हज़रते सिद्दीक़ की जगह दूसरा होता तो हरगिज़ मुस्तक़िल न रहता और मुसीबत व फ़िक्रों का यह हुजूम और अपनी जमाअत की परेशान हालत मब्हूत कर डालती मगर अल्लाहु अक्बर हज़रते सिद्दीक़ के पाए सबात को ज़र्रा भर भी लग़्ज़िश न हुई और उन के इस्तिक़्लाल में एक रत्ती भर फ़र्क़ न आया। आप ने फरमाया कि अगर परिन्द मेरी बोटियाँ नोच खायें तो मुझे यह गवारा है मगर हुज़ूरे अनवर सैय्यदे आलम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की मर्ज़िए मुबारक में अपनी राय के दख़ल देना और हुज़ूर के रवाना किए हुए लश्कर को वापस करना हरगिज़ गवारा नहीं। यह मुझ से नहीं हो सकता। चुनांचे ऐसी हालत में आपने लश्कर रवाना फरमा दिया।

इस से हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हैरत अंगेज़ शुजाअत व लियाक़त और कमाले दिलेरी व जवांमर्दी के अलावा उनके तवक्कुले सादिक़ का पता चलता है और दुश्मन भी इंसाफ़न यह कहने पर मज्बूर होता है कि कुदरत ने हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त व जांनशीन की असल क़ाबलीयत व एहलीयत हज़रत सिद्दीक़ को अता फरमाई थी। अब यह लश्कर रवाना हुआ और जो क़बाइल मुरतद होने के लिए तैयार थे और यह समझ चुके थे कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बाद इस्लाम का शीराज़ा ज़रूर दरहम बरहम हो जाएगा और

उसकी सतवत व शौकत बाक़ी न रहेगी। उन्होंने जब देखा कि इस्लाम का लश्कर रूमियों की सरकूबी के लिए रवाना हो गया उसी वक़्त उनके ख़्याली मन्सूबे ग़लत हो गये। उन्होंने समझ लिया कि सैय्यदे आलम अलैहिस्सलाम ने अपने ज़मान-ए-मुबारक में इस्लाम के लिए ऐसा ज़बरदस्त इंतिज़ाम फरमा दिया है जिस से मुसलमानों का शीराज़ा दरहम बरहम नहीं हो सकता और वह ऐसे ग़म व अन्दोह के वक़्त में भी इस्लाम की तब्लीग़ व इशाअत और उसके सामने दुनिया की क़ौमों को सरनगूं करने के लिए एक मशहूर व ज़बरदस्त क़ौम पर फौज कशी करते हैं। लिहाज़ा यह ख़्याल ग़लत है कि इस्लाम मिट जाएगा और इसमें कोई कुव्वत बाक़ी न रहेगी बल्कि अभी सब्र के साथ देखना चाहिए कि यह लश्कर किस शान से वापस होता है। फ़ज़्ले इलाही से यह लश्करे ज़फ़र पैकरे फतहयाब हुआ। रूमियों को शिकस्त हुई। जब यह फातेह लश्कर वापस आया वह तमाम क़बाइल जो मुरतद होने का इरादा कर चुके थे इस नापाक इरादे से बाज़ आए। और इस्लाम पर सच्चाई के साथ क़ाइम हुए। बड़े-बड़े जलीलुल-क़द्र साइबुर्राय सहाबा जो इस लश्कर की रवानगी के वक़्त निहायत शिद्दत से इख़्तिलाफ़ फरमा रहे थे अपनी फ़िक्र की ख़ता और सिद्दीक़ की राय मुबारक के साइब और उनके इल्म की वुस्अत के मोतरिफ़ हुए।

इसी ख़िलाफ़ते मुबारका का एक वाक़या ज़कात का इंकार करने वालों की के साथ अज़्मे क़िताल है जिसका मुख़्तसर हाल यह है जब हुज़ूरे अक़्दस नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात की ख़बर मदीना तैयबा के हवाली व अतराफ़ में मशहूर हुई तो अरब के बहुत गिरोह मुरतद हो गये और उन्होंने ज़कात देने से इंकार कर दिया। हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु उन से क़िताल करने के लिए उठे। अमीरुल-मोमिनीन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु और दूसरे सहाबा रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अज्मईन ने वक़्त की नज़ाकत, इस्लाम की नौ उम्री, दुश्मनों की कुव्वत, मुसलमानों की परेशानी, परागन्दा ख़ातरी का लिहाज़ फरमा कर मशवरा दिया कि इस वक़्त जंग के लिए हथियार न उठाए जाएं मगर हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अपने इरादे पर मज़्बूती के साथ क़ाइम रहे और आपने फरमाया कि क़सम ब-खुदा जो लोग ज़मान-ए-अक़्दस में एक तस्मा की क़ीमत भी अदा करते थे अगर आज इंकार करेंगे तो मैं ज़रूर उन से क़िताल करूंगा आख़िर कार

आप किताल के लिए उठे और मुहाजिरीन व अंसार को साथ लिया और अरब अपनी जुर्रियतों को लेकर भागे। फिर आपने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को अमीरे लश्कर बनाया और अल्लाह तआला उन्हें फ़तह दी और सहाबा ने खुसूसन हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत सिद्दीके अक्बर की सेहते तदबीर और इसाबते राय का इज़्हार किया। और कहा खुदा की क़सम अल्लाह तआला ने हज़रते सिद्दीक़ का सीना खोल दिया। जो उन्होंने किया हक़ था और वाक़या भी यही है कि अगर इस वक़्त कम्ज़ोरी दिखाई जाती तो हर क़ौम और हर क़बीला को अहकामे इस्लाम क़ी बेहुरमती और उनकी मुख़ालफ़त की जुरअत होती और दीने हक़ का इंतिज़ाम बाक़ी न रहता। यहाँ से मुसलमानों को सबक़ लेना चाहिए कि हर हालत में हक़ की हिमायत और नाहक़ की मुख़ालफ़त ज़रूरी है और जो क़ौम नाहक़ की मुख़ालफ़त में सुस्ती करेगी जल्द तबाह हो जाएगी आज कल के सादा लौह फ़िर्क़ए बातिला के रद करने को भी मना करते हैं और कहते हैं कि इस वक़्त आपस की जंग मौक़ूफ़ करो। उन्हें हज़रत सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के इस तरीक़े अमल से सबक़ लेना चाहिए कि आपने ऐसे नाज़ुक वक़्त में भी बातिल की सर शिकनी में तवक़्क़ुफ़ न फरमाया जो फ़िर्क़े इस्लाम को नुक़सान पहुँचाने के लिए पैदा हुए हैं उन से ग़फ़लत करना यक़ीनन इस्लाम को नुक़सान पहुँचाना है।

फिर हज़रत ख़ालिद रज़ि अल्लाहु अन्हु लश्कर लेकर यमामा की तरफ़ मुसैलिमा कज़्ज़ाब के क़िताल के लिए रवाना हुए। दोनों तरफ़ से लश्कर मुक़ाबिल हुए चन्द रोज़ जंग रही। आख़िरुल-अम्र मुसैलमा कज़्ज़ाब वहशी (क़ातिल हज़रत अमीर हम्ज़ा) के हाथ से मारा गया। मुसैलिमा की उमर क़त्ल के वक़्त डेढ़ सौ बरस की थी। 12 हिजरी में हज़रत सिद्दीके अक्बर ने उला बिन हज़रमी को बहरीन की तरफ़ रवाना किया। वहाँ के लोग मुरतद हो गये थे। जो असा में उन से मुक़ाबला हुआ और बकरमहू तआला मुसलमान फतहयाब हुए। अम्मान में भी लोग मुरतद हो गये थे। वहाँ इकरमा बिन अबी जहल को रवाना फरमाया। बुहैरा के मुरतदीन पर मुहाजिर बिन अबी उमैया को भेजा। मुरतदीन की एक और जमाअत पर ज़ह्हाद बिन लुबैद अंसारी को रवाना किया। इसी साल मुरतदीन के क़िताल से फारिग़ हो कर हज़रत सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को सरज़मीने बसरा की तरफ़ रवाना किया आपने

JANNATI KAUN?

अह्ले ईला पर जिहाद किया और ईला फतह हुआ और किसरा के शहर जो इराक़ में थे फतह हुए उसके बाद आपने अमर बिन आस और इस्लामी लश्करों को शाम की तरफ़ भेजा। और जमादिउल उख़र 13 हिजरी में वाक़या अज्नादैन पेश आया और बफ़ज़्लेही तआला मुसलमानों को फतह हुई। इस साल वाक़या-ए-मुरव्वजुस्सफ़र हुआ और मुश्रेकीन को हज़ीमत (शिकस्त) हुई।

हज़त सिद्दीक़े अक्बर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ख़िलाफ़त के थोड़े से ज़माना में शब व रोज़ की पैहमे सई से बदख़्वाहाने इस्लाम के हौसले पस्त कर दिए और इर्तिदाद का सैलाब रोक दिया। कुफ़्फ़ार के कुलूब में इस्लाम का वक़ार रासिख़ हो गया। और मुसलमानों की शौकत व इक़बाल के फरेरे अरब व अजम बहर व बर में उड़ने लगे।

आप कुरआने करीम के पहले जमा करने वाले हैं और आपके अह्दे मुबारक का ज़र्रीन कारनामा है आपने मुलाहिज़ा फरमाया कि जिहादों में वह सहाब-ए-किराम जो हाफ़िज़े कुरआन थे शहीद होने लगे तो आपको अन्देशा हुआ कि अगर थोड़े ज़माने बाद हुफ़्फ़ाज़ बाक़ी न रहे तो कुरआन पाक मुसलमानों को कहाँ से मयस्सर आएगा। यह ख़्याल फरमा कर आपने सहाबा को जमए कुरआन का हुक्म दिया और मसाहिफ़ मुरत्तब हुए।

हज़रत सिद्दीक़ की वफ़ात : आपकी वफ़ात का असली सबब हुज़ूरे अनवर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफ़ात है जिसका सदमा दमे आख़िर तक आपके क़ल्बे मुबारक से कम न हुआ। और इस रोज़ से बराबर आपका जिस्म शरीफ़ घुलता और दुबला होता गया। 7 जमादिउल-उख़र 13 हिजरी बरोज़ दोशंबा को आपने गुस्ल फरमाया, दिन सर्द था, बुख़ार आ गया। सहाबा अयादत के लिए आए अर्ज़ करने लगे ऐ ख़लीफ़-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इजाज़त हो तो हम तबीब को बुला लाएं जो आप को देखे फरमाया कि तबीब ने तो मुझे देख लिया। उन्होंने दरयाफ़्त किया कि फिर तबीब ने क्या कहा। फरमाया कि उस ने फरमाया : **इन्नी फ़आलुल्लेमा युरीद**। यानी मैं जो चाहता हूँ करता हूँ। मुराद यह थी कि हकीम अल्लाह तआला है उसकी मर्ज़ी को कोई टाल नहीं सकता। जो मशीयत है ज़रूर होगा यह हज़रत का तवक्कुले सादिक़ था और रज़ाए हक़ पर राज़ी थे। इसी बीमारी में आपने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा और हज़रत उस्मान ग़नी वग़ैरेहिम

सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहे अलैहिम अज्मईन के मशवरे से हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को अपने बाद ख़िलाफ़त के लिए नामज़द फरमाया। और पन्द्रह रोज़ की बीमारी के बाद 22 जमादिउल-उख़र 13 हिजरी शब संबा को त्रिसठ साल की उम्र में इस दारे नापाइदार से रहलत फरमाई। **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।** हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने आपके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। और आप अपनी वसीयत के मुताबिक़ पहलूए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में मदफून हुए। आपने दो साल सात माह के क़रीब ख़िलाफ़त की। आपकी वफ़ात से मदीना-ए-तैयबा में एक शोर बरपा हो गया। आपके वालिद अबू कुहाफ़ा ने जिनकी उम्र उस वक़्त सत्तानवे बरस की थी दरयाफ़्त किया कि यह कैसा शोर है लोगों ने कहा कि आपके फ़रज़न्द ने रहलत फरमाई। कहा बड़ी मुसीबत है उनके बाद कारे ख़िलाफ़त कौन अंजाम देगा? कहा गया हज़रत उमर। आपकी वफ़ात से छः माह बाद आपके वालिद अबू कुहाफ़ा ने भी रहलत फरमाई। क्या ख़ुश नसीब हैं ख़ुद सहाबी, वालिद सहाबी, बेटे सहाबी, पोते सहाबी, रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम व रिज़वानुहू।

JANNATI KAUN?

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖❖❖❖
❖❖❖❖❖
❖❖❖❖
❖❖❖
❖❖
❖

ख़लीफ़-ए-दोम

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के बाद फ़ज़्ल में हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का मरतबा है। हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के अज्दाद (दादाओं) के नाम यह हैं। उमर बिन ख़त्ताब बिन नुफ़ैल बिन अब्दुल-अज़ीज़ बिन रिमाह बिन क़र्त बिन रज़्ज़ाख़ बिन अदी बिन कअ़ब बिन लुवय। आप फील वाले साल के तेरह बरस बाद पैदा हुए (नुववी) (आमे फील यानी फील वाला साल फील के मअना होते हैं हाथी के चूँकि सरकार की पैदाइश से पहले अबरहा नाम का काफिर हाथियों का लश्कर लेकर काबे को ढाने आया था मगर मुँह की खाकर लौटा। इसी वजह से उस साल को आमुल फील कहा जाता है। नईमी) आप अशराफ़े कुरैश में हैं। ज़मान-ए-जाहिलीयत में मन्सबे सिफ़ारत आपकी तरफ़ मुफ़व्विज था। आपकी कुन्नियत अबू हफ़्स और लक़ब फ़ारूक़ है। आप क़दीमुल-इस्लाम हैं। चालीस मर्दों ग्यारह औरतों या उन्तालीस मर्दों तेरह औरतों या पैंतालीस मर्दों ग्यारह औरतों के बाद इस्लाम लाए। आप के मुसलमान होने से इस्लाम की कुव्वत व शौकत ज़्यादा हुई। मुसलमान निहायत खुश हुए। आप साबेक़ीन अव्वलीन और अश्र-ए-मुबश्शरह बिल-जन्नह और खुलफ़ाए राशिदीन में से हैं। सहाब-ए-किराम के उलमा-ए-जुहाद में आपका मुम्ताज़ मरतबा है। तिर्मिज़ी की हदीस में है कि हुज़ूरे अनवर अलैहिस्सलातु वस्सलाम दुआ फरमाते थे कि यारब उमर बिन ख़त्ताब और अबू जहल बिन हिशाम में से जो तुझे प्यारा हो उसके साथ इस्लाम को इज़्ज़त दे। हाकिम ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत कि कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया :

या रब इस्लाम को ख़ास उमर बिन ख़त्ताब के साथ ग़लबा व कुव्वत अता फरमा। हुज़ूर की दुआ कुबूल हुई और हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु नुबुव्वत के छठे साल 27 बरस की उमर में मुशर्रफ़ बइस्लाम हुए।

अबू यअ़ला व हाकिम व बैहक़ी ने हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तलवार लेकर

निकले। राह में आपको क़बील-ए-बनी जुहरा का एक शख़्स मिला। कहने लगा कहाँ का इरादा है। आपने कहा कि मैं (हज़रत) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के क़त्ल का इरादा रखता हूँ। उस ने कहा कि उन्हें क़त्ल करके तुम बनी हाशिम और बनी जुहरा के हाथों से कैसे बचोगे। आपने कहा कि मेरे ख़्याल में तू भी दीन से फिर गया। उस ने कहा कि मैं आपको इससे अजीब तर बताता हूँ, आप की बहन और बहनोई दोनों ने आपका दीन तर्क कर दिया। हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु उनके पास पहुँचे। वहाँ हज़रत खुब्बाब थे और वह लोग सूरः ताहा पढ़ रहे थे। जब उन्होंने हज़रत उमर की आहट सुनी तो मकान में छुप गये। हज़रत उमर ने मकान में दाख़िल हो कर कहा, तुम क्या कह रहे हो। कहा। हम आपस में बातें कर रहे थे। हज़रत उमर कहने लगे शायद तुम लोग बेदीन हो गये हो। आपके बहनोई ने कहा ऐ उमर अगर तुम्हारे दीन के सिवा किसी और दीन में हक़ हो। इतना कलिमा सुनते ही हज़रत उमर उन पर टूट पड़े और उन्हें बहुत मारा उन्हें बचाने के लिए आपकी बहन आई, उन्हें भी मारा यहाँ तक कि उनका चेहरा ख़ून आलूद हो गया। उन्होंने ग़ज़बनाक हो कर कहा कि तेरे दीन में हक़ नहीं। मैं गवाही देती हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा कोई मुस्तहिक़्क़े इबादत नहीं और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। हज़रत उमर ने कहा मुझे वह किताब दो जो तुम्हारे पास है मैं उसे पढ़ूं। हम्शीरा साहिबा ने फरमाया कि तुम नापाक हो और उसको पाक लोगों के सिवा कोई नहीं छू सकता। उठो गुस्ल करो या वुज़ू करो। आपने उठ कर वुज़ू किया और किताबे पाक को लेकर पढ़ा। **ताहा मा अंज़लना अलैकल-कुरआना लितश्क़ा।** यहाँ तक कि आप **इन्नी अनल्लाहु ला इलाहा इल्ला अना फ़अ्बुदनी व अक़िमिस्सलाता लिज़िकरी।** तक पहुँचे तो हज़रत उमर ने फरमाया मुझे (हुज़ूर पुरनूर) मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास ले चलो। यह सुन कर हज़रत खुब्बाब बाहर निकले और उन्होंने कहा मुबारक हो ऐ उमर! मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम ही दुआए रसूल अलैहिस्सलात वस्सलाम हो। पंजशंबा को हुज़ूर ने दुआ फरमाई थी, या रब इस्लाम को उमर बिन ख़त्ताब या अबू जहल बिन हिशाम से कुव्वत अता फरमा। हज़रत उमर उस मकान पर आए जिसमें हुज़ूर तशरीफ़ फरमा थे। दरवाज़े पर हज़रत हम्ज़ा व तलहा और दूसरे लोग थे। हज़रत हम्ज़ा ने

फरमाया यह उमर हैं अगर अल्लाह तआला को उनकी भलाई मन्ज़ूर हो तो ईमान लाएं वरना हमें उनका क़त्ल करना आसान है हुज़ूर पुर नूर पर उस वक़्त वही आ रही थी। हुज़ूर बाहर तशरीफ़ लाए और हज़रत उमर के कपड़े और तलवार की हमाइल पकड़ कर फरमाया, ऐ उमर तू बाज़ नहीं आता यहाँ तक कि अल्लाह तआला तुझ पर वह अज़ाब और रुस्वाई नाज़िल फरमाए जो वलीद बिन मुग़ीरह पर नाज़िल फरमाई। हज़रत उमर ने अर्ज़ किया :

हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जिस वक़्त मैंने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा उसी वक़्त उसकी अज़्मत मेरे दिल में असर कर गई और मैंने कहा कि बदनसीब क़ुरैश ऐसी पाकीज़ा किताब से भागते हैं। इस्लाम लाने के बाद आप बइजाज़त नबी-ए-करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम दो सफ़ें बना कर निकले। एक सफ़ में हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु और दूसरी में हज़रत अमीर हम्ज़ा। यह पहला दिन था कि मुसलमान इस ऐलान और शौकत के साथ मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश देख-देख कर जल रहे थे और उन्हें निहायत सदमा था। आज इस ज़ुहूरे इस्लाम और हक़ व बातिल में फ़र्क़ व इम्तियाज़ हो जाने पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु को फारूक़ का लक़ब अता फरमाया।

इब्ने माजा व हाकिम ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की कि जब हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम लाए। हज़रत जिब्रील बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अह्ले आसमान हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु के इस्लाम की खुशियाँ मना रहे हैं। इब्ने असाकिर ने हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की। आपने फरमाया कि मैं जहाँ तक जानता हूँ जिस किसी ने भी हिजरत की छुप कर ही की। सिवाय हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु के। आपकी हिजरत की यह शान थी कि हथियार बन्द हो कर ख़ान-ए-काबा में आए। कुफ़्फ़ार के सरदार वहाँ मौजूद थे। आपने सात मरतबा बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया और मक़ामे इब्राहीम में दो रकातें अदा कीं फिर क़ुरैश की एक जमाअत के पास तशरीफ़ ले गये और ललकार कर फरमाया कि जो इसके

लिए तैयार हो कि उसकी माँ उसे रोए और उसकी औलाद यतीम हो। बीवी रांड हो वह मैदान में मेरे मुक़ाबिल आए। हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के यह कलिमात सुन कर एक सन्नाटा छा गया कुफ़्फ़ार में से कोई जुंबिश न कर सका।

आपकी फ़ज़ीलत में बहुत कसरत से हदीसें वारिद हुईं और उनकी बड़ी जलील फ़ज़ीलतें बयान फरमाई गई हैं। यहाँ तक कि तिर्मिज़ी व हाकिम की सही हदीस में वारिद है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर मेरे बाद नबी मुम्किन होता हज़रत उमर बिन ख़त्ताब होते रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु। इस से ज़लालत व मंज़िलत व रिफ़अते दरजत अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाहिर है। इब्ने असाकिर की हदीस में वारिद है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि आसमान का हर फ़रिश्ता हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तौक़ीर करता है और ज़मीन का हर शैतान उनके ख़ौफ़ से लरज़ता है।

तबरानी ने औसत में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जिस ने हज़रत उमर से दुश्मनी रखो उस ने मुझ से दुश्मनी रखा। और जिस ने हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु को महबूब रखा उस ने मुझे महबूब रखा। तबरानी व हाकिम ने रिवायत की कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु का इल्म मीज़ान के एक पल्ले में रखा जाए और रू-ए-ज़मीन के तमाम ज़िन्दा लोगों के उलूम एक पल्ला में तो यक़ीनन हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का इल्म इन सबके उलूम से ज़्यादा वज़नी होगा। अबू उसामा ने कहा जानते हो अबू बकर व उमर कौन हैं यह इस्लाम के माँ व बाप हैं। हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं उस से बरी व बेज़ार हूँ जो हज़रत अबू बकर व उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा का ज़िक्र बुराई के साथ करे।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की करामात :

आपकी करामात बहुत हैं। उन में से चन्द मशहूर करामतें ज़िक्र की जाती हैं। दैहक़ी व अबू नुऐम वग़ैरह मुहद्देसीन ने बतरीक़े मोतबर रिवायत

की कि अमीरुल-मोमिनीन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अस्नाए खुतबा में तीन मरतबा फरमाया : **या सारेअतल-जबल** हाज़िरीन हैरतज़दा व तअज्जुब में हुए कि अस्नाए खुतबा में, यह क्या कलाम है। बाद को आप से दरयाफ़्त किया गया कि आज आपने खुतबा फरमाते-फरमाते यह क्या कलिमा फरमाया? आपने फरमाया कि लश्करे इस्लाम जो मुल्के अजम में मक़ामे नहावन्द में कुफ़्फ़ार के साथ मस्रूफ़े जंग है, मैंने देखा कि कुफ़्फ़ार उसको दोनों तरफ़ से घेर कर मारना चाहते हैं। ऐसी हालत में मैंने पुकार कर कह दिया कि ऐ सारिया जबल यानी पहाड़ की आड़ लो। यह सुन कर लोग मुंतज़िर रहे कि लश्कर से कोई ख़बर आए तो तफ़्सीली हाल दरयाफ़्त हो। कुछ अरसे के बाद सारिया का क़ासिद ख़त लेकर आया उस में तहरीर था कि जुमा के रोज़ दुश्मन से मुक़ाबला हो रहा था ख़ास नमाज़े जुमा के वक़्त हम ने सुनाया। **या सारियतल-जबल।** यह सुन कर हम पहाड़ से मिल गये और हमें दुश्मन पर ग़लबा हासिल हुआ यहाँ तक कि दुश्मन को हज़ीमत (शिकस्त) हुई।

सुब्हानल्लाह ख़लीफ़-ए-इस्लाम की नज़र मदीना तैयबा से नहावन्द में लश्कर को मुलाहिज़ा फरमाए और यहाँ से निदा करे तो लश्कर को अपनी आवाज़ सुनाए न कोई दुर्बीन है न टेलीफोन है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्ची गुलामी का सदक़ा है। वलिल-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

अबूल-क़ासिम ने अपने फ़वाइद में रिवायत की कि अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु के पास एक शख़्स आया आपने उसका नाम दरयाफ़्त फरमाया। कहने लगा मेरा नाम हुमरा (अख़्गार) है। फरमाया किसका बेटा? कहा इब्ने शिहाब (आनश पारह) का, फरमाया किन लोगों में से है कहा हुरक़ा (सोज़िश) में से फरमाया, तेरा वतन कहाँ है कहा, हिर्रा (तपिश) फरमाया, उसके किस मक़ाम पर, कहा, ज़ाते लज़ा (शोअ्ला दार) में, फरमाया, अपने घर वालों की ख़बर ले। सब जल गये। लौट कर घर आया तो सारा कुंबा जला पाया।

अबुश्शैख़ ने किताबुल-इस्मत में रिवायत की है कि जब मिस्र फतह हुआ तो एक रोज़ अह्ले मिस्र ने हज़रत अमर बिन आस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ किया कि ऐ अमीर हमारे दरियाए नील की एक रस्म

है जब तक उसको अदा न किया जाए दरिया जारी नहीं रहता, उन्होंने दरयाफ़्त किया, क्या? कहा, इस महीने की ग्यारह तारीख़ को हम एक कुंवारी लड़की को उसके वालिदैन से लेकर उम्दा लिबास और नफीस ज़ेवर से सजा कर दरियाए नील में डालते हैं। हज़रत अमर बिन आस ने कहा कि इस्लाम में हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता और इस्लाम पुरानी वाहियात रस्मों को मिटाता है पस वह रस्म मौकूफ़ रखी गई और दरिया की रवानी कम होती गई यहाँ तक कि लोगों ने वहाँ से चले जाने का क़स्द (इरादा) किया। यह देख कर हज़रत अमर निब आस ने अमीरुल-मोमिनीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में तमाम वाक़या लिख कर भेजा। आपने जवाब में तहरीर फरमाया, तुमने ठीक किया। बेशक इस्लाम ऐसी रस्मों को मिटाता है। मेरे इस ख़त में एक पर्चा है इसको दरियाए नील में डाल देना। अमर बिन आस के पास जब अमीरुल-मोमिनीन का ख़त पहुँचा और उन्होंने वह पर्चा इस ख़त में से निकाला तो उसमें खत लिखा था :

अज़ जानिब बन्द-ए-खुदा उमर अमीरुल-मोमिनीन बसूए नीले मिस्र। बाद अज़ हम्द व सलात आंकि अगर तू खुद जारी है तो न जारी हो और अल्लाह तआला ने जारी फरमाया तो मैं अल्लाह वाहिदे क़ह्हार से दर्ख़्वास्त करता हूँ कि तुझे जारी फरमा दे। अमर बिन आस ने यह पर्चा दरियाए नील में डाला एक रात में सोला गज़ पानी बढ़ गया और भेंट चढ़ाने की रस्म मिस्र से बिल्कुल ख़त्म हो गई।

अमीरुल-मोमिनीन

हज़रत उमर फारूक़े आज़म

रज़ि अल्लाहु अन्हु का

ज़ुहद व तक़वा तवाज़ु व बुर्दबारी

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु रोज़ाना ग्यारह लुक़्मों से ज़्यादा तआम (खाना) मुलाहिज़ा न फरमाते। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने देखा कि हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के क़मीस मुबारक में दो शानों (कंधों) के दर्मियान चार पैवन्द लगे थे। यह भी रिवायत है कि शाम के मुल्क जब फतह हुए और आपने इन मुल्कों को अपने मुबारक क़दमों से सरफराज़ फरमाया और वहाँ के उमरा व उज़्मा आपके इस्तिक़्बाल के लिए आए हैं इस मौक़े पर आप अपने ऊँट पर सवार थे, आप के ख़्वास व ख़ुद्दाम ने अर्ज़ किया ऐ अमीरुल-मोमिनीन! शाम के अकाबिर व अशराफ़ हुज़ूर की मुलाक़ात के लिए आ रहे हैं मुनासिब होगा कि हुज़ूर घोड़े पर सवार हों ताकि आपकी शौकत व हैबत उनके दिलों में जागुज़ीं हो फरमाया इस ख़्याल में न रहिए काम बनाने वाला और ही है। सुब्हानल्लाह।

एक मरतबा क़ैसरे रूम का क़ासिद मदीना-ए-तैयबा में आया और अमीरुल-मोमिनीन को तलाश करता था ताकि बादशाह का प्याम आपकी ख़िदमत में अर्ज़ करे। लोगों ने बताया कि अमीरुल-मोमिनीन मस्जिद में हैं। मस्जिद में आया देखा कि एक साहब मोटे पैवन्द लगे कपड़े पहने एक ईंट पर सर रखे लेटे हैं। यह देख कर बाहर आया और लोगों से अमीरुल-मोमिनीन का पता दरयाफ़्त करने लगा कहा गया मस्जिद में तशरीफ़ फरमा हैं, कहने लगा मस्जिद में तो सिवाए एक दिलक़ पोश के कोई नहीं। सहाबा ने कहा वही दिलक़ पोश हमारा अमीर ख़लीफ़ा है

क़ैसर का क़ासिद फिर मस्जिद में आया और ग़ौर से अमीरुल-मोमिनीन

के चेहर-ए-मुबारक को देखने लगा। दिल में मुहब्बत व हैबत पैदा हुई और आपकी हक़्क़ानियत का परतव उसके दिल में जल्वागर हुआ –

हज़रत आमिर बिन रबीआ फरमाते हैं कि मैं अमीरुल-मोमिनीन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में था। आप जब बइराद-ए-हज मदीना-ए-तैयबा से रवाना हुए। आने जाने में उमरा खुलफ़ा की तरह आपके लिए ख़ेमा नसब न किया गया, राह में जहाँ क़्याम फरमाते अपने कपड़े और बिस्तर किसी दरख़्त पर डाल कर साया कर लेते। एक रोज़ बरसरे मिंबर मौइज़त (नसीहत) फरमा रहे थे। महर का मस्अला ज़ेरे बहस आया। आपने फरमाया महर भारी न किए जाएं और चालीस ऊक़िया से महर ज़्यादा मुक़र्रर न किया जाए। (एक ऊक़िया चालीस दिरहम का होता है) क्योंकि सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लभ ने अपनी बीवियों का महर चालीस ऊक़िया से ज़्यादा न फरमाया लिहाज़ा जो कोई आज की तारीख़ से इस से ज़्यादा महर मुक़र्रर करेगा वह ज़्यादती बैतुल–माल में दाख़िल कर ली जाएगी। एक ज़ईफ़ा औरतों की सफ़ से उठी और उस ने अर्ज़ किया ऐ अमीरुल-मोमिनीन ऐसा कहना आपके मन्सबे आली के लाइक़ नहीं, महर अल्लाह तआला ने औरत का हक़ किया है वह उसके लिए हलाल है उसका कोई हिस्सा उस से किस तरह लिया जा सकता है अल्लाह तआला फरमाता है। **अतैतुम इहदाहुन्ना क़िन्तारन वला ताखुज़ मिन्हु शैअन।** आपने फौरन बेदरेग़ दादे इंसाफ़ दी और फरमाया। **इम्रातुन असाबत व रजुलुन अख़्ताआ।** औरत ठीक पहुँची और मर्द ने ख़ता की। फिर मिंबर पर ऐलान फरमाया कि औरत सही कहती है मेरी ग़लती थी जो चाहो महर मुक़र्रर करो और फरमाया। **अल्लाहुम्मग़्फ़िरली कुल्लु इंसानिन अफ़्क़हू मिन उमरा।** यारब मेरी मग़्फ़िरत फरमा, हर शख़्स उमर से ज़्यादा समझ वाला है।

JANNATI KAUN?

अमीरुल-मोमिनीन
हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु
की ख़िलाफ़त

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु माहे जमादिउल-उख़र 13 हिजरी में मसनदे आराए सरीर ख़िलाफ़त हुए दस साल चन्द माह उमूरे ख़िलाफ़त को अंजाम दिया। इस दस साला ख़िलाफ़त के अय्याम ने सलातीने आलम को मुतहैय्यर (हैरतज़दह) कर दिया है। ज़मीन अद्ल व इंसाफ़ से भर गई। दुनिया में रास्ती व दयानतदारी का सिक्का राइज हुआ। मख़्लूक़े खुदा के दिलों में हक़ परस्ती व पाकबाज़ी का जज़्बा पैदा हुआ। इस्लाम के बरकात से आलम फैज़याब हुआ। फ़ुतूहात इस कसरत से हुईं कि आज तक मुल्क व सलतनत के वाली-ए-सिपाह व लश्कर के मालिक हैरत में हैं, आपके लश्करों ने जिस तरफ़ क़दम उठाया फतह व कामयाबी क़दम चूमती गई। बड़े-बड़े फरीदों फरशहर बारों के ताज क़दमों में रौंदते गये। मुल्क व बिलाद (शहर) इस कसरत से क़ब्ज़ा में आए कि उनकी फ़ेहरिस्त लिखी जाए तो सफह के सफह भर जाएं। रुअब व हैबत का यह आलम था कि बहादुरों के ज़ुहरे नाम सुन कर पानी होते थे। जंग के तलबगार साहिबे हुनर काँपते और थर्राते थे क़ाहिर सलतनतें ख़ौफ़ से लरज़ती थीं। बईं हमा फर्र व इक़बाल व रुअब व सतवत आपकी दुर्वेशाना ज़िन्दगी में कोई फर्क़ न आया। रात दिन ख़ौफ़े खुदा में रोते-रोते रुख़्सारों पर निशान पड़ गये थे। आप ही के ज़माने में सन हिजरी मुक़र्रर हुआ। आप ही ने दफ़्तर व दीवान की बुनियाद डाली। आप ही ने बैतुल-माल बनाया। आप ही ने तमाम बिलाद (शहरों) व अम्सार में तरावीह की जमाअतें क़ाइम फरमाईं। आप ही ने रात के पहरादार मुक़र्रर किए जो रात को पहरा देते थे। यह सब आपकी खुसूसियतें हैं आप से पहले उन में से कोई बात न थी।

इब्ने असाकिर ने इस्माईल बिन ज़्याद से रिवायत की कि हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहुल-करीम मस्जिदों पर गुज़रे जिन पर

क़िन्दीलें रौशन थीं। उन्हें देख कर फरमाया कि अल्लाह तआला हज़रत उमर की क़ब्र को रौशन फरमाए जिन्होंने हमारी मस्जिदों को मुनव्वर कर दिया। अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने मस्जिदे नबवी की तौसीअ् की, आप ही ने यहूदियों को हिजाज़ से निकाला। आप की करामात और फ़ज़ाइल बहुत ज़्यादा हैं और आपकी शान में बहुत अहादीस वारिद हैं। जिल-हिज्जा 23 हिजरी में आप अबू लूलू मजूसी के हाथ से मस्जिद में शहीद हुए। रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ज़ख़्म खाने के बाद आपने फरमाया : **काना अम्रुल्लाहे क़दरन मक़्दूरा।** और फरमाया अल्लाह की तारीफ़ जिस ने मेरी मौत किसी मुद्दई-ए-इस्लाम के हाथ पर न रखी। बाद वफ़ात शरीफ़ बइजाज़त हज़रत उम्मुल-मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा अपने महबूब अलैहिस्सलातु वस्सलाम के क़रीब रौज़-ए-क़ुदसीया के अन्दर पहलूए सिद्दीक़ में मदफून हुए और आपने अम्रे ख़िलाफ़त को शूरा पर छोड़ा। वफ़ात शरीफ़ के वक़्त ज़्यादा सही अक़्वाल पर आपकी उम्र त्रिसठ साल की थी आपकी मुहर का नक़्शा था। **कफ़ा बिल-मौति वाइज़न।**

JANNATI KAUN?

ख़लीफ़-ए-सोम

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु। आप का नसब नामा उस्मान बिन अफ़्फ़ान इब्ने अबिल-आस इब्ने उमैया इब्ने अब्दे शम्स इब्ने अब्दे मुनाफ़ इब्ने कुसा बिन किलाब इब्ने मुर्रा बिन कअ़ब इब्ने लुई इब्ने ग़ालिब। आपकी विलादत फील वाले साल से छटे साल हुवय। आप क़दीमुल-इस्लाम हैं और आपको इस्लाम की दावत हज़रत सिद्दीक़ ने दी। आपने दोनों हिजरतें फरमाईं पहले हब्शा की तरफ़ दूसरे मदीना-ए-तैयबा की तरफ़। आपके निकाह में हुज़ूरे अनवर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो साहबज़ादियाँ आईं। पहले हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा। उनके साथ नुबुव्वत से पहले निकाह हुआ और उन्होंने ग़ज़्व-ए-बद्र के ज़माने में वफ़ात पाई और उन्हीं की तीमारदारी की वजह से हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बइजाज़ते रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना-ए-तैयबा में रह गये। हुज़ूर ने उनका हिस्सा व अज्र बहाल रखा और इसी वजह से वह बद्रियों में शुमार किए जाते हैं। जिस रोज़ बद्र में मुसलमानों की फतह पाने की ख़बर मदीना-ए-तैयबा में पहुँची उसी दिन हज़रत रुक़ैया को दफन किया गया था। इसके बाद हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दूसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा को आपके निकाह में दिया जिनकी वफ़ात 9 हिजरी में हुई। उलमा फरमाते हैं कि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु ताआला अन्हु के सिवा दुनिया में कोई ख़्स ऐसा नज़र नहीं आता जिसके निकाह में किसी नबी की दो साहबज़ादियाँ आई हों इसी लिए आपको ज़ुन्नूरैन कहा जाता है। आप साबेक़ीने अव्वलीन और अव्वलें मुहाजिरीन अशर-ए-मुबश्शरह में से हैं। और उन सहाबा में से हैं जिनको अल्लाह तआला ने जमअ़े कुरआन की इज़्ज़त अता फरमाई।

हज़रत मौला अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम से हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की निस्बत दरयाफ़्त किया गया तो आपने फरमाया कि यह वह शख़्स है जिसको मला-ए-आला में

ज़ुन्नूरैन पुकारा जाता है आपकी वालिदा अरदा बिन्ते करीज़ इब्ने रबीआ इब्ने हबीब बिन अब्दे शम्स हैं। और आपकी नानी उम्मे हकीम बैज़ा बिन्ते अब्दुल-मुत्तलिब इब्ने हाशिम हैं जो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व अस्हाबेही व बारिक व सल्लम के वालिद माजिद की तवाम्मा यानी उनके साथ पैदा होने वाली बहन हैं। हज़रत उस्मान ग़नी की वालिदा हुज़ूर की फूफ़ी ज़ाद बहन हैं। आप बहुत हसीन व जमील ख़ूबरू थे।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के इस्लाम लाने के बाद उनके चचा हकीम इब्ने अबी अल-आस इब्ने उमैया ने पकड़ कर बांध दिया और कहा कि तुम अपने आबा व अज्दाद (बाप दादा) का दीन छोड़ कर एक नया दीन इख़्तियार करते हो बखुदा मैं तुमको न छोड़ूंगा जब तक तुम इस दीन को न छोड़ो। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया, खुदा की क़सम मै। इस दीन को कभी न छोड़ूंगा और उस से कभी जुदा न हूंगा। हकीम ने आपका यह ज़बरदस्त इस्तिक़्लाल देख कर छोड़ दिया।

जिस वक़्त हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु दरबारे रिसालत में हाज़िर होते हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने लिबासे मुबारक को ख़ूब दुरुस्त फरमाते और इरशाद फरमाते मैं उस शख़्स से क्यों न हया करूं जिस से मलाइका शरमाते हैं।

तिर्मिज़ी ने अब्दुर्रहमान बिन खुबाब से रिवायत की है कि वह कहते हैं कि मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था हुज़ूरे अक़्दस जैशे इसरत के लिए तरग़ीब फरमा रहे थे। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं सौ ऊंट मआ सामान राहे खुदा में पेश करूंगा। हुज़ूर ने फिर लोगों को तरग़ीब फरमाई। फिर हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया, मैं दो सौ ऊंट मआ सामान हाज़िर करूंगा। फिर हुज़ूर ने तरग़ीब फरमाई। फिर हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु ही ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मैं तीन सौ ऊंट मआ उनके तमाम अस्बाब के साथ पेशे ख़िदमत करूंगा। अब हुज़ूर अलैहिस्सलात ने मिंबर से नुज़ूल फरमाया और यह फरमाया कि इसके बाद उस्मान पर नहीं जो कुछ करे। मुराद यह थी कि यह अमले ख़ैर ऐसा आला और इतना मक़्बूल है कि अब

और नवाफ़िल न करें। जब भी यह उनके बुलन्द मर्तबे के लिए काफी है और इस मक़्बूलियत के बाद अब उन्हें कोई अन्देश-ए-ज़रर (नुक़्सान) नहीं है।

इन कलिमाते मुबारका से हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु की शान और बारगाहे रिसालत में उनकी मक़्बूलियत का अंदाज़ा होता है। बैअ़ते रिज़्वान के वक़्त हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु मौजूद न थे। हुज़ूर अलैहिस्सलात ने उन्हें मक्का मुकर्रमा भेजा था बैअ़त के वक़्त यह फरमा कर कि उस्मान अल्लाह और रसूल के काम में हैं अपने ही एक दस्ते मुबारक को हज़रत ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु की तरफ़ से दस्ते अक़्दस में ले लिया। बैअ़त की शान हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के इम्तियाज़ व कुर्बे ख़ास का इज़्हार करती है। आपके फ़ज़ाइल में बकसरत अहादीस वारिद हैं।

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपने आख़िरी ज़माने में एक जमाअत मुक़र्रर फरमा दी थी जिसके अरकान यह हज़रात थे। हज़रत उस्मान ग़नी, हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा, हज़रत तलहा, हज़रत जुबैर, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत सअ़द, और ख़लीफ़ा का इंतिख़ाब शूरा (मशवरा कमेटी) पर छोड़ा था। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने हज़रत उस्मान ग़नी से ख़ल्वत (अकेले) में कहा कि अगर मैं आप से बैअ़त न करूं तो आपकी राय किस के लिए है फरमाया, हज़रत अली के लिए। इसी तरह हज़रत जुबैर से पूछा उन्होंने फरमाया अली या उस्मान, फिर सअद से कहा कि तुम तो ख़िलाफ़त चाहते नहीं अब बताओ राय किस के हक़ में है। उन्होंने हज़रत उस्मान का नाम लिया। फिर अब्दुर्रहमान ने आयान से मशवरा लिया। कसरते राय हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु व अन्हुम अज्मईन के हक़ में हुई और आप बइत्तिफ़ाक़े मुस्लेमीन ख़लीफ़ा हुए। अमीरुल-मोमिनीन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु के दफन से तीन रोज़ बाद आपके दस्ते हक़ पर बैअ़त की गई।

आपके ज़मान मुबारक में "रय" और "रूम" के कई क़िले साबू रादरार जान और दारे बजर और अफ़्रीक़ा और उन्दुलुस, क़बरस, जौर और खुरासान के बिलादे कसीरा और नीशापुर और तूस, और सरख़स और मरव और बैहक़ फतह हुए।

26 हिजरी में आपने मस्जिदे हराम (काब-ए-मुक़द्दसा) की तौसीअ़

फरमाई और 29 हिजरी में मस्जिद मदीना-ए-तैयबा की तौसीअ् की और न से बनाया। पत्थर के सुतून क़ाइम किए। साल की छत बनाई तूल (160) गज़ और अर्ज़ (150) गज़ किया। बारह साल उमूरे ख़िलाफ़त को सर अंजाम फरमा कर 35 हिजरी में शहादत पाई। रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु।

जब बाग़ियों ने आपके महल को घेर लिया उस वक़्त आप से मुक़ाबले के लिए अर्ज़ किया गया और कुव्वत आपकी ज़्यादा थी मगर आपने कुबूल न फरमाया। अर्ज़ किया गया कि मक्का मुकर्रमा या और किसी मक़ाम पर तशरीफ़ ले जाएं, यह भी मन्ज़ूर न फरमाया और इरशाद फरमाया कि मैं रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कुर्ब छोड़ने की ताक़त नहीं रखता। जिस रोज़ से आपने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअ़त की थी उस रोज़ से दमे आख़िर तक अपना दाहिना हाथ अपनी शर्मगाह को न लगाया। क्योंकि यह हाथ सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस्ते अक़्दस में दिया गया था। रोज़े इस्लाम से रोज़े वफ़ात तक कोई जुमा ऐसा न गुज़रा कि आपने कोई गुलाम आज़ाद न किया हो अगर कभी जुमा को आपके पास कोई गुलाम न हुआ तो बाद जुमा के आज़ाद कर दिया।

JANNATI KAUN?

आपकी शहादत : आपकी शहादत अय्यामे तश्रीक़ में हुई और आप सनीचर की रात में मग़्रिब व इशा के दर्मियान बक़ीअ् शरीफ़ में मदफ़ून हुए आपकी उम्र बयासी साल की हुई। आपके जनाज़े की नमाज़ हज़रत ज़ुबैर ने पढ़ाई और उन्होंने आपको दफन किया। और यही आपकी वसीयत थी।

इब्ने असाकिर ने यज़ीद बिन हबीब से नक़्ल किया कि वह कहते हैं मुझे ख़बर पहुँची है कि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु पर बलवा करने वालों में से अक्सर लोग मजनूं व दीवाने हो गये। हज़रत हुज़ैफ़ा फरमाते हैं कि पहला फित्ना हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का शहीद किया जाना है और आख़िर फित्न दज्जाल का ख़ुरूज, ग़रज़ सहाबा में हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत ने एक अजीब हैजान पैदा कर दिया। और वह उस से ख़ाइफ़ हो गये और समझने लगे कि अब फित्नों का दरवाज़ा खुला और दीन में रखने पैदा होने शुरू हुए। हज़रत समुरह फरमाते हैं कि इस्लाम एक मुहकम (मज़्बूत) क़िले में महफ़ूज़ था।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शहादत इस्लाम में

पहला रखना है और ऐसा रखना जिसका इंसिदाद (बन्द होना) क़्यामत तक न होगा। हज़रत हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु से मन्कूल है कि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत के वक़्त हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा वहाँ तशरीफ़ नहीं रखते थे। जंगे जमल में हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा ने फरमाया, या रब मैं तेरे हुज़ूर में ख़ूने उस्मान से बराअत का इज़्हार करता हूँ! हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु के क़त्ल के रोज़ मेरा ताइरे अक़्ल परवाज़ कर गया था। लोग मेरे पास बैअ़त को आए तो मैंने कहा कि बखुदा मैं ऐसी क़ौम की बैअ़त करने से शरमाता हूँ जिन्होंने हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु को शहीद किया और मुझे अल्लाह तआला से शर्म आती है कि मैं हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु के दफन से पहले बैअ़त में मस्रूफ़ हूँ। लोग फिर गये। लौट कर आए फिर उन्होंने मुझ से बैअ़त की दर्ख़्वास्त की तो मैंने कहा, यारब मैं उस से ख़ाइफ़ हूँ जो हज़रत उस्मान पर पेश आया। फिर इराद-ए-इलाही ग़ालिब आया और मुझे बैअ़त लेना पड़ी। लोगों ने जब मुझ से कहा या अमीरुल-मोमिनीन तो यह कलिमा सुन कर मेरे दिल में चोट लगी। उस वक़्त हज़रत मौला अली मुर्तज़ा को हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु याद आए और अपनी निस्बत यह कलिमा सुनना बाइसे मलाले ख़ातिर हुआ। इस से उस मुहब्बत का पता चलता है जो हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु को हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु के साथ है। और हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम ने इस हंगामे को रोकने के लिए पूरी कोशिश फरमाई और अपने दोनों साहबज़ादों सैयदना हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन को हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर तलवारें लेकर हिफ़ाज़त के लिए भेज दिया था लेकिन जो अल्लाह तआला को मन्ज़ूर था और जिसकी ख़बरें सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी थीं उसको कौन रफ़अ़ कर सकता है।

❖❖❖❖❖❖❖

❖❖❖❖❖

❖❖❖

❖

ख़लीफ़-ए-चहारुम

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहू आपका नामे नामी अली, कुन्नियत अबुल-हसन अबू तुराब है। आपके वालिद हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा अबू तालिब हैं आप कम उम्रों में सबसे पहले इस्लाम लाए। इस्लाम लाने के वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ क्या थी इसमें चन्द अक़्वाल हैं। एक क़ौल में आपकी उम्र पन्द्रह साल की, एक में सोलह की, एक में आठ साल की, एक में दस साल की, अगरचे उम्र के बाब में चन्द क़वी हैं मगर इस क़द्र यक़ीनी है कि इब्तिदाए उम्र में बुलूग़ के क़रीब ही आप दौलते ईमान से मुशर्रफ़ हुए। आपने कभी बुतपरस्ती नहीं की जिस तरह कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कभी बुत परस्ती के साथ मुलव्विस न हुए। आप अशर-ए-मुबश्शरह में से हैं जिनके लिए जन्नत का वादा दिया गया और अलावा चचाज़ाद होने के आपको हुज़ूरे अकरम नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में इज़्ज़त मवाख़ात भी है। और सैयद-ए-निसाए आलमीन ख़ातूने जन्नत हज़रत बतूल ज़ुहरा रज़ि अल्लाहु अन्हा के साथ आपका अक़्दे निकाह हुआ। आप साबेक़ीने अव्वलीन और उलमा-ए-रब्बानीयीन में से हैं। जिस तरह शुजाअत बसालत में आपका नामे नामी ज़माने में मशहूर है। अरब व अजम बर्र व बहर में आपके ज़ोर व कुव्वत के सिक्के बैठे हुए हैं। आपकी हैबत व दबदबे से आज भी जवाने मर्दाने शेरे दिल काँप जाते हैं। इसी तरह आपका जुहद व रियाज़त अतराफ़ व अक्नाफ़े आलम में वज़ीफ़-ए-ख़ास व आम हैं। करोड़ों औलिया आपके सीन-ए-नूरे गंजीना से मुस्तफ़ीज़ हैं। और आपके इरशाद व हिदायत ने ज़मीन को खुदा परस्तों की ताअत व रियाज़त से भर दिया है। खुश बयान फ़ुसहा और मारूफ़ खुतबा में आप बुलन्द पाया हैं। जामेईन कुरआन पाक में आपका नामे नामी नूरानी हरफ़ों के साथ चमकता है। आप बनी हाशिम में पहले ख़लीफ़ा हैं और सिब्तैन करीमैन हसनैन जमीलैन सय्यदैन शहीदैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा के वालिद माजिद हैं। सादाते किराम और औलादे रसूल अलैहिस्सलातु

वस्सलाम का सिलसिला परवरदिगारे आलम ने आप से जारी फरमाया : आप तबूक के सिवा तमाम जंगों में हाज़िर हुए जंगे तबूक के मौके पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपको मदीने पर ख़लीफ़ा बनाया था और इरशाद फरमाया था कि तुम्हें हमारी बारगाह में वह मरतबा हासिल है जो हज़रत मूसा की बारगाह में हज़रत हारून को। (अलैहिस्सलातु वस्सलाम)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चन्द मक़ामों में आपको लिवा (झण्डा) अता फरमाया खुसूसन रोज़े ख़ैबर और हुज़ूर ने ख़बर दी कि उनके हाथ पर फतह होगी। आपने उस रोज़ क़िल-ए-ख़ैबर का दरवाज़ा अपनी पुश्त पर रखा और उस पर मुसलमानों ने चढ़ कर क़िले को फतह किया। उसके बाद लोगों ने उसे खींचना चाहा तो चालीस आदमियों से कम उस को न उठा सके। जंगों में आपके कारनामे बहुत हैं।

आपको अपने नामों में अबू तुराब बहुत प्यारा मालूम होता है और इस नाम से आप बहुत खुश होते थे। उसका सबब यह था कि एक रोज़ आप मस्जिद शरीफ़ की दीवार के पास लेटे हुए थे। पुश्ते मुबारक को मिट्टी लग गई थी। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और आपकी पुश्ते मुबारक से मिट्टी झाड़ कर फरमाया **"इज्लिस अबा तुराब"** यह हुज़ूर का अता फरमाया अबू तुराब आपको हर नाम से प्यारा मालूम होता था और आप इस नाम से सुल्ताने कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लुत्फ़ व करम के मज़े लेते थे।

आपके फ़ज़ाइल व महामिद बहुत ज़्यादा हैं। हज़रत सअद बिन वक़ास से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़ज़्व-ए-तबूक के मौके पर हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हुहू को मदीना-ए-तैयबा में अह्ले बैत की हिफ़ाज़त के लिए छोड़ा। हज़रत मौला अली मुर्तज़ा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप मुझे औरतों और बच्चों में ख़लीफ़ा बनाते हैं हुज़ूर ने फरमाया क्या तुम राज़ी नहीं हो कि तुम्हें मेरे दरबार में वह मर्तबत हासिल हो जो हज़रत हारून को दरबारे हज़रत मूसा में थी। अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम। सिवाय इस बात के कि मेरे बाद कोई नबी नहीं आया।

हज़रत सहल बिन सअद रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोज़े ख़ैबर फरमाया कि मैं कल झण्डा उस शख़्स को दूँगा जिसके हाथों पर अल्लाह तआला फतह

फरमाएगा। और वह अल्लाह व रसूल को महबूब रखता है और अल्लाह व रसूल उसको महबूब रखते हैं। इस मुज़्द-ए-जांफिज़ा ने सहाबा-ए-किराम को तमाम रात उम्मीद की घड़ियाँ गिनने में मसरूफ रखा। आरज़ूमन्द दिलों को रात काटनी मुश्किल हो गई और मुजाहिदीन की नींदें उड़ गईं। हर दिल आरज़ूमन्द था कि इस नेमते उज़्मा व कुबरा से बहरा मन्द हो और हर आंख मुंतज़िर थी कि सुबह की रौशनी में सुल्ताने दारैन फतह का झण्डा किस को अता फरमाते हैं। सुबह होते ही शब बेदार तमन्नाई उम्मीदों के ज़ख़ाइर लिए बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अदब के साथ देखने लगे कि करीम ज़र्रा परवर का दस्ते रहमत किस सआदत मन्द को सरफराज़ फरमाता है। महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लबे मुबारक की जुंबिश पर अरमान भरी निगाहें कुरबान हो रही थीं कि रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

अली इब्ने तालिब कहाँ हैं। अर्ज़ किया गया वह बीमार हैं उन की आंखों पर आशोब (आँख दुखना) है। बुलाने का हुक्म दिया गया और अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहू हाज़िर हुए। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दहने मुबारक के हयात बख़्श लुआब से उनकी चश्मे बीमार का इलाज फरमाया और बरकत की दुआ की। दआ करना था कि न दर्द बाक़ी रहा न खटक न सुर्ख़ी न टपक, आन की आन में ऐसा आराम हुआ कि गोया कभी बीमार न हुए इसके बाद उनको झण्डा अता फरमाया।

तिर्मिज़ी व नसाई व इब्ने माजा ने हब्शी बिन जुहादा से रिवायत की। हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "**अलीयुन मिन्नी व अना मिन अलीय्यिन**" (अली मुझ से है और मैं अली से) इस से हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहू का कमाले कुर्ब बारगाहे रिसालत से ज़ाहिर होता है। इमाम मुस्लिम ने हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि आपने फरमाया कि उसकी क़सम जिसने दाने को फाड़ा और उसको इनायत की। और जानों को पैदा किया बेशक मुझे नबी-ए-उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया कि मुझ से ईमानदार मुहब्बत करेंगे और मुनाफ़िक़ दुश्मनी रखेंगे।

तिर्मिज़ी में हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है फरमाते हैं कि हमारे नज़्दीक अली-ए-मुर्तज़ा से दुश्मनी रखना

मुनाफ़िक़ की अलामत थी इसी से हम मुनाफ़िक़ को पहचान लेते थे। हाकिम ने हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहू से रिवायत की फरमाते हैं मुझे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यमन की तरफ़ क़ाज़ी बना कर भेजा, मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर मैं कम उम्र हूँ क़ज़ा जानता नहीं। काम किस तरह अंजाम दे सकूंगा। हुज़ूर ने अपना दस्ते मुबारक मेरे सीने पर मार कर दुआ फरमाई। परवरदिगार की क़सम मुआमले के फ़ैसल करने में मुझे शुबह तक नही हुआ। सहाब-ए-किबार का हज़रत अमीरुल मोमिनीन को अक़्ज़ा जानते थे सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फैज़ है कि हज़रत अमीरुल-मोमिनीन के सीना में दस्ते मुबारक लगाया और वह इल्मे क़ज़ा में कामिल और इमरान में फाइक़ हो गये। जिसके हाथ लगाने से सीने उलूम के गनीजीने बन जाएं उसके उलूम का कोई क्या बयान कर सकता है। इब्ने असाकिर ने हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हुहू के हक़ में बहुत सी आयतें नाज़िल हुईं। तबरानी व हाकिम ने हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहू को देखना इबादत है। अबू याला व बज़्ज़ार ने हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया, जिसने अली को ईज़ा (तक्लीफ़) दी उस ने मुझे ईज़ा (तक्लीफ़) दी। बज़्ज़ार और अबू यअ्ला और हाकिम ने हज़रत अमीरुल-मोमिनीन अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू से रिवायत की, आपने फरमाया कि मुझ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम्हें हज़रत ईसा अला नबीयेना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम से एक मुनासिबत है उन से यहूदियों ने यहाँ तक बुग्ज़ किया कि उनकी वालिदा माजिदा पर तोहमत लगाई। ईसाई मुहब्बत में ऐसे हद से गुज़रे कि उनकी खुदाई के मोतक़िद हो गये। होशियार हो जाओ मेरे हक़ में भी दो गिरोह हलाक होंगे एक मुहिब्बे मुफ़्रित जो मुझे मेरे मर्तबे से बढ़ाए और हद से तजावुज़ करे दूसरा मुब्ग़िज़ जो अदावत में मुझ पर बुहतान बांधे। हज़रत अमीरुल-मोमिनीन अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के इस इरशाद से मालूम हुआ कि राफ़ज़ी व ख़ार्जी दोनों गुमराह हैं और हलाकत की राह चलते हैं। तरीक़े क़वीम और सिराते मुस्तक़ीम पर अह्ले सुन्नत हैं जो

मुहब्बत भी रखते हैं और हद से तजावुज़ भी नहीं करते। वल्हम्दुलिल्लाहे रब्बिल-आलमीन।

बैअ़त व शहादत : इब्ने सअद के क़ौल पर हज़रत अमीरुल-मोमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के दूसरे रोज़ अमीरुल-मोमिनन अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हुहू के दस्ते मुबारक पर मदीना-ए-तैयबा में तामाम सहाबा ने जो वहाँ मौजूद थे बैअ़त की। 36 हिजरी में जंगे जमल का वाक़या पेश आया। और सफर 37 हिजरी में जंगे सिफ़्फ़ीन हुई जो एक सुलह पर ख़त्म हुई और हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू ने कूफा की तरफ़ मुराजअत फरमाई और उस वक़्त ख़्वारिज ने सरकशी शुरू की और लश्कर जमा करके चढ़ाई की। हज़रत अमीरुल-मोमिनीन ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को उनके मुक़ाबले के लिए भेजा। आप उन पर ग़ालिब आए। और उन में से क़ौम कसीर वापस हुई और एक क़ौम साबित रही और उन्होंने नहरवान की तरफ़ जा कर राहज़नी शुरू की। हज़रत अमीरुल-मोमिनीन इस फित्ना की मुदाफ़ेअत के लिए उनकी तरफ़ रवाना हुए। 38 हिजरी में आपने उनको नहरवान में क़त्ल किया उन्हीं में ज़विस्सदिया को भी क़त्ल किया जिसके ख़ुरूज की ख़बर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी थी। ख़वारिज में से एक नामुराद अब्दुर्रहमान बिन मुल्जिम मुरादी था। उस ने बर्क बिन अब्दुल्लाह तमीमी ख़ार्जी और अमर बिन बुकैर तमीमी ख़ार्जी को मक्का मुकर्रमा में जमा करके हज़रत अमीरुल-मोमिनीन अली मुर्तज़ा और मुआविया बिन अबी सुफ़यान और हज़रत अमर बिन आस के क़त्ल का मुआहदा किया। और हज़रत अमीरुल-मोमिनीन अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहू के क़त्ल के लिए इब्ने मुल्जिम मुक़र्रर हुआ और एक तारीख़ मुऐयन कर ली गई। मुस्तदरक में सुदी से मन्कूल है कि अब्दुर्रहमान बिन मुल्जिम एक ख़ार्जी औरत क़ताम नामी पर आशिक़ था। उस नाशाद की शादी का महर तीन हज़ार दिरहम और हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहू को क़त्ल करना क़रार पाया।

अब इब्ने मुल्जिम कूफ़ा पहुँचा और वहाँ के ख़्वारिज से मिला और उन्हें दर पर्दा अपने नापाक इरादे की इत्तिला दी। ख़्वारिज उसके साथ मुत्तफ़िक़ हुए। शबे जुमा 17 रमज़ानुल-मुबारक 40 हिजरी को अमीरुल- मोमिनीन हज़रत मौला अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहू सहर के वक़्त बेदार

हुए। उस रमज़ान में आपका दस्तूर यह था कि एक रात हज़रात इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के पास एक रात हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु के पास। एक रात हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ि अल्लाहु अन्हु के पास अफ़्तार फरमाते और तीन लुक़्मों से ज़्यादा तनावुल न फरमाते थे कि मुझे यह अच्छा मालूम होता है कि अल्लाह तआला से मिलने के वक़्त मेरा पेट ख़ाली हो।

आज की शब तो यह हालत रही कि बार-बार मकान से बाहर तशरीफ़ लाते और आसमान की तरफ़ नज़र फरमाते और फरमाते कि बख़ुदा मुझे कोई ख़बर झूठी नहीं दी गई यह वही रात है जिसका वादा दिया गया है। सुबह को जब बेदार हुए तो अपने फ़रज़न्दे अरजुमन्द अमीरुल-मोमिनीन इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु से फरमाया, आज रात मैंने हबीबे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़्यारत की और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह मैंने आपकी उम्मत से आराम न पाया। फरमाया इन्हें बद्दुआ करो। मैंने दुआ की यारब मुझे इनके बदले इन से बेहतर अता फरमा। और उन्हें मेरी जगह उनके हक़ में बुरा दे।

JANNATI KAUN?

अह्ले बैते नुबुव्वत

हज़राते किराम खुलफ़ाए राशिदीन का ज़िक्र किया गया। जिनकी ज़वाते मुक़द्दसा मुक़र्रबीन बारगाहे रिसालत में सबसे आला मरतबा रखती हैं और हक़ यह है कि हुज़ूरे अनवर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से जिस किसी को भी अदना सी मुहब्बत व निस्बत है उसकी फ़ज़ीलत अंदाज़े और क़्यास से ज़्यादा है। उस आक़ाए नामदार सरकार दौलते मदार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ इतनी निस्बत कि कोई शख़्स उनके मुबारक शहर और शहरे पाक में सुकूनत रखता हो इस दरजे की है। हदीस शरीफ़ में वारिद हुआ :

जिसने अह्ले मदीना को ज़ुल्मन डराया, अल्लाह तआला उस पर ख़ौफ़ डालेगा और उस अल्लाह के मलाइका और सब लोगों की लानत।

(रवाहु क़ाज़ी अबू याला)

JANNATI KAUN?

तिर्मिज़ी की हदीस में हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है।

हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलात ने इरशाद फरमाया जिसने अरबों से दुश्मनी रखी मेरी शफ़ाअत में दाख़िल न होगा और उसको मेरी मुहब्बत मयस्सर न आएगी। इतनी निस्बत एक शख़्स अरब का बाशिन्दा हो उसको मरतबा पर पहुँचा देती है कि उस से ख़्यानत करने वाला हुज़ूर की शफ़ाअत व मुहब्बत से महरूम हो जाता है तो जिन बरगुज़ीदा नुफ़ूस और खुश नसीब हज़रात को इस बारगाहे आली में कुर्ब व नज़्दीकी और इख़्तिसास हासिल है उनके मरातिब कैसे बुलन्द व बाला होंगे उसी से आप अह्ले बैते किराम के फ़ज़ाइल का अंदाज़ा कीजिए इन हज़रात की शान में बहुत आयतें और हदीसें वारिद हुईं।

अल्लाह तआला चाहता है कि तुम से उसे (नापाकी) दूर करे। अह्ले बैते रसूल। और तुम्हें पाक करे, ख़ूब पाक। (पारः 22)

अक्सर मुफ़स्सेरीन की राय है कि यह आयत हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा,

हज़रत सैय्यदतुन्निसा फातिमा ज़ोहरा, हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अज्मईन के हक़ में नाज़िल फरमाई और क़रीना उसका यह है कि **अन्कुम** और उसके बाद की ज़मीरें मुज़क्कर हैं और एक क़ौल यह है कि यह आयत हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़्वाजे मुतह्हरात के हक़ में नाज़िल हुई क्योंकि उसके बाद ही इरशाद हुआ। **वज़्कुरना मा युतला फ़ी बुयूतिकुन्ना।** और यह क़ौल हज़रत इब्ने अब्बास की तरफ़ मन्सूब है इसलिए उनके गुलाम हज़रत इकरमा बाज़ार में इसकी निदा करते थे एक क़ौल यह भी है कि इस से मुराद खुद सरकारे दौलत मदार की ज़ाते आली सिफ़ात है तन्हा। दूसरे मुफ़स्सेरीन का क़ौल है कि यह आयत हुज़ूर की अज़्वाजे मुतह्हरात के हक़ में नाज़िल है अलावा उसके कि उस पर आयत **वज़्कुरना मा युतला फ़ी बुयूतिकुन्ना।** दलालत करती है। यह भी उसकी दलील है कि यह दौलत सराय अक़्दस अज़्वाजे मुतह्हरात ही का मस्कन था। हुज़ूर के अह्ले बैत हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के नसब व क़राबत के वह लोग हैं जिन पर सदक़ा हराम है। एक जमाअत ने इसी पर एतमाद किया और इसी को तरजीह दी और इब्ने कसीर ने भी इसी की ताईद की है।

अहादीस पर नज़र की जाती है तो मुफ़स्सेरीन की दोनों जमाअतों को उन से ताईद पहुँचती है। इमाम अहमद ने हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि यह आयत पंजतन पाक की शान में नाज़िल हुई। पंजतन से मुराद हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अली व हज़रत फातिमा व हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन हैं। (सलवातुल्लाहे तआला अला हबीबेही व अलैहिम व सल्लम)

इस मज़्मून की हदीसे मरफ़ूअ् इब्ने जरीर ने रिवायत की। तबरानी में भी इसकी तख़्रीज की। मुस्लिम की हदीस में है कि हुज़ूरे अनवर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीमात ने उन हज़रात को अपनी गलीमे (चादरे) मुबारक में लेकर यह आयत तिलावत फरमाई। यह भी बसेहत साबित हुआ है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन हज़रात को तहते गलीमे (चादरे) अक़्दस लेकर यह दुआ फरमाई।

तरजमा : यारब यह मेरे अह्ले बैत और मेरे मख़्सूसीन हैं उन से रिज्स व नापाकी दूर फरमा और उन्हें पाक़ कर दे और ख़ूब पाक।

यह दुआ सुन कर उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया। **व अना मिन्हुम** मैं भी उनके साथ हूँ। फरमाया **इन्नका अला ख़ैरिन।** (तुम बेहतरी पर हो) एक रिवायत में यह भी आया है कि हुज़ूर ने हज़रत उम्मुल-मोमिनीन के जवाब में फरमाया। (बेशक) और उनको कुसा (गलीम) में दाख़िल कर लिया एक रिवायत में है कि हज़रत वासिला ने अर्ज़ किया कि मेरे हक़ में भी दुआ हो या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व सल्लम। हुज़ूर ने उनके लिए भी दुआ फरमाई। एक सही रिवायत में है वासेला ने अर्ज़ किया **व अना मिन अहलिका।** मैं भी आपकी अह्ल में से हूँ फरमाया **व अन्ता मिन अह्ली** तुम भी मेरी अह्ल में से हो। यह करम था कि सरकार ने इस नियाज़मन्द ख़ालिसुल-अक़ीदत को मायूस न फरमाया और अपनी अह्ल के हुक्म में दाख़िल फरमाया वह हुक्मन दाख़िल हैं। एक रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर ने उन हज़रात के साथ अपनी बाक़ी साहबज़ादियों और क़राबतदारों और अज़्वाजे मुतह्हरात को मिलाया। सअ्लबी का ख़्याल है कि अह्ले बैत से तमाम बनी हाशिम मुराद हैं इसको इस हदीस से ताईद पहुँचती है जिस में ज़िक्र है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी रिदा मुबारक में हज़रत अब्बास और उनकी साहबज़ादियों को लिपटा कर दुआ फरमाई :

तरजमा : यानी यारब यह मेरे चचा और बमंज़िला वालिद के हैं और यह मेरे अह्ले बैत हैं इन्हें आतिशे दोज़ख़ से ऐसा छुपा जैसा मैंने अपनी चादर मुबारक में छुपाया है।

इस दुआ पर मकान के दर व दीवार ने आमीन कही। खुलासा यह कि दौलत सराय अक़्दस के सुकूनत रखने वाले इस आयत में दाख़िल हैं क्योंकि वही उसके मुख़ातब हैं चूंकि अह्ले बैते नसब का मुराद होना मख़्फ़ी (पोशीदा) था इसलिए आँ सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इस फ़ेअ्ल मुबारक से बयान फरमा दिया कि मुराद अह्ले बैत से आम हैं। चाहे बैते मसकन के अह्ल हों जैसे कि अज़्वाज या बैते नसब के अह्ल बनी हाशिम व मुत्तलिब हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु से एक हदीस रिवायत है। आपने फरमाया मैं उन अह्ले बैत में से हूँ जिन से अल्लाह तआला ने रिज्स को दूर किया और उन्हें ख़ूब पाक किया इस से मालूम होता है कि आयत में बैते नसब भी इसी तरह मुराद है। जिस तरह

बैते मसकन। यह आयते करीमा अह्ले बैते किराम के फ़ज़ाइल का मंबअ् है। इस से उनके एज़ाज़ मासर और उलुव्वे (बुलन्द) शान का इज़्हार होता है। और मालूम होता है कि तमाम अख़्लाक़े दनीया (क़बीहा) व बुरी हालतों से उनकी पाकी फरमाई गई। कुछ अहादीस में रिवायत है कि अह्ले बैत नार पर हराम हैं और यही इस तत्हीर का फाइदा और फल है और जो चीज़ उनके अहवाले शरीफ़ा के लाइक़ न हो उस से उनका परवरदिगार उन्हें महफ़ूज़ रखता और बचाता है। जब ख़िलाफ़ते ताहिरा में शाने मम्लकत व सलतनत पैदा हुई तो क़ुदरत ने आले ताहिर को उस से बचाया और उसके बदले ख़िलाफ़ते बातिना अता फरमाई।

हज़राते सूफ़िया का एक गिरोह यक़ीन करता है कि हर ज़माने में क़ुतुब व औलिया आले रसूल ही में से होंगे। यह इस तत्हीर का समरा है कि सदक़ा उन पर हराम किया गया क्योंकि उसको हदीस शरीफ़ में सदक़ा देने वालों का मैल बताया गया है। मआ ज़ालिका। इसमें लेने वाले की शर्मिंदगी भी है बजाए इसके वह ख़ुम्स व ग़नीमत के हक़्दार बनाए गये जिस में लेने वाला बुलन्द व बाला होता है। इस आले पाक की अज़्मत व करामत यहाँ तक है कि हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं तुम में दो चीज़ें छोड़ता हूँ जब तक तुम उन्हें न छोड़ोगे हरगिज़ गुम्राह न होगे। एक किताबुल्लाह, एक मेरी आल। दैलमी ने एक हदीस रिवायत की कि हुज़ूरे अक़्दस अलैहि व आलेहिस्सलातु वत्तस्लीमात ने इरशाद फरमाया, दुआ रुकी रहती है जब तक कि मुझ पर और मेरे अह्ले बैत पर दरूद न पढ़ा जाए सअ्लबी ने हज़रत इमाम जाफर सादिक़ अलैहिर्रहमा से रिवायत की कि आपने आयत **वअ्तसिमू बेहब्लिल्लाहे जमीआ वला तफ़र्रक़ू।** की तफ़्सीर में फरमाया कि हम **हब्लुल्लाह** हैं। दैलमी से मरफ़ूअन मरवी है हुज़ूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीमात ने इरशाद फरमाया कि मैंने अपनी बेटी का नाम फातिमा इसलिए रखा कि अल्लाह तआला ने उसको और उसके साथ मुहब्बत रखने वालों को दोज़ख़ से रिहाई अता फरमाई।

इमाम अहमद ने रिवायत की कि हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलातु वत्तस्लीमात ने सैय्यदैन करीमैन हसनैन शहीदैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के हाथ पकड़ कर फरमाया। जिस शख़्स ने मुझ से मुहब्बत रखी और इनके वालिद

वालिदा से मुहब्बत रखी वह मेरे साथ जन्नत में होगा। यहाँ मईयत से मुराद कुर्बे हुज़ूर है क्योंकि अंबिया का दरजा तो उन्हीं के साथ ख़ास है कितनी बड़ी खुश नसीबी है। मुहिब्बीने अह्ले बैत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीमात ने उनके जन्नती होने की ख़बर दी और मुज़्द-ए-कुर्ब से मस्रूर फरमाया मगर यह वादा और बशारत मोमिनीन मुख़्लेसीन अह्ले सुन्नत के हक़ में है। रवाफ़िज़ उसके हक़दार नहीं जिन्होंने अस्हाबे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी व बेबाकी और अकाबिरे सहाबा के साथ बुग्ज़ व इनाद अपना दीन बना लिया है। उन लोगों का हुक्म मौला अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहुल-करीम के इस इरशाद से मालूम होता है जो आपने फरमाया : **यहलिकु फ़ीय्या मुहिब्बुन मुफ़्रितुन।** मेरी मुहब्बत में मुफ़्रित हिलाक हो जाएगा। हदीस शरीफ़ में वारिद है।

तरजमा : यानी हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हुहुल-करीम की मुहब्बत और शैख़ैन जलीलैन अबू बकर व उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा की दुश्मनी किस मोमिन के दिल में जमा नहीं हो सकता।

इस हदीस से साफ़ मालूम होता है कि सहाब-ए-किबार रिज़वानुल्लाहे अलैहिम अज्मईन से बुग्ज़ व अदावत रखने वाला हज़रत मौला अली मुर्तज़ा की मुहब्बत के दावा में झूठा है सही हदीस में आया है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बरसरे मिंबर फरमाया। उन क़ौमों का क्या हाल है कि जो यह कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रहम (क़राबत) रोज़े क़्यामत कुछ काम न आएगा। हाँ खुदा की क़सम मेरा रहम (रिश्ता व क़राबत) दुनिया वा आख़िरत में मौसूल है।

क़रतबी ने सैय्यदुल-मुफ़स्सेरीन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से आयते करीमा **वलसौफ़ा युअ्तीका रब्बुका फ़तरज़ा।** की तफ़्सीर में नक़्ल किया है वह फरमाते हैं कि हुज़ूरे अनवर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस बात पर राज़ी हुए कि उनके अह्ले बैत में से कोई जहन्नम में न जायें हाकिम ने एक हदीस रिवायत की। और उसको सही बताया। उसका मज़्मून यह है कि आले सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मुझ से मेरे रब ने मेरे अह्ले बैत के हक़ में फरमाया कि उन में से जो तौहीद व रिसालत का इक़रार करने वाला हुआ उनको अज़ाब न फ़रमाए। तबरानी व दारकुतनी की रिवायत है, हुज़ूर अलैहिस्सलातु

वस्सलाम ने इरशाद फरमाया, अव्वल गिरोह जिसकी मैं शफ़ाअत फरमाऊंगा मेरे अह्ले बैत हैं। फिर मरतबा बमरतबा कुरैश। फिर अंसार। फिर अह्ले यमन में से जो मुझ पर ईमान लाए और मेरे मुत्तबअ् (ताबेदार) हुए। फिर तमाम अरब फिर अजम वाले और जिनकी मैं पहले शफ़ाअत करूंगा वह अफ़्ज़ल हैं। बज़्ज़ार व तबरानी व अबू नुऐम ने रिवायत की कि हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि हज़रत फातिमा पाक दामन हैं पस अल्लाह तआला ने उनको और उनकी ज़ुर्रियत को जहन्नम पर हराम फरमाया। बैहक़ी और अबू शैख़ और दैलमी ने रिवायत किया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कोई बन्दा मोमिने कामिल नहीं होता यहाँ तक कि मैं उसको जान से ज़्यादा प्यारा न हूँ और मेरी औलाद उसको अपनी जान से ज़्यादा प्यारी न हो और मेरे अह्ल उनको अपने अह्ल से ज़्यादा महबूब न हों और मेरी ज़ात उसको अपनी ज़ात से ज़्यादा महबूब न हो।

दैलमी ने रिवायत की हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि अपनी औलाद को तीन आदतें सिखाओ, अपने नबी की मुहब्बत और उनके अह्ले बैत की मुहब्बत और कुरआन पाक की क़िरअत। दैलमी ने रिवायत की कि हुज़ूर ने फरमाया कि जो अल्लाह की मुहब्बत रखता है वह कुरआन की मुहब्बत रखता है और जो कुरआन की मुहब्बत रखता है वह मेरी मुहब्बत रखता है और जो मेरी मुहब्बत रखता है मेरे अस्हाब और क़राबतदारों की मुहब्बत रखता है।

इमाम अहमद ने रिवायत किया कि हुज़ूर ने फरमाया जो शख़्स अह्ले बैत से दुश्मनी रखे वह मुनाफ़िक़ है। इमाम अहमद व तिर्मिज़ी ने हज़रत जाबिर से रिवायत की वह फरमाते हैं कि हम मुनाफ़िक़ीन को हज़रत अली मुर्तज़ा के बुग्ज़ से पहचानते हैं। उन से दुश्मनी रखना निफ़ाक़ की अलामत है इन अहादीस से मालूम हुआ कि अह्ले बैत की मुहब्बत फराइज़े दीन से है। हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया :

तरजमा : ऐ अह्ले बैत पाक तुम्हारी विला है फ़र्ज़ कुरआन पाक उस पर है नातिक़ बिला कलाम।

अबू सईद ने शर्फुन्नुबुव्वह में रिवायत किया, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ फातिमा तुम्हारे ग़ज़ब से ग़ज़बे इलाही होता

है और तुम्हारी रज़ा से अल्लाह राज़ी। इस से मालूम हुआ कि जो कोई उनकी किसी औलाद को ईज़ा पहुँचाए उस ने अपनी जान को इस ख़तर-ए-अज़ीमा में डाल दिया क्योंकि इस हरकत से उनको ग़ज़ब होगा और उनका ग़ज़ब, ग़ज़बे इलाही का सबब है। इस तरह अह्ले बैत की मुहब्बत हज़रत ख़ातूने जन्नत की रज़ा का सबब है। और उनकी रज़ा रज़ाए इलाही।

इसलिए उलमा-ए-किराम ने वज़ाहत फरमाई कि हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शहरे पाक के बाशिन्दों का अदब करना चाहिए और हुज़ूर पाक के जवारे पाक की हुर्मत का लिहाज़ रखना लाज़िम है। चे जाएकि हुज़ूर की ज़ात पाक। दैलमी ने मरफ़ूअन रिवायत की है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फरमाया कि जो मुझ से विसाल की तमन्ना रखता हो और यह चाहता हो कि उसको मेरी बारगाहे करम में रोज़े क़्यामत हक़्क़े शफ़ाअत हो तो चाहिए कि वह मेरे अह्ल की नियाज़मन्दी करे। और उनको खुशनूद रखे। इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत हुज़ैफ़ा से रिवायत की कि हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि यह फ़रिश्ता आज से पहले कभी ज़मीन पर नाज़िल न हुआ था उस ने हज़रत रब्बुल-इज़्ज़त से मुझ पर सलाम करने और यह बशारत पहुँचाने की इजाज़त चाही कि हज़रत ख़ातूने जन्नत फातिमा जुहरा जन्नती बीवियों की सरदार हैं और हसनैन करीमैन जन्नती जवानों के। तिर्मिज़ी व इब्ने माजा हब्बान व हाकिम ने रिवायत किया है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया जो इन अह्ले बैत से मुहारबा (जंग) करे मैं उसका मुहारिब हूँ और जो उन से सुलह करे उसकी मुझ से सुलह है। इमाम अहमद व हाकिम ने रिवायत किया हुज़ूर अलैहि व अला आलेहि-स्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फरमाया। फातिमा मेरा हिस्सा हैं जो उन्हें नागवार वह मुझे नागवार जो उन्हें पसन्दीदा मुझ पसन्द, रोज़े क़्यामत सिवाए मेरे नसब और मेरे सबब और मेरी खुवेशा वन्दी के तमाम नसब मुन्क़तअ़ हो जाएंगे।

इन अहादीस के अलावा जिस क़द्र अहादीस कुरैश के हक़ में वारिद हैं और जो फ़ज़ाइल उन में मज़्कूर हैं उन सबसे अह्ले बैत की फ़ज़ीलत साबित होती है क्योंकि अह्ले बैत सब के सब कुरैश हैं। और जो फ़ज़ीलत

कि आम के लिए साबित हो, ख़ास के लिए साबित होती है। चन्द हदीसें जो कुरैश के हक़ में वारिद हुई हैं। यहाँ बयान की जाती हैं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मरतबा खुत्ब-ए-जुमा में इरशाद फरमाया ऐ लोगो! कुरैश को बढ़ाओ और उन से आगे न बढ़ो। ऐसा न किया तो हलाक हो जाओगे उनकी पैरवी न छोड़ो वरना गुम्राह हो जाओगे, उनके उस्ताज़ बनो, उन से इल्म हासिल करो, वह तुम से आज़म हैं अगर उनके तफ़ाखुर (फख़्) का ख़्याल न होता तो मैं उन्हें उन मरातिब से ख़बरदार करता जो बारगाहे इलाही में उन्हें हासिल हैं।

बुख़ारी ने हज़रत मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि यह अम्र कुरैश में है उन से जो दुश्मनी करेगा उसको अल्लाह तआला मुँह के बल जहन्नम में डालेगा। एक हदीस में आया है कुरैश से मुहब्बत करो, उन से जो मुहब्बत करता है अल्लाह तआला उससे मुहब्बत रखता है इमाम अहमद व ज़हबी वग़ैरह मुहद्देसीन ने हज़रत उम्मुल-मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत की कि जिब्रीले अमीन ने फरमाया कि मैंने ज़मीन के मशारिक़ व मग़ारिब उलट डाले कोई शख़्स हुज़ूर पुर नूर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अफ़्ज़ल न पाया और मैंने ज़मीन के मशारिक़ व मग़ारिब उलट डाले बनी हाशिम से बढ़ कर किसी बाप की औलाद अफ़्ज़ल न पाई। किसी शाइर ने इस मज़्मून को अपनी जुबान में इस तरह अदा किया है।

जिब्रील से इक रोज़ यूं कहने लगे शाहे उमम
तुम ने देखा है जहाँ बतलाओ तो कैसे हैं हम
की अर्ज़ यह जिब्रील ने ऐ महजबीं तेरी क़सम
आफ़ाक़हा गर्दीदह अम सियरे जहाँ दुर्ज़ीदा अम
बिस्यािर ख़ूबां दीदा अम लेकिन तू चीज़े दीगरी

इमाम अहमद व तिर्मिज़ी व हाकिम ने हज़रत सअद से रिवायत की कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स कुरैश की बेइज़्ज़ती चाहेगा, अल्लाह उसे रुस्वा करेगा अबू बकर बज़्ज़ार ने ग़ीलानियात में अबू अय्यूब अंसारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया रोज़े क़्यामत

बतने (मर्कज़े) अर्श से एक आवाज़ करने वाला आवाज़ करेगा कि एक अह्ले जमा अपने सर झुकाओ, आंखें बन्द करो, यहाँ तक कि हज़रत फातिमा बिन्ते सैय्यदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिरात से गुज़रें। फिर आप सत्तर हज़ार बांदियों के साथ जो सब हूरें होंगी बिजली के कोंदने की तरह गुज़र जाएंगी। बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया कि हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया ऐ फातिमा क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि तुम मोमिना बीवियों की सरदार हो तिर्मिज़ी व हाकिम की रिवायत में है हुज़ूर अलैहि व आलेहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया, मुझे अपनी अह्ल में सबसे ज़्यादा प्यारी फातिमा हैं।"

JANNATI KAUN?

सैय्यदैन जलीलैन शहीदैन अज़ीमैन
हज़राते हसनैन करीमैन
रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा

हज़रत इमाम अबू मुहम्मद हसन बिन अली-ए-मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु। आप अइम्मा इस्ना अशरह में इमामे दोम हैं। आपकी कुन्नियत अबू मुहम्मद लक़ब तक़ी व सैयद उर्फ़ सिब्ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। और सिब्ते अक्बर है। आपको रैहानतुर्रसूल और आख़िरुल-ख़ुलफ़ा बिन्नस भी कहते हैं आपकी विलादते मुबारका 15 रमज़ानुल-मुबारक 3 हिजरी की रात में मदीना-ए-तैयबा के मक़ाम पर हुई। हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपका नाम हसन रखा और सातवें रोज़ आपका अक़ीक़ा किया। और बाल जुदा किए गये। और हुक्म दिया गया कि बालों के वज़न की चाँदी सदक़ा की जाए आप ख़ामिसे अह्ले कुसा हैं।

बुख़ारी की रिवायत में है क़िब्ला-ए-हुस्न व जमाल सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व बारिक व सल्लम से किसी को वह मुशाबेहत सूरते हाल न थी जो सैय्यदना हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु को हासिल थी। आप से पहले हसन किसी का नाम न रखा गया था यह जन्नती नाम पहले आप ही को अता हुआ है। हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस ने बारगाहे रिसालत में हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की विलादत का मुज़्दा पहुँचाया। हुज़ूर तशरीफ़ फरमा हुए फरमाया कि अस्मा मेरे फरज़न्द को लाओ। अस्मा ने एक कपड़े में हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर किया। सैय्यदे आलम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीमात ने दाहिने कान में अज़ान और बाएं में तक्बीर फरमाई और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु से दरयाफ़्त फरमाया, तुम ने इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द का क्या नाम रखा है, अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह मेरी क्या मजाल कि बेइज़्न व इजाज़त नाम रखने पर पहल करता लेकिन अब जो दरयाफ़्त फरमाया जाता है तो जो कुछ ख़्याल में आता है वह यह है कि हर्ब नाम रखा जाए। आइन्दा हुज़ूर मुख़्तार हैं। आपने उनका नाम हसन रखा।

एक रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर ने इंतिज़ार फरमाया। यहाँ तक कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा को आपकी बारगाह में वह कुर्ब हासिल है जो हज़रत हारून को दर्गाहे हज़रत मूसा में था। मुनासिब है कि इस फ़रज़न्दे सआदतमन्द का नाम फ़रज़न्दे हारून के नाम पर रखा जाए। हुज़ूर ने उनका नाम दरयाफ़्त फरमाया। अर्ज़ किया शब्बीर। इरशाद हुआ कि ऐ जिब्रील लुग़ते अरब में उसके क्या मानी हैं, अर्ज़ किया हसन, और आप का नाम हसन रखा गया।

बुख़ारी व मुस्लिम ने हज़रत बरा इब्ने आज़िब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की फरमाते हैं, मैंने नूरे मुजस्सम जाने मुसव्विर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़्यारत की। शहज़ादा-ए-बुलन्द इक़बाल हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु आपके दोशे अक़्दस पर थे और हुज़ूर फरमा रहे थे। यारब मैं इसको महबूब रखता हूँ तो तू भी महबूब रख। इमाम बुख़ारी ने हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की, फरमाते हैं कि हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिंबर पर जलवा अफ़रोज़ थे। हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु आपके पहलू में थे। हुज़ूर एक मरतबा लोगों की तरफ़ नज़र फरमाते और एक मरतबा उस फ़रज़न्दे जमील की तरफ़। मैंने सुना हुज़ूर ने इरशाद फरमाया कि यह मेरा फरज़न्दे रशीद है और अल्लाह तआला इसकी बदौलत मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह करेगा।

बुख़ारी में हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया हसन हुसैन दुनिया में मेरे दो फूल हैं।

तिर्मिज़ी की हदीस में है, हुज़ूर अलैहि व अला आलेही व अस्हाबेहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया, हसन और हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं।

इब्ने सअद ने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से रिवायत की कि हुज़ूर के अह्ले बैत में हुज़ूर के साथ सबसे ज़्यादा मुशाबेह और हुज़ूर को सबसे प्यारे हज़रत इमाम हसन थे मैंने देखा हुज़ूर तो सज्दे में होते और यह वाला शान साहबज़ादे आपकी गर्दन मुबारक या पुश्ते अक़्दस पर बैठ जाते तो जब तक यह उतर न जाते आप सरे मुबारक न उठाते और मैंने देखा हुज़ूर रुकूअ़

में होते तो उनके लिए अपने क़दमे ताहिरैन को इतना कुशादा फरमा देते कि यह निकल जाते।

हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मनाक़िब बहुत ज़्यादा हैं। आप इल्म व वक़ार हश्मत व जाह जूद व करम, जुह्द व ताअत में बहुत बुलन्द पाया हैं एक-एक आदमी को एक-एक लाख का अतीया मरहमत फरमा देते थे।

हाकिम ने अब्दुल्लाह बिन उबैद उमैर से रिवायत किया कि हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने पच्चीस हज पा प्यादा (पैदल) किए हैं और शाही सवारियाँ आपके हम्राह होती थीं मगर इमाम आली मक़ाम की तवाज़ु और इख़्लास व अदब का इक़्तिज़ा कि आप हज के लिए पैदल ही सफर फरमाते आपका कलाम बहुत शीरीं था। अह्ले मज्लिस नहीं चाहते थे कि आप गुफ़्तगू ख़त्म फरमाएँ।

इब्ने सअद ने अली बिन ज़ैद जदआन से रिवायत की कि हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने दोबार अपना सारा माल राहे ख़ुदा में दे डाला और तीन मरतबा आधा माल दिया और ऐसी सहीह तन्सीफ़ की कि नअ़्लैन शरीफ़ और जुराबों में से एक-एक देते थे और एक-एक रख लेते थे।

आपके हिल्म का यह हाल था कि इब्ने असाकिर ने रिवायत किया कि आपकी वफ़ात के बाद मरवान बहुत रोया। इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि आज तू रो रहा है और उनकी हयात में उनके साथ किस-किस तरह की बदसुलूकियाँ किया करता था। तो वह पहाड़ की तरफ़ इशारा करके कहने लगा मैं उस से ज़्यादा हलीम के साथ ऐसा करता था। अल्लाह रे हिल्म, मरवान को भी एतराफ़ है कि आपकी बुर्दबारी पहाड़ से भी ज़्यादा है।

हज़रत इमाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त : हज़रत मौला अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हुहुल-करीम की शहादत के बाद हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मस्नदे ख़िलाफ़त पर जलवा अफ़्रोज़ हुए। अह्ले कूफ़ा ने आपके दस्ते हक़ पर बैअ़त की। और आपने वहाँ चन्द माह तक मौज़ क़्याम फरमाया इसके बाद आपने अम्रे ख़िलाफ़त को हज़रत अमीर मुआविया को तफ़्वीज़ करना मस्तूर ज़ेले शराइत पर मन्ज़ूर फरमाया :

(1) बाद अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त हज़रत इमाम हसन को पहुँचेगी।

(2) अह्ले मदीना और अह्ले हिजाज़ और अह्ले इराक़ में किसी शख़्स से भी ज़मान-ए-हज़रत अमीरुल-मोमिनीन मौला अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हुहुल-करीम के मुतअल्लिक़ कोई मुवाख़ज़ा व मुतालबा न किया जाए।

(3) अमीर मुआविया, इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के दुयून (कर्ज़ों) को अदा करें।

हज़रत अमीर मुआविया ने यह तमाम शराइत कुबूल कीं और आपस में सुलह हो गई और हुज़ूरे अनवर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह मोजिज़ा ज़ाहिर हुआ। जो हुज़ूर ने फरमाया था कि अल्लाह तआला मेरे इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द की बदौलत मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह फरमाएगा।

हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने तख़्ते सल्तनत हज़रत मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु के लिए ख़ाली कर दिया।

यह वाक़या रबीउल-अव्वल 41 हिजरी का है। हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के अस्हाब को आपका ख़िलाफ़त से दस्तबरदार होना नागवार हुआ और उन्होंने तरह-तरह की तन्क़ीदें कीं और इशारों किनायों में आप पर नाराज़गी का इज़्हार किया। आपने उन्हें समझा दिया कि मुझे गवारा न हुआ कि मुल्क के लिए तुम्हें क़त्ल कराऊं। इसके बाद इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा से रहलत फरमाई और मदीना-ए-तैय्यबा में तशरीफ़ फरमा हुए।

हज़रत अमीर मुआविया की तरफ़ से हज़रत इमाम आली मक़ाम का वज़ीफ़ा एक लाख सालाना मुक़र्रर था। एक साल वज़ीफ़ा पहुँचने में ताख़ीर हुई और इस वजह से हज़रत इमाम को सख़्त तंगी दर पेश हुई। आपने चाहा कि अमीर मुआविया को उसकी शिकायत लिखें, लिखने का इरादा किया। दवात मंगाई मगर फिर कुछ सोच कर तवक़्क़ुफ़ किया। ख़्वाब में हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीदारे पुर अनवार से मुशर्रफ़ हुए। हुज़ूर ने इस्तिफ़्सारे हाल फरमाया और इरशाद फरमाया कि ऐ मेरे फ़रज़न्दे अरजुमन्द क्या हाल है। अर्ज़ किया अल्हम्दुलिल्लाह बख़ैर हूँ और वज़ीफ़े की ताख़ीर की शिकायत की। हुज़ूर ने फरमाया तुम ने दवात मंगाई

थी। ताकि तुम अपनी मिस्ल एक मख़्लूक़ के पास अपनी तक्लीफ़ की शिकायत लिखो। अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मज्बूर था क्या करता। फरमाया यह दुआ पढ़ो।

तरजमा : या रब मेरे दिल में अपनी उम्मीद डाल और अपने मासिवा से मेरी उम्मीद कतअ् कर यहाँ तक कि मैं तेरे सिवा किसी से उम्मीद न रखूं। यारब जिस से मेरी कुव्वत आजिज़ और अमल क़ासिर हो और जहाँ तक मेरी रग़बत और मेरा सवाल न पहुँचे और मेरी ज़ुबान पर जारी न हो, जो तू ने अव्वलीन व आख़िरीन में से किसी को अता फरमाया हो यक़ीन से या रब्बल-आलमीन मुझ को उसके साथ मख़्सूस फरमा।

हज़रत इमाम फरमाते हैं कि इस दुआ पर एक हफ़्ता न गुज़रा कि अमीर मुआविया ने मेरे पास एक लाख पचास हज़ार भेज दिए और मैंने अल्लाह तआला की हम्द व सना की और उसका शुक्र बजा लाया। फिर ख़्वाब में दौलते दीदार से बहरमन्द हुआ। सरकारे नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ हसन क्या हाल है। मैंने ख़ुदा का शुक्र करके वाक़या अर्ज़ किया। फरमाया ऐ फ़रज़न्द जो मख़्लूक़ से उम्मीद न रखे और ख़ालिक़ से लौ लगाए उसके काम यूं ही बनते हैं।

हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत : इब्ने सअद ने इमरान इब्ने अब्दुल्लाह से रिवायत की किसी ने हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को ख़्वाब में देखा कि आपके दोनों चश्म (आँखों) के दर्मियान **कुल हुवल्लाहु अहद।** लिखी हुई है। आपके अह्ले बैत में उस से बहुत ख़ुशी हुई। लेकिन जब यह ख़्वाब हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ि अल्लाहु अन्हु के सामने बयान किया गया तो उन्होंने फरमाया कि वाक़ई अगर यह ख़्वाब देखा है तो हज़रत इमाम की उम्र के चन्द ही रोज़ रह गये हैं। यह ताबीर सही साबित हुई और बहुत क़रीब ज़माने में आपको ज़हर दिया गया। ज़हर के असर से इस्हाल कबदी लाहिक़ हुआ और आंतों के टुकड़े कट-कट कर इस्हाल में ख़ारिज हुए। इस सिलसिला में आपको चालीस रोज़ सख़्त तक्लीफ़ रही। क़रीबे वफ़ात जब आपकी ख़िदमत में आपके बरादरे अज़ीज़ सैय्यदना हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हाज़िर हो कर दरयाफ़्त फरमाया कि आपको किस ने ज़हर दिया है तो फरमाया कि तुम उसे क़त्ल करोगे। हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु

तआला अन्हु ने जवाब दिया कि बेशक हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फरमाया कि मेरा गुमान जिस की तरफ़ है अगर दरहक़ीक़त वही क़ातिल है तो अल्लाह तआला मुन्तक़िमे हक़ीक़ी है और उसकी गिरिफ़्त बहुत सख़्त है और अगर वह नहीं है तो मैं नहीं चाहता कि मेरे सबब से कोई बेगुनाह मुब्तलाए मुसीबत हो। मुझे इस से पहले भी कई मरतबा ज़हर दिया गया है लेकिन इस मरतबा का ज़हर सबसे ज़्यादा तेज़ है।

सुब्हानल्लाह हज़रत इमाम की करामत और मंज़िलत कैसी बुलन्द व बाला है कि अपने आप सख़्त तक्लीफ़ में मुब्तला हैं, आंतें कट-कट कर निकल रही हैं। नज़अ् की हालत है मगर इंसाफ़ का बादशाह उस वक़्त भी अपनी अदालत व इंसाफ़ का न मिटने वाला नक़्श सफ़ः तारीख़ पर नक़्श फरमाता है। उसकी एहतियात इजाज़त नहीं देती कि जिस की तरफ़ गुमान है उसका नाम भी लिया जाए। उस वक़्त आपकी उमर शरीफ़ पैंतालीस साल छेः माह चन्द रोज़ की थी कि आपने पाँचवें रबीउल-अव्वल 49 हिजरी को इस दारे नापाइदार से मदीना-ए-तैय्यबा में रहलत फरमाई।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

वफ़ात के क़रीब हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने देखा कि उनके बरादरे मोहतरम हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को घबराहट और बेक़रारी ज़्यादा है पेशानी-ए-मुबारक पर हुज़्न व मलाल के आसार नमूदार हैं। यह देख कर हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने तस्कीने ख़ातिर मुबारक के लिए अर्ज़ किया कि ऐ बरादरे गिरामी आप क्यों रंजीदा हैं। बेक़रारी का क्या सबब है? मुबारक हो आपको अन्क़रीब हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बारयाबी हासिल होगी।

और हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा और हज़रत ख़दीजतुल-कुबरा फ़ातिमा ज़ुहरा और हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम का दीदार नसीब होगा हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि ऐ बरादरे अज़ीज़ मैं कुछ ऐसे अम्र में दाख़िल होने वाला हूँ जिसकी मिस्ल मैंने कभी नहीं देखी। और उसके साथ ही आपने हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के पेश आने वाले वाक़ेआत और कूफ़ियों की बद-सुलूकी व ईज़ा रसानी का भी तज़्किरा किया।

इस इरशादे मुबारक से मालूम होता है कि उस वक़्त आपकी नज़र के सामने करबला का हौलनाक मंज़र और हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की तन्हाई का नक़्शा पेश था। और कूफ़ियों के मज़ालिम की तस्वीरें आपको ग़मगीन कर रही थीं। इसके साथ आपने यह भी फरमाया कि मैंने उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा से दर्ख़्वास्त की थी कि मुझे रौज़-ए-ताहिरा में दफन की जगह इनायत हो जाए उन्होंने उसको मन्ज़ूर फरमाया। मेरी वफ़ात के बाद उनकी ख़िदमत में अर्ज़ किया जाए लेकिन मैं गुमान करता हूँ कि क़ौम माने (रोकेगी) होगी। अगर वह ऐसा करें तो तुम उन से तक्रार न करना।

हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की वफ़ात के बाद हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने वसीयत के मुताबिक़ हज़रत उम्मुल-मोमिनीन आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से दर्ख़्वास्त की, आपने उसको क़ुबूल फरमाया और इरशाद फरमाया कि बड़ी इज़्ज़त व करामत के साथ मन्ज़ूर है। लेकिन मरवान रोकने लगा और नौबत यहाँ तक पहुँची कि हज़रत इमाम हुसैन और उनके हम्राही हथियार बन्द हो गये।

JANNATI KAUN?

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें भाई की वसीयत याद दिला कर वापस किया और यह फ़रज़न्दे रसूल जिगर गोश-ए-बतूल बक़ीअ़ शरीफ़ में अपनी वालिदा-ए-मोहतरमा हज़रत ख़ातूने जन्नत के पहलू में मदफ़ून हुए। रज़ि अल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्हु।

मुअर्रेख़ीन ने ज़हर खुरानी की निस्बत जअ़्दा बिन्ते अशअस इब्ने क़ैस की तरफ़ की है और उसको हज़रत इमाम की बीवी बताया है और यह भी कहा है कि यह ज़हर खुरानी बइग़वाए यज़ीद हुई है और यज़ीद ने उस से निकाह का वादा किया था। इस तमअ़् (लालच) में आकर उस ने हज़रत इमाम को ज़हर दिया लेकिन इस रिवायत की कोई सनद सही दस्तियाब नहीं हुई और बग़ैर किसी सनद सही के किसी मुसलमान पर क़त्ल का इल्ज़ाम और ऐसे अज़ीमुश्शान क़त्ल का इल्ज़ाम किस तरह जाइज़ हो सकता है। क़तअ़् नज़र इस बात के कि रिवायत के लिए कोई सनद नहीं है और मुअर्रेख़ीन ने बग़ैर किसी मोतबर ज़रिए या मोतमद हवाला के लिख दिया है।

यह ख़बर वाक़ेआत के लिहाज़ से भी नाक़ाबिले इत्मीनान मालूम होती

है। वाके़आत की तहक़ीक़ खुद वाके़आत के ज़माने में जैसी हो सकती है मुश्किल है कि बाद को वैसी तहक़ीक़ हो ख़ास कर जब कि वाक़या इतना अहम हो मगर हैरत है कि अह्ले बैते अत्हार के इस इमामे जलील का क़त्ल उसको क़ातिल की ख़बर ग़ैर को तो क्या होती। खुद हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को पता नहीं है। यही तारीख़ें बताती हैं कि वह अपने बरादरे मुअ़ज़्ज़म से ज़हर देने वाले का नाम दरयाफ़्त फरमाते हैं इस से साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को ज़हर देने वाले का इल्म न था।

अब रही यह बात कि हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु किसी का नाम लेते। उन्होंने ऐसा नहीं किया तो अब जअ्दा को क़ातिल होने के लिए मुऐयन करने वाला कौन है। हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को या इमामैन के साहबज़ादों में से किसी साहब को अपनी आख़िरे हयात तक जअ्दा की ज़हर खुरानी का कोई सुबूत न पहुँचा न उन में से किसी ने उस पर शरई मुवाख़ज़ा किया।

एक और पहलू इस वाक़या का ख़ास तौर पर क़ाबिले लिहाज़ है वह यह कि हज़रत इमाम की बीवी को ग़ैर के साथ साज़बाज़ करने की बुरी तोहमत के साथ मुत्तहम किया जाता है। यह एक बदतरीन तबर्रा है। अजीब नहीं कि इस हिकायत की बुनियाद ख़ार्जियों की इफ़्तराअत हों जबकि सही और मोतबर ज़राए से यह मालूम है कि हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कसीरुत्तज़व्वुज (ज़्यादा शादी करने वाले) थे और आप ने सौ के क़रीब निकाह किए और तलाक़ें दीं।

अक्सर एक दो रात ही के बाद तलाक़ दे देते थे और हज़रत अमीरुल-मोमिनीन अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहुल-करीम बार-बार एलान फरमाते थे कि इमाम हसन की आदत है यह तलाक़ दे दिया करते हैं कोई अपनी लड़की उनके साथ न ब्याहे।

मगर मुसलमान बीवियाँ और उनके वालिदैन यह तमन्ना करते थे कि कनीज़ होने का ़ ार्फ़ हासिल हो जाए उसी का असर था कि हज़रत इमाम हसन जिन औरतों को तलाक़ दे दिया करते थे वह अपनी बाक़ी ज़िन्दगी हज़रत इमाम की मुहब्बतमें शैदायाना गुज़ार देतीं और उनकी हयात का लम्हा-लम्हा हज़रत इमाम की याद और मुहब्बत में गुज़रता था। ऐसी हालत

में यह बात बहुत बईद है कि इमाम की बीवी हज़रत इमाम के फै , सौहबत की क़द्र न करे और यज़ीद प्लीद की तरफ एक बुरे लालच से इमामे जलील के क़त्ल जैसे सख़्त जुर्म का इर्तिकाब करे। वल्लाहु आलम बेहक़ीक़तल-हाल।

JANNATI KAUN?

क़यामत नुमा हादसा, ज़मीने करबला का ख़ूनी मंज़र

सैय्यदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन

रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु

और उनके साथियों की बे-मिसाल जांबाज़ियाँ

विलादते मुबारका : सैय्यदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की विलादत 5 शअ़बान 4 हिजरी को मदीना मुनव्वरह में हुई। हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपका नाम हुसैन और शब्बीर रखा और आपकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और लक़ब सिब्ते रसूलुल्लाह और रैहानतुर्रसूल है और आपके बरादरे मुअ़ज़म की तरह आपको भी जन्नती जवानों का सरदार और अपना फ़रज़न्द बनाया। हुज़ूरे अक़्दस नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को आपके साथ कमाले राफ़्त व मुहब्बत थी। हदीस शरीफ़ में इरशाद हुआ :

तरजमा : जिस ने इन दोनों (हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन) से मुहब्बत की उस ने मुझ से मुहब्बत की और जिसने उन से अदावत की उस ने मुझ से अदावत की। (रवाहु इब्ने अब्बास)

जन्नती जवानों का सरदार फरमाने से मुराद यह है कि जो लोग राहे खुदा में अपनी जवानी में राहि-ए-जन्नत हुए, हज़रत इमामैन करीमैन उनके सरदार हैं और जवान किसी शख़्स को बलिहाज़ उसके नौ उम्री के भी कहा जाता है और बलिहाज़ शफ़क़ते बुज़ुर्गाना के भी कि आदमी की उम्र कितनी भी हो उसके बुज़ुर्ग उसको जवान बल्कि लड़का तक कहते हैं। शैख़ और बूढ़ा नहीं कहते हैं। इसी तरह बमानी फ़ुतूत व जवांमर्दी भी लफ़्ज़े जवान का इस्तेमाल होता है ख़्वाह कोई शख़्स बूढ़ा हो मगर हिम्मते मर्दाना रखता हो। वह अपनी शुजाअत व बसालत के लिहाज़ से जवान कहलाया जाता है। हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की उमर शरीफ़ अगरचे वक़्ते विसाल पचास से ज़ाइद थी मगर शुजाअत व जवांमर्दी के लिहाज़ से नीज़ शफ़क़ते पिद्री के चाहने से आपको जवान फरमाया गया। और यह मानी भी हो सकते हैं कि अंबियाए किराम व खुलफ़ाए राशिदीन के सिवा

इमामैन जलीलैन तमाम अह्ले जन्नत के सरदार हैं क्योंकि जवानाने जन्नत से तमाम अह्ले जन्नत मुराद हैं इसलिए कि जन्नत में बूढ़े जवान का फर्क न होगा। वहाँ सब ही जवान होंगे और सब की एक उम्र होगी। हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन दोनों फ़रज़न्दों को अपना फूल फरमाया। **हुमा रैहानी मिनदुनिया।** वह दुनिया में मेरे दो फूल हैं। (रवाहुत्तिर्मिज़ी) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन दोनों नौनिहालों को फूल की तरह सूंघते और सीना से लिपटाते। (रवाहुत्तिर्मिज़ी)

हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चची उम्मुल-फज़ल बिन्तुल-हारिस हज़रत अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की बीवी एक रोज़ हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के हुज़ूर में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आज मैंने एक परेशान ख़्वाब देखा। हुज़ूर ने दरयाफ़्त किया अर्ज़ किया वह बहुत ही शदीद है। उनको इस ख़्वाब के बयान की हिम्मत न होती थी। हुज़ूर ने मुकर्रर (दोबारा) दरयाफ़्त फरमाया तो अर्ज़ किया कि मैंने देखा कि जिस्मे मुबारक का एक टुक्ड़ा काटा गया और मेरी गोद में रखा गया। इरशाद फरमाया तुम ने बहुत अच्छा ख़्वाब देखा। इन्शाअल्लाह तआला फातिमा ज़ुहरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा के बेटा होगा और वह तुम्हारी गोद में दिया जाएगा।

ऐसा ही हुआ। हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु पैदा हुए और हज़रत उम्मुल-फ़ज़ल की गोद में दिए गये। उम्मुल-फ़ज़ल फरमाती हैं कि मैंने एक रोज़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को आपकी गोद में दिया। क्या देखती हूँ कि चश्मे मुबारक से आंसुओं की लड़ियां जारी हैं। मैंने अर्ज़ किया, या नबी अल्लाह मेरे माँ-बाप हुज़ूर पर कुरबान यह क्या हाल है फरमाया जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए और उन्होंने यह ख़बर फरमाई कि मेरी उम्मत मेरे इस फ़रज़न्द को क़त्ल करेगी। मैंने कहा क्या इसको? फरमाया हाँ। और मेरे पास उसके मक़्तल की सुर्ख़ मिट्टी भी लाए। (रवाहुल-बैहक़ी फिद्दलाइल)

शहादत की शोहरत : हज़रत इमाम आली मक़ाम की विलादत के साथ ही आप की शहादत की ख़बर मशहूर हो चुकी थी। शीर ख़्वार्गी

(दूध पीने) के दिनों में हुज़ूरे अक़्दस नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मुल-फ़ज़ल को आपकी शहादत की ख़बर दी। ख़ातूने जन्नत ने अपने इस नौनिहाल को ज़मीने करबला में ख़ून बहाने के लिए अपना ख़ूने जिगर (दूध) पिलाया। अली-ए-मुर्तज़ा ने अपने दिल बन्द जिगर पैवन्द को ख़ाके करबला में लौटने और दम तोड़ने के लिए सीने से लगा कर पाला। मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयाबान में सूखा हलक़ कटवाने और राहे खुदा में मर्दाना वार जान नज़्र करने के लिए इमाम हुसैन को अपनी आग़ोशे रहमत में तर्बियत फरमाया। यह आग़ोशे करामत व रहमत फ़िरदौसी चमनिस्तानों और जन्नती एवानों से कहीं ज़्यादा बाला मर्तबत है। उसके रुत्बा क़ी क्या निहायत, और जो उस गोद में परवरिश पाए उसकी इ़ज़्ज़त का क्या अंदाज़ा। उस वक़्त का तसव्वुर दिल लरज़ा देता है जबकि उस फ़रज़न्दे अरजुमन्द की विलादत की मसर्रत के साथ शहादत की ख़बर पहुँची होगी सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चश्म-ए-रहमत ने अश्कों के मोती बरसा दिए होंगे।

इस ख़बर ने सहाब-ए-किबार जाँ निसाराने अह्ले बैत के दिल हिला दिए। इस दर्द की लज़्ज़त अली-ए-मुर्तज़ा के दिल से पूछिए। सिद्क़ व सफ़ा की इम्तिहानगाह में सुन्नते ख़लील अदा कर रहे हैं।

हज़रत ख़ातूने जन्नत की ख़ाके ज़ेर क़दमे पाक पर कुरबान जिसके दिल का टुक्ड़ा नाज़नीन, लाडला सीने से लगा हुआ है। मुहब्बत की निगाहों से इस नूर के पुतले को देखती हैं वह अपने सुरूर आफ़रीं तबस्सुम से दिलरुबाई करता है। हुमक हुमक कर मुहब्बत के समुन्द्र में तलातुम पैदा करता है। माँ की गोद में खेल कर शफ़्क़ते मादरी के जोश को और ज़्यादा मोजिज़न करता है। मीठी-मीठी निगाहों और प्यारी-प्यारी बातों से दिल लुभाता है ऐन ऐसी हालत में करबला का नक़्शा आपके पेशे नज़र होता है जहाँ यह चहेता नाज़ों का पाला, भूखा प्यासा, बयाबान में बेरहमी के साथ शहीद हो रहा है। न अली-ए-मुर्तज़ा साथ हैं न हसने मुज्तबा। अज़ीज़ व अक़ारिब बरादर व फ़रज़न्द कुरबान हो चुके हैं। तन्हा यह नाज़नीन हैं तीरों की बारिश से नूरी जिस्म लूहलहान हो रहा है। ख़ेमे वालों की बेकसी अपनी आंखों से देखता है और राहे ख़ुदा में मर्दाना वार जां निसार करता है। करबला की ज़मीन मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फूल से रंगीन

होती है। वह शमीमे पाक जो हबीबे खुदा को प्यारी थी कूफ़ा के जंगल को मुश्कबार करती है। खातूने जन्नत की नज़र के सामने यह नक़्शा फिर रहा है। और फ़रज़न्द सीने से लिपट रहा है। हज़रत हाजरा इस मंज़र को देखें।

देखना तो यह है कि इस फरज़न्दे अरजुमन्द के जद्दे करीम हबीबे खुदा हैं। हज़रत हक़ तबारक व तआला उनको रज़ा चाहने वाला है। **वलसौफ़ा युअ़तीका रब्बुका फ़तरज़ा।** खुशकी व तरी में उनका हुक्म नाफ़िज़ है। शजर व हजर सलाम अर्ज़ करते हैं और मुतीअ़ फ़रमान हैं। चाँद इशारों पर चला करता है। डूबा हुआ सूरज पलट आता है। बद्र में फ़रिश्ते लश्करी बन कर हाज़िरे खिदमत होते हैं। कौनैन के ज़र्रा-ज़र्रा पर बहुक्मे इलाही हुकूमत है। अव्वलीन व आखिरीन सबकी हाजत रवाई इशार-ए-चश्म पर मौकूफ़ व मुन्हसिर है। उनके गुलामों के सदके में खलक़ के काम बनते हैं। मददें होती हैं। रोज़ी मिलती है।

हल तुन्सरूना व तुरज़कूना इल्ला बेजुअफ़ाइकुम। (रवाहुल-बुख़ारी)

बावजूद इसके उस फ़रज़न्दे अरजुमन्द की खबरे शहादत पाकर चश्मे मुबारक से अश्क तो जारी हो जाते हैं मगर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ के लिए हाथ नहीं उठाते। बारगाहे इलाही में इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के अमन व सलामत और इस हादस-ए-हाइला से महफ़ूज़ रहने और दुश्मनों के बरबाद होने की दुआ नहीं फरमाते। न अली मुर्तज़ा अर्ज़ करते हैं कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस ख़बर ने तो दिल व जिगर पारा-पारा कर दिए। आपके कुरबान! बारगाहे हक़ में अपने इस फ़रज़न्द के लिए दुआ फरमाइए। न ख़ातूने जन्नत इल्तिजा करती हैं कि ऐ सुल्ताने दारैन आपके फ़ैज़ से आलम फ़ैज़याब है और आपकी दुआ मुस्तजाब। मेरे इस लाडले के लिए दुआ फरमा दीजिए। न अह्ले बैत न अज़्वाजे मुतह्हरात न सहाब-ए-किराम। सब ख़बरं शहादत सुनते हैं। शौहर-ए-आम हो जाता है मगर बारगाहे रिसालत में किसी तरफ़ से दुआ की दर्ख़्वास्त पेश नहीं होती।

बात यह है कि मक़ामे इम्तिहान में साबित क़दमी दरकार है। यह मुक़ाम उज़्र व तअम्मुल का नहीं। ऐसे मौक़े पर जान से बचना जांबाज़ मर्दों का काम नहीं, इख़्लास से जांनिसारी ऐन तमन्ना है। दुआएं की गईं मगर

यह कि फ़रज़न्द मक़ाम सफ़ा व वफ़ा में सादिक़ साबित हो। तौफ़ीके इलाही मददगार रहे। मुसीबतों का हुजूम और तक्लीफ़ों का अंबार उसके क़दम को पीछे न हटा सके।

अहादीस में इस शहादत की बहुत ख़बरें वारिद हैं। इब्ने सअद व तबरानी ने हज़रत उम्मुल-मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत की कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मुझे जिब्रील ने ख़बर दी कि मेरे बाद मेरा फ़रज़न्द हुसैन ज़मीने तुफ़ में क़त्ल किया जाएगा और जिब्रील मेरे पास यह मिट्टी लाए। उन्होंने अर्ज़ किया कि यह (हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की) ख़्वाबगाह (मक़्तल) की ख़ाक है। तुफ़ क़रीबे कूफ़ा उस मक़ाम का नाम है जिसको करबला कहते हैं।

इमाम अहमद ने रिवायत की कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी दौलत सराय अक़्दस में वह फ़रिश्ता आया जो उस से पहले कभी हाज़िर न हुआ था उस ने अर्ज़ किया कि आपके फ़रज़न्द हुसैन (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु) क़त्ल किए जाएंगे। और अगर आप चाहें तो मैं आपको उस ज़मीन की मिट्टी मुलाहिज़ा कराऊं, जहाँ वह शहीद होंगे। फिर उस ने थोड़ी सुर्ख़ मिट्टी पेश की।

इस क़िस्म की हदीसें बकसरत वारिद हैं। किसी में बारिश के फ़रिश्ता के ख़बर देने का तज़्किरा है। किसी में उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा को ख़ाके करबला अता करने और उस ख़ाक के ख़ून हो जाने को अलामते शहादते इमाम क़रार देने का ज़िक्र है जिस से मालूम होता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस शहादत की बार-बार इत्तिला दी गई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी बारहा इसका तज़्किरा फरमाया और यह शहादत हज़रत इमाम के ज़मान-ए-बचपन से ख़ूब मशहूर हो चुकी और सबको मालूम हो गया कि आप का मुशहद (मक़्तल) करबला है।

हाकिम ने इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि हम को कोई शक बाक़ी न रहा और अह्ले बैत बइत्तिफ़ाक़ जानते थे कि इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु करबला में शहीद होंगे।

अबू नुऐम ने यह्या हज़रमी से रिवायत की कि वह सफ़रे सफ़्फ़ैन में हज़रत मौला अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहू के हमराह थे। जब

नैनवा के क़रीब पहुँचे जहाँ हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का मज़ारे अक़्दस है तो हज़रत अली-ए-मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहू ने निदा दी कि ऐ अबू अब्दुल्लाह फ़ुरात के किनारे ठहरो। मैंने अर्ज़ किया कि किस लिए फ़रमाया। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिब्रील ने मुझे ख़बर दी है कि इमाम हुसैन फ़ुरात के किनारे शहीद किए जाएंगे और मुझे वहाँ की एक मुश्त मिट्टी दिखाई।

अबू नुऐम ने अस्बग़ में नबाता से रिवायत की कि हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हुहू के हम्राह हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की क़ब्र के मक़ाम पर पहुँचे। हज़रत मौला ने बयान फ़रमाया। यहाँ उन शुहदा के ऊंट बंधेंगे, यहाँ उनके कजावे रखे जाएंगे। यहाँ उनके ख़ून बहेंगे। जवानाने आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस मैदान में शहीद होंगे। आसमान व ज़मीन उन पर रोयेंगे।

इन ख़बरों से मालूम होता है। कि अली-ए-मुर्तज़ा और सहाब-ए-किबार ज़मीने करबला के चप्पे-चप्पे को पहचानते थे। उन्हें मालूम था कि कहाँ ऊंट बांधे जाएंगे, कहाँ सामान रखा जाएगा। कहाँ ख़ून बहेंगे। यह शहादत का कमाल है ऐसा एलाने आम हो, अपने पराए सब जान जाएं, मक़ाम बता दिया गया हो। वहाँ की ख़ाक शीशियों में रख ली गई हो। उसके ख़ून हो जाने का इंतिज़ार और शौक़े शहादत में कमी न आए। जज़्ब-ए-जांनिसारी रोज़ अफ़्ज़ूं होता रहे। तमाम चाहने वाले पहले से बाख़बर हों। हर दिल इस ज़ख़्म का मज़ा ले और सब्र व इस्तिक़्लाल के साथ जान अता करने वाले की राह में जान कुरबान की जाए। यह मरदाने कामिल और फ़रज़न्दाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हिस्सा और उन्हीं का हौसला है –

पहाड़ भी होता तो वहशत से घबरा उठता और ज़िन्दगी का एक-एक लम्हा काटना मुश्किल हो जाता। मगर तालिबे रज़ाए हक़ मौला की मर्ज़ी पर फ़िदा होता है। इसी में उसके दिल का चैन और उसकी हक़ीक़ी तसल्ली है कभी वहशत व परेशानी उसके पास नहीं फटकती। कभी इस मुसीबते उज़मा (बड़ी परेशानी) से छुटकारे और रिहाई के लिए वह दुआ नहीं करता। इंतिज़ार की (घड़ियाँ) शौक़ के साथ गुज़ारता है। और वक़्ते मौऊद का बेचैनी के साथ मुंतज़िर रहता है।

❖❖❖

शहादत के वाक़ेआत

यज़ीद का मुख़्तसर तज़्किरा : यज़ीद बिन मुआविया अबू ख़ालिद उमवी वह बद-नसीब शख़्स है जिसकी पेशानी पर अह्ले बैते किराम के बेगुनाह क़त्ल का सियाह दाग़ है जिस पर हर ज़माने में दुनियाए इस्लाम मलामत करती रही है। और क़्यामत तक उस का नाम ज़िल्लत के साथ लिया जाएगा।

यह बद-बातिन सियाह दिल, नंगे खानदान 25 हिजरी में अमीर मुआविया के घर मैसून बिन्ते संज़िल कल्बीया के पेट से पैदा हुआ। निहायत मोटा, बदनुमा, कसीरुश्शेअर, बद-खुल्क़, तुन्द ख़ू फ़ासिक़, फाजिर, शराबी, बदकार, ज़ालिम, बेअदब, गुस्ताख़ था। उसकी शरारतें और बेहूदगियाँ ऐसी हैं ज़िन से बदमाशों को भी शर्म आए! अब्दुल्लाह बिन हन्ज़लतुल-गुसैल ने फरमाया, खुदा की क़सम हम ने यज़ीद पर उस वक़्त खुरूज किया जब हमें अन्देशा हो गया कि उसकी बदकारियों के सबब आसमान से पत्थर न बरसने लगें। (वाक़ेदी)

मुहरमात के साथ निकाह और सूद वग़ैरह मन्हीयात को इस बेदीन ने एलानिया रिवाज दिया। मदीना-ए-तैयबा व मक्का मुकर्रमा की बेहुर्मती कराई। ऐसे शख़्स की हुकूमत गर्ग (भेड़िये) की चौपानी से ज़्यादा ख़तरनाक थी। अरबाबे फरासत और अस्हाबे असरार उस वक़्त से डरते थे। जबकि सलतनत की बाग उस ज़ालिम के हाथ में आई। 59 हिजरी में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु ने दुआ की।

यारब मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ 60 हिजरी के आग़ाज़ और लड़कों की हुकूमत से इस दुआ से मालूम होता है कि हज़रत अबू हुरैह हामिले असरार थे उन्हें मालूम था कि 60 हिजरी का आग़ाज़ लड़कों की हुकूमत और फ़ित्नों का वक़्त है। उनकी यह दुआ कुबूल हुई और उन्होंने 59 हिजरी में बमक़ाम मदीना-ए-तैयबा रहलत फरमाई।

रूयानी ने अपनी मुसनद में हज़रत अबू दरदा सहाबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से एक हदीस रिवायत की है जिसका मज़्मून यह है कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना कि हुज़ूर

ने फरमाया कि मेरी सुन्नत का पहला बदलने वाला बनी उमैया का एक शख़्स होगा जिसका नाम यज़ीद होगा।

अबू यअ़्ला ने अपनी मुसनद में हज़रत अबू उबैदा से रिवायत की कि हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में अद्ल व इंसाफ क़ाइम रहेगा यहाँ तक कि पहला रख़ना अन्दोज़ (फितना डालने वाला) बानी-ए-सितम बनी उमैया का एक शख़्स होगा जिसका नाम यज़ीद होगा यह हदीस ज़ईफ है।

JANNATI KAUN?

अमीर मुआविया

रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की
वफ़ात और यज़ीद की सल्तनत

अमीर मुआविया ने रजब 60 हिजरी में बमक़ाम दमिश्क़ लक़्वा में मुब्तला हो कर वफ़ात पाई। आपके पास हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के तबर्रुकात में से इज़ार शरीफ़, रिदाए अक़्दस, (चादर शरीफ़) क़मीस मुबारक, मूए शरीफ़, और तरशहाए नाखुने हुमायूं थे। आपने वसीयत की थी कि मुझे हुज़ूर की इज़ार शरीफ़ व रिदाए मुबारक व क़मीसे अक़्दस में कफन दिया जाए। और मेरे इन आज़ा (हिस्सों) पर जिन से सज्दा किया जाता है हुज़ूर अलैहिस्सलात के मूए मुबारक और तराश-ए-नाखुने अक़्दस रख दिए जाएं और मुझे अरहमुर्राहेमीन के रहम पर छोड़ दिया जाए।

कोर बातिन यज़ीद ने देखा था कि उसके बाप अमीर मुआविया ने हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के तबर्रुकात और बदने अक़्दस से छू जाने वाले कपड़ों को जान से ज़्यादा अज़ीज़ रखा था और दमे आख़िर तमाम ज़र व माल सरवत व हुकूमत सबसे ज़्यादा वही चीज़ प्यारी थी और उसी को साथ ले जाने की तमन्ना हज़रत अमीर के दिल में थी। उसकी बरकत से उन्हें उम्मीद थी कि इस मल्बूसे पाक में बूए महबूब है। यह मक़ामे गुर्बत में प्यारा रफ़ीक़ और बेहतरीन मूनिस होगा और अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिबास और तबर्रुकात के सदक़े में मुझ पर रहम फरमाएगा। इस से वह समझ सकता था कि जब हुज़ूर के बदन पाक से छू जाना एक कपड़े को ऐसा बाबरकत बना देता है तो हसनैन करीमैन और आले पाक जो बदने अक़्दस का हिस्सा हैं उनका क्या मरतबा होगा। और उनका क्या एहतराम लाज़िम है। मगर बदनसीबी और शक़ावत का क्या इलाज।

अमीर मुआविया की वफ़ात के बाद यज़ीद तख़्ते सल्तनत पर बैठा और

उस ने अपनी बैअ़त लेने के लिए अतराफ़ व ममालिके सलतनत में खत रवाना किए। मदीना-ए-तैयबा का आमिल जब यज़ीद की बैअ़त लेने के लिए हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने उसके फ़िस्क़ व ज़ुल्म की बिना पर उसको नाअह्ल क़रार दिया और बैअ़त से इंकार फरमाया। इसी तरह हज़रत ज़ुबैर ने भी।

हज़रत इमाम जानते थे कि बैअ़त का इंकार यज़ीद के भड़कने का बाइस होगा। और नाबकार जान का दुश्मन और ख़ून का प्यासा हो जाएगा। लेकिन इमाम के दयानत व तक़्वे ने इजाज़त न दी कि अपनी जान की ख़ातिर नाअह्ल के हाथ पर बैअ़त कर लें और मुसलमानों की तबाही और शरीअत व अहकाम की बेहुर्मती और दीन के नुक़्सान की परवाह न करें और यह इमाम जैसे जलीलुश्शान फ़रज़न्दे रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) से किस तरह मुम्किन था। अगर इमाम उस वक़्त यज़ीद की बैअ़त कर लेते तो यज़ीद आपकी बहुत क़द्र व मंज़िलत करता। और आपकी आफ़ियत व राहत में कोई फ़र्क़ न आता। बल्कि बहुत सी दौलते दुनिया आपके पास जमा हो जाती। लेकिन इस्लाम का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता और दीन में ऐसा फ़साद बरपा हो जाता। जिसका दूर करना बाद को नामुम्किन होता। यज़ीद की हर बदकारी के जवाज़ के लिए इमाम की बैअ़त सनद होती। और शरीअ़ते इस्लामिया व मिल्लते हन्फ़ीया का नक़्शा मिट जाता। शीओं को भी आंखें खोल कर देख लेना चाहिए कि इमाम ने अपनी जान को ख़तरे में डाल दिया तक़ीय्ये का तसव्वुर भी ख़ातिरे मुबारक पर न गुज़रा। अगर तक़ीय्या जाइज़ होता तो उसके लिए उस से ज़्यादा ज़रूरत का और कौन वक़्त हो सकता था। हज़रत इमाम व इब्ने ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने बैअ़त की दर्ख़्वास्त इसी लिए पहले की गई थी कि तमाम अह्ले मदीना उनका इत्तिबा करेंगे। अगर उन हज़रात ने बैअ़त कर ली तो फिर किसी को खटका न होगा लेकिन इन हज़रात के इंकार से वह मन्सूबा खाक में मिल गया और यज़ीदियों में उसी वक़्त से आतिशे इनाद भड़क उठी और बज़रूरत उन हज़रात को उसी रात मदीना से मक्का मुकर्रमा मुन्तक़िल होना पड़ा। यह वाक़या चौथी शाबान 60 हिजरी का है।

❖❖❖

❖

हज़रत इमाम की मदीना तैय्यबा से रहलत

मदीना से हज़रत इमाम की रहलत का दिन अह्ले मदीना और खुद हज़रत इमाम के लिए कैसे रंज व अन्दोह का दिन था। दुनिया के कोने--कोने से तो मुसलमान वतन तर्क करके अइज़्ज़ा व अहबाब को छोड़ कर मदीना तैयबा हाज़िर होने की तमन्ना करें। दरबारे रिसालत की हाज़िरी का शौक़ दुश्वार गुज़ार मंज़िलें और खुश्की व तरी का तवील और ख़ौफ़नाक सफर इख़्तियार करने के लिए बेक़रार बना दे। एक-एक लम्हे की जुदाई उन्हें शाक़ हो और फ़रज़न्दे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जवारे रसूल से रिहलत करने पर मज्बूर हो। इस वक़्त का तसव्वुर दिल को पाश-पाश कर देता है। जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बइराद-ए-रुख़्सत आशयान-ए-कुदसीया पर हाज़िर हुए होंगे और दीद-ए-ख़ूंबार ने अश्के ग़म की बारिश की होगी। दिल दर्द मन्द ग़मे महजूरी से घायल होगा। जद्दे करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के रौज़-ए-ताहिरा से जुदाई का सदमा हज़रत इमाम के दिल पर रंज व ग़म के पहाड़ तोड़ रहा होगा अह्ले मदीना की मुसीबत भी क्या अंदाज़ा हो सकता है। दीदारे हबीब के फ़िदाई इस फ़रज़न्द की रूयत (दीदार) से अपने क़ल्बे मज्रूह को तस्कीन देते थे। उनका दीदार उनके दिल का क़रार था। आह! आज यह क़रार दिल मदीना तैय्यबा से रुख़्सत हो रहा है। इमाम आली मक़ाम ने मदीना तैय्यबा से ब हज़ार ग़म व अन्दोह बादिले नेशाद रहलत फरमा कर मक्का मुकर्रमा इक़ामत फरमाई।

इमाम की जनाब में कूफ़ियों की दर्ख़्वास्तें : यज़ीदियों की कोशिशों से अह्ले शाम से जहाँ यज़ीद की तख़्तगाह थी यज़ीद की राय मिल सकी और वहाँ के बाशिन्दों ने उसकी बैअ़त की। अह्ले कूफ़ा अमीर मुआविया के ज़माना ही में हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में दर्ख़्वास्तें भेज रहे थे। तशरीफ़ लाने की इल्तिजाएं कर रहे थे लेकिन इमाम ने साफ़ इंकार कर दिया था। अमीर मुआविया की वफ़ात पर और यज़ीद की तख़्तनशीनी के बाद अह्ले इराक़ की जमाअतों ने मुत्तफ़िक़ हो कर इमाम की ख़िदमत में दर्ख़्वास्तें भेजीं और उन में अपनी नियाज़

मन्दी व जज़्बाते अक़ीदत व इख़्लास का इज़्हार किया और हज़रते इमाम पर अपने जान व माल फ़िदा करने की तमन्ना ज़ाहिर की।

इस तरह के इल्तिजा नामों और दर्ख़्वास्तों का सिलसिला बंध गया और तमाम जमाअतों और फ़िर्क़ों की तरफ़ से डेढ़ सौ के क़रीब अर्ज़ियाँ हज़रत इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में पहुँचीं। कहाँ तक इग्माज़ (नज़र अंदाज़) किया जाता और कब तक हज़रत इमाम के अख़्लाक़ ख़ुशक जवाब की इजाज़त देते। नाचार आपने अपने चचाज़ाद भाई हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील की रवानगी तज्वीज़ (तय) फरमाई।

अगरचे इमाम की शहादत की ख़बर मश्हूर थी और कूफ़ियों की बेवफ़ाई का पहले भी तजरबा हो चुका था। मगर जब यज़ीद बादशाह बन गया और उसकी हुकूमत व सल्तनत दीन के लिए ख़तरा थी और उसकी वजह से उसकी बैअ़त नाजाइज़ थी और वह तरह-तरह की तदबीरों और हीलों से चाहता था कि लोग उसकी बैअ़त करें। इन हालात में कूफ़ियों का बपासे मिल्लत यज़ीद के बैअ़त से दस्तकशी (किनारा) करना और हज़रत इमाम से तालिबे बैअ़त होना इमाम पर लाज़िम करता था कि उनकी दर्ख़्वास्त कुबूल फरमाएं जब एक क़ौम ज़ालिम व फासिक़ की बैअ़त पर राज़ी न हो और साहिबे इस्तिहक़ाक़े अह्ल से दर्ख़्वास्ते बैअ़त करे। इस पर अगर वह उनकी इस्तिदआ (गुज़ारिश) कुबूल न करे तो उसके मानी यह होते हैं कि वह इस क़ौम को उस जाबिर ही के हवाले करना चाहता है। इमाम अगर उस वक़्त कूफ़ियों की दर्ख़्वास्त कुबूल न फरमाते तो बारगाहे इलाही में कूफ़ियों के इस मुतालबे का इमाम के पास क्या जवाब होता कि हम हर चन्द दरपै हुए मगर इमाम बैअ़त के लिए राज़ी न हुए इसी वजह से हमको यज़ीद के ज़ुल्म व तशद्दुद से मज्बूर हो कर उसकी बैअ़त करना पड़ी। अगर इमाम हाथ बढ़ाते तो हम उन पर जानें फ़िदा करने के लिए हाज़िर थे। यह मस्अला ऐसा दर पेश आया जिसका हल सिवाय इसके और कुछ न था कि हज़रत इमाम उनकी दावत पर लब्बैक फरमाएं।

अगरचे अकाबिर सहाब-ए-किराम हज़रत इब्ने अब्बास व हज़रत इब्ने उमर व हज़रत जाबिर व हज़रत अबू सईद व हज़रत अबू वाक़िद लैसी वग़ैरेहिम हज़रत इमाम की इस राय से मुत्तफ़िक़ न थे और उन्हें कूफ़ियों के अह्द व मवासीक़ का एतबार न था। इमाम की मुहब्बत और शहादत इमाम की शोहरत उन सबके दिलों में इख़्तिलाज पैदा कर रही थी। गो कि

यह यक़ीन करने की भी कोई वजह न थी कि शहादत का यही वक़्त है और इसी सफ़र में यह मरहला दरपेश होगा लेकिन अन्देशा माने था। हज़रत इमाम के सामने मस्अले की यह सूरत दरपेश थी। कि इस इस्तिदआ को रोकने के लिए उज़्रे शरई किया है। इधर ऐसे जलीलुल-क़द्र सहाबा के शदीद इसरार का लिहाज़, इधर अह्ले कूफ़ा की इस्तिदआ रद न फरमाने के लिए कोई शरई उज़्र न होना। हज़रत इमाम के लिए निहायत पेचीदा मस्अला था जिसका हल बजुज़ इस के कुछ नज़र न आया कि पहले हज़रत इमाम मुस्लिम को भेजा जाए। अगर कूफ़ियों ने बद-अह्दी व बेवफ़ाई की तो उज़्रे शरई मिल जाएगा। और अगर वह अपने अह्द पर क़ाइम रहे तो सहाबा को तसल्ली दी जा सकेगी।

JANNATI KAUN?

कूफ़ा को हज़रत मुस्लिम की रवानगी

इस बिना पर आपने हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील को कूफ़ा रवाना फरमाया और अह्ले कूफ़ा को तहरीर फरमाया कि तुम्हारी इस्तिदआ (गुज़ारिश) पर हम हज़रत मुस्लिम को रवाना करते हैं उनकी मदद व हिमायत तुम पर लाज़िम है। हज़रत मुस्लिम के दो फ़रज़न्द मुहम्मद और इब्राहीम जो अपने बाप के बहुत प्यारे बेटे थे इस सफ़र में अपने पिद्रे मुश्फ़िक़ के हम्राह हुए। हज़रत मुस्लिम ने कूफ़ा पहुँच कर मुख़्तार बिन उबैद के मकान पर क़्याम फरमाया आपकी तश्रीफ़ आवरी की ख़बर सुन कर जूक़ दर जूक़ मख़्लूक़ आपकी ज़्यारत को आई और बारह हज़ार से ज़्यादा तादाद ने आपके दस्ते मुबारक पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की बैअ़त की।

हज़रत मुस्लिम ने इराक़ की गिरवीदगी व अक़ीदत देख कर हज़रत इमाम की जनाब में खत लिखा जिसमें यहाँ के हालात की इत्तिला दी और इल्तिमास (दर्ख़्वास्त) किया कि ज़रूरत है कि हज़रत जल्द तशरीफ़ लाएं ताकि बन्दगाने खुदा नापाक के शर से महफ़ूज़ रहें और दीने हक़ की ताईद हो। मुसलमान इमामे हक़ की बैअ़त से मुशर्रफ़ व फ़ैज़याब हो सकें। अह्ले कूफ़ा का यह जोश देख कर हज़रत नौमान बिन बशीर सहाबी ने जो उस ज़माने में हुकूमते शाम की जानिब से कूफ़ा के वाली (गवर्नर) थे। अह्ले कूफ़ा को मुत्तला किया कि यह बैअ़त यज़ीद की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ है और वह उस पर बहुत भड़केगा लेकिन इत्तिला देकर ज़ाब्ते की कार्रवाई पूरी करके हज़रत नौमान बिन बशीर ख़ामोश हो बैठे और इस मुआमले में किसी क़िस्म की दस्त अंदाज़ी न की।

मुस्लिम यज़ीद हज़रमी और अम्मारह बिन वलीद बिन उक़्बा ने यज़ीद को इत्तिला दी कि हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील तशरीफ़ लाए हैं और अह्ले कूफ़ा में उनकी मुहब्बत व अक़ीदत का जोश दम बदम बढ़ रहा है। हज़ारहा आदमी उनके हाथ पर इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की बैअ़त कर चुके हैं और नौमान बिन बशीर ने अब तक कोई कार्रवाई उनके

ख़िलाफ़ नहीं की। न इंसिदादी तदाबीर अमल में लाए। यज़ीद ने यह इत्तिला पाते ही नौमान बिन बशीर को मअ्ज़ूल (हटाया) किया और अब्दुल्लाह बिन ज़्याद जो बहुत मक्कार व अय्यार था। वह बसरा से रवाना हुआ और उस ने अपनी फौज को क़ादसीया में छोड़ा और खुद हिजाज़ियों का लिबास पहन कर ऊंट पर सवार हुआ और चन्द आदमी हम्राह लेकर रात की तारीकी में मग़्रिब व इशा के दर्मियान उस राह से कूफ़ा में दाख़िल हुआ जिस से हिजाज़ी क़ाफ़िले आया करते थे। इस मक्कारी से उसका मतलब यह था कि इस वक़्त अह्ले कूफ़ा में बहुत जोश है। ऐसे तौर पर दाख़िल होना चाहिए कि वह इब्ने ज़्याद को न पहचानें। और यह समझें कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु तशरीफ़ ले आए ताकि वह बेख़तर और अन्देशा अमन व आफ़ियत के साथ कूफ़ा में दाख़िल हो जाए। चुनांचे ऐसा ही हुआ। अह्ले कूफ़ा जिनको हर लम्हा हज़रत इमाम आली मक़ाम की तशरीफ़ आवरी का इंतिज़ार था। उन्होंने धोखा खाया और रात की तारीकी में हिजाज़ी लिबास और हिजाज़ी राह से आता देख कर समझे कि हज़रत इमाम तशरीफ़ ले आए। नअ्रहाए मुसर्रत बुलन्द किए। गर्द व पेश मरहबा कहते चले। **मरहबा बिका या इब्ना रसूलिल्लाहे** और **क़दिम्ता ख़ैरा मक़्दमिन।** का शोर मचाया। यह मरदूद दिल में तो जलता रहा और उस ने अंदाज़ा कर लिया कि कूफ़ियों को हज़रत इमाम की तशरीफ़ आवरी का इंतिज़ार है। और उनके दिल उनकी की तरफ़ माइल हैं मगर इस वक़्त की मस्लेहत से ख़ामोश रहा ताकि उन पर उसका मकर न खुल जाए। यहाँ तक कि दारुल-इमारत (गवर्नमेंट हाउस) में दाख़िल हो गया। उस वक़्त कूफ़ी यह समझे कि हज़रत न थे बल्कि इब्ने ज़्याद इस फ़रेबाकारी के साथ आया। और उन्हें हसरत व मायूसी हुई। रात गुज़ार कर सुबह को इब्ने ज़्याद ने अह्ले कूफ़ा को जमा किया और हुकूमत का परवाना पढ़ कर उन्हें सुनाया और यज़ीद की मुख़ालफ़त से डराया धमकाया। तरह-तरह के हीलों से हज़रत मुस्लिम की जमाअत को मुन्तशिर कर दिया। हज़रत मुस्लिम ने हानी बिन उरवा के मकान में इक़ामत फरमाई। इब्ने ज़्याद ने मुहम्मद बिन अश्अश को एक दस्ता फौज के साथ हानी के मकान पर भेज कर इसको गिरफ़्तार कर मंगाया और क़ैद कर लिया। कूफ़ा के तमाम रूउसा व अमाइद को भी क़िले में नज़र बन्द कर दिया।

हज़रत मुस्लिम यह ख़बर पा कर बरामद हुए। और आपने अपने मुतवस्सेलीन को निदा की। जूक़ दर जूक़ आदमी आने शुरू हो गये और चालीस हज़ार की जम्ईयत (भीड़) ने आपके साथ क़स्रे शाही (गवर्नर हाउस) का घेर लिया। सूरत बन आई थी हमला करने की देर थी। अगर हज़रत मुस्लिम हमला करने का हुक्म दे देते तो उसी वक़्त क़िला फ़तह पाता और इब्ने ज़्याद और उसके हम्राही हज़रत मुस्लिम के हाथ में गिरफ़्तार होते और यही लश्कर सैलाब की तरह उमंड कर शामियों को ताख़्त व ताराज कर डालता और यज़ीद को जान बचाने के लिए कोई राह न मिलती। नक़्शा तो यही जमा था। मगर कार बदस्ते कारकुनाने क़द्र अस्त, बन्दों का सोचा क्या होता है। हज़रत मुस्लिम ने क़िला का एहाता तो कर लिया। और बावजूद यह कि कूफ़ियों की बद-अह्दी और इब्ने ज़्याद की फ़रेबकारी और यज़ीद की अदावत पूरे तौर पर साबित हो चुकी थी। फिर भी आपने अपने लश्कर को हमले का हुक्म न दिया। और एक बादशाह दाद गस्तर के नाइब की हैसियत से आपने इंतिज़ार फरमाया कि पहले गुफ़्तगू से क़तअ़् हुज्जत कर लिया जाए और सुलह की सूरत पैदा हो सके तो मुसलमानों में ख़ूंरेज़ी न होने दी जाए। आप अपने इस पाक इरादा से इंतिज़ार में रहे और अपनी एहतियात को हाथ से न दिया। दुश्मन ने इस मौक़े से फाइदा उठाया और कूफ़ा के रुउसा व अमाइदीन जिन्को इब्ने ज़्याद ने पहले से क़िले में बन्द कर रखा था। उन्हें मज्बूर किया कि वह अपने रिश्तेदारों और ज़ेर असर लोगों को मज्बूर करके हज़रत मुस्लिम की जमाअत से अलग कर दें।

यह लोग इब्ने ज़्याद के हाथ में क़ैद थे और जानते थे कि अगर इब्ने ज़्याद को शिकस्त भी हुई तो वह क़िला फ़तह होने तक उनका ख़ात्मा कर देगा। इस ख़ौफ़ से वह घबरा उठे और उन्होंने दीवारे क़िला पर चढ़ कर अपने मुतअल्लेक़ीन व मुतवस्सेलीन से गुफ़्तगू की और उन्हें हज़रत मुस्लिम की रिफ़ाक़त छोड़ देने पर इंतिहा दरजा का ज़ोर दिया और बताया कि अलावा इस बात के कि हुकूमत तुम्हारी दश्मन हो जाएगी यज़ीद नापाक तीनत तुम्हारे बच्चे-बच्चे को क़त्ल कर डालेगा। तुम्हारे माल लुटवा देगा। तुम्हारी जागीरें और मकान ज़ब्त हो जाएंगे। यह और मुसीबत है कि अगर तुम इमाम मुस्लिम के साथ रहे तो हम जो इब्ने ज़्याद के हाथ में क़ैद हैं क़िले के अन्दर मारे जाएंगे अपने अंजाम पर नज़र डालो। हमारे हाल पर

रहम करो। अपने घरों को चले जाओ। यह हीला कामयाब हुआ और हज़रत मुस्लिम का लश्कर मुंतशिर होने लगा। यहाँ तक कि तावक़्ते शाम हज़रत मुस्लिम ने मस्जिदे कूफ़ा में जिस वक़्त मग़रिब की नमाज़ शुरू की तो आपके साथ पाँच सौ आदमी थे और जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आपके साथ एक भी न था। तमन्नाओं के इज़्हार और इल्तिजाओं के तूमार से जिस अज़ीज़ मेहमान को बुलाया था उसके साथ यह वफ़ा है कि वह तन्हा हैं और उनकी रिफ़ाक़त के लिए कोई एक भी मौजूद नहीं। कूफ़ा वालों ने हज़रत मुस्लिम को छोड़ने से पहले ग़ैरत व हमीयत से क़तअ़ तअल्लुक़ किया। और उन्हें ज़रा परवाह न हुई कि क़यामत तक तमाम दुनिया में उनकी बेहिम्मती का शौहरा रहेगा। और इस बुज़्दिलाना बेमुरव्वती और नामर्दी से वह रुस्वाए आलम होंगे। हज़रत मुस्लिम इस ग़ुर्बत व मुसाफिरत में तन्हा रह गये। किधर जाएं। कहाँ क़्याम करें। हैरत है कूफ़ा के तमाम मेहमान ख़ानों के दरवाज़े बन्द थे। जहाँ से ऐसे मोहतरम मेहमानों को मदऊ करने खत व रसाइल का तांता बांध दिया गया था। नादान बच्चे साथ हैं। कहाँ उन्हें लिटाएं कहाँ सुलाएं। कूफ़ा के वसीअ़ ख़ित्ता में दो चार गज़ ज़मीन हज़रत मुस्लिम के रात गुज़ारने के लिए नज़र नहीं आती। उस वक़्त इमाम मुस्लिम को इमाम हुसैन की याद आती है और दिल तड़पा देती है। वह सोचते हैं कि मैंने इमाम की जनाब में ख़त लिखा, तशरीफ़ आवरी की इल्तिजा की है। और इस बद-अहद क़ौम के इख़्लास व अक़ीदत का एक दिल्कश नक़्शा इमाम आली मक़ाम के हुज़ूर पेश किया है और तशरीफ़ आवरी पर ज़ोर दिया है। यक़ीनन हज़रत इमाम मेरी इल्तिजा रद न फरमाएंगे और यहाँ के हालात से मुत्मइन हो कर मआ़ अह्ल व अयाल चल पड़ेंगे। यहाँ उन्हें क्या मसाइब पहुँचेंगे और चमने ज़ोहरा के जन्नती फूलों को इस बेमुहरी की तपिश कैसे तक्लीफ़ पहुँचाएगी। यह ग़म अलग दिल को घायल कर रहा था। और अपनी तहरीर पर शर्मिंदगी व इंफ़िआल और हज़रत इमाम के लिए ख़तरात अलग बेचैन कर रहे थे। और मौजूदा परेशानी जुदा दामनगीर थी।

इस हालत में हज़रत मुस्लिम को प्यास मालूम हुई। एक घर सामने नज़र पड़ा जहाँ तौआ़ नामी एक औरत मौजूद थी उस से पानी मांगा। उस ने पहचान कर पानी दिया। और अपनी सआदत समझ कर आपको अपने मकान में ठहराया। उस औरत का बेटा मुहम्मद इब्ने अश्अश का गुरगा था।

उसने फ़ौरन ही उसको ख़बर दी। और उसने इब्ने ज़्याद को उस .१ मुत्तला किया। उबैदुल्लाह बिन ज्याद ने उमर बिन हरीस (कोतवाल कूफ़ा) और मुहम्मद बिन अश्अश को :जा उन दोनों ने एक जमाअत साथ लेकर तौआ के घर को घेर लिया और चाहा कि हज़रत मुस्लिम को गिरफ़्तार कर लें। हज़रत मुस्लिम अपनी तलवार लेकर निकले और बनाचारी आपने उन ज़ालिमों से मुक़ाबला शुरू किया। उन्होंने देखा कि हज़रत मुस्लिम इस जमाअत पर इस तरह टूट पड़े जैसे शेरे बबर गुल-ए-गोसपन्द पर हमला आवर हो। आपके शेराना हम्लों से दिल आवरों ने दिल छोड़ दिए और बहुत आदमी ज़ख़्मी हो गये। कुछ मारे गये। मालूम हुआ कि बनी हाशिम के उस एक ज़वान से नामरदाने कूफ़ा की यह जमाअत नबर्दआज़मा नहीं हो सकती। अब यह तज्वीज़ कि कोई चाल चलनी चाहिए और किसी फ़रेब से हज़रत मुस्लिम पर क़ाबू पाने की कोशिश की जाए। यह सोच कर अमन व सुलह का ऐलान कर दिया। और हज़रत मुस्लिम से अर्ज़ किया कि हमारे आपके दर्मियान जंग की ज़रूरत नहीं है न हम आप से लड़ना चाहते हैं। मुद्दआ सिर्फ़ इस क़द्र है कि आप इब्ने ज़्याद के पास तशरीफ़ ले चलें और उस से गुफ़्तगू करके मुआमला तय कर लें। हज़रत मुस्लिम ने फरमाया कि मेरा खुद इराद-ए-जंग नहीं और जिस वक़्त मेरे साथ चालीस हज़ार का लश्कर था उस वक़्त भी मैंने जंग नहीं की और मैं इंतिज़ार करता रहा कि इब्ने ज़्याद गुफ़्तगू करके कोई शक्ल मुसालेहत पैदा करे तो ख़ूंरेज़ी न हो।

चुनांचे यह लोग हज़रत मुस्लिम को मआ़ उनके दानों साहबज़ादों के उबैदुल्लाह इब्ने ज़्याद के पास लेकर रवाना हुए। इस बदबख़्त ने पहले ही से दरवाज़े के दोनों पहलुओं में अन्दर की जानिब तेग़ज़न छुपा कर खड़े कर दिए थे और उन्हें हुक्म दिया था कि हज़रत मुस्लिम दरवाज़े में दाख़िल हों। एक दम दोनों तरफ़ से उन पर वार किया जाए। हज़रत मुस्लिम को उसकी क्या ख़बर थी और आप इस मक्कारी और क्यावी से क्या वाक़िफ़ थे। आप आयते करीमा **रब्बनफ़्तह बैनना व बैना क़ौमिना बिल-हक़्क़े।** अल-आयह पढ़ते हुए दरवाज़े में दाख़िल हुए। दाख़िल होना था कि अश्क़िया (ज़ालिमों) ने दोनों तरफ़ से तल्वारों के वार किए और बनी हाशिम का मज़्लूम मुसाफिर दुश्मनाने दीन की बेरहमी से शहीद हुआ। **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

दोनों साहबज़ादे आपके साथ थे। उन्होंने इस बेकसी की हालत में अपने शफ़ीक़ वालिद का सर उनके मुबारक तन से जुदा होते देखा। छोटे-छोटे बच्चों के दिल ग़म से फट गये और इस सदमे में वह बेद की तरह लरज़ने और काँपने लगे। एक भाई दूसरे भाई को देखता था और उनकी सुरमगीं आंखों से ख़ूनी अश्क जारी थे लेकिन लेकिन इस मअ्रक-ए-सितम में कोई इन नादानों पर रहम करने वाला न था। सितम्गारों ने उन नौनिहालों को भी तेग़े सितम से शहीद किया। और हानी को क़त्ल करके सूली चढ़ाया। उन तमाम शहीदों के सर नेज़ों पर चढ़ा कर कूफ़ा के गली कूचों में फराए गये और बेहयाई के साथ कूफ़ियों ने अपनी संगद्रिली और मेहमान कुशी का अमली त़ौर पर ऐलान क़िया। यह वाक़या 3 ज़िल-हिज्जा 60 हिजरी का है। उसी रोज़ मक्का मुकर्रमा से हज़रत इमाम हुसैन[1] रज़ि अल्लाहु अन्हु कूफ़ा की तरफ़ रवाना हुए।

JANNATI KAUN?

हज़रत इमाम हुसैन

रज़ि अल्लाहु अन्हु की

कूफ़ा को रवानगी

हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का ख़त आने के बाद हज़रत इमाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को कूफ़ियों की दर्ख़्वास्त कुबूल फरमाने में. कोई वजहे तअम्मुल व ज़ाए उज़्र बाक़ी नहीं रही. थी। ज़ाहिरी शक्ल तो यह थी और हक़ीक़त में क़ज़ा व क़द्र के फरमान नाफ़िज़ हो चुके थे शहादत का वक़्त नज़्दीक आ चुका था। जज़्ब-ए-शौक़ दिल को खींच रहा था। फिदाकारी के वलवलों ने दिल को बेताब कर दिया था। हज़रत इमाम ने सफ़रे इराक़ का इरादा फरमाया और अस्बाबे सफर दुरुस्त होने लगा। नियाज़मन्दाने सादिकुल-अक़ीदत को इत्तिला हुई। अगरचे कोई मुख़्विफ़ सूरत पेशे नज़र न थी और हज़रत मुस्लिम के ख़त से कूफ़ियों की अक़ीदत व इरादत और हज़ारहा आदमियों के हल्क़-ए-बैअ़त में दाख़िल होने की इत्तिला मिल चुकी, उज़्र और जंग का बज़ाहिर कोई क़रीना न था।

लेकिन सहाबा के दिल इस वक़्त हज़रत इमाम के सफर को किसी तरह गवारा न करते थे। और वह हज़रत इमाम से इसरार कर रहे थे कि आप इस सफर को मुल्तवी फरमाएं मगर हज़रत इमाम उनकी यह इस्तिदआ (गुज़ारिश) कुबूल फरमाने से मज्बूर थे क्योंकि आपको ख़्याल था कि कूफ़ियों की इतनी बड़ी जमाअत का इस क़द्र इसरार और ऐसी इल्तिजाओं के साथ अर्ज़दाश्तें पज़ीर न फरमाना अह्ले बैत के अख़्लाक़ के शायां नहीं। इसके अलावा हज़रत मुस्लिम के पहुँचने पर अह्ले कूफ़ा की तरफ़ से कोई कोताही न होना और इमाम की बैअ़त के लिए शौक़ से हाथ फैला देना और हज़रों कूफ़ियों का दाख़िले हल्क़-ए-गुलामी हो जाना। उस पर भी हज़रत इमाम का उनकी तरफ़ से इग़्माज़ (नज़र अंदाज़) फरमाना और उनकी ऐसी इल्तिजाओं को जो महज़ पासदारी के लिए हैं ठुकरा देना और उस मुसलमान क़ौम की दिल शिक्नी करना हज़रत इमाम को किसी तरह गवारा न हुआ। उधर हज़रत मुस्लिम जैसे सफ़ा केश की इस्तिदआ

को बे-इल्तिफाती की नज़र से देखना और उनकी दर्ख़्वास्ते तशरीफ आवरी को रद्द फरमा देना भी हज़रत इमाम पर बहुत भारी था। यह सबब थे जिन्होंने इमाम को सफरे इराक़ पर मजबूर किया और आपको अपने हिजाज़ी अक़ीदत मन्दों से मअ्ज़रत करना पड़ी।

हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत इब्ने उमर, हज़रत जाबिर, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी, हज़रत अबू वाक़िद लैसी और दूसरे सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन आपको रोकने में बहुत मुसिर (बज़िद) थे। और आख़िर तक वह यही कोशिश करते रहे कि आप मक्का मुकर्रमा से तशरीफ़ न ले जाएं। लेकिन यह कोशिशें कारआमद न हुई और हज़रत इमाम आली मक़ाम ने 3 ज़िल-हिज्जा 60 हिजरी को अपने अह्ले बैत मवाली व ख़ुद्दाम कुल बयासी नुफूस को हम्राह लेकर राहे इराक़ इख़्तियार की। मक्का मुकर्रमा से अह्ले बैते रिसालत का यह छोटा सा क़ाफ़िला रवाना होता है और दुनिया से सफर करने वाले बैतुल्लाह हराम का आख़िरी तवाफ़ करके ख़ान-ए-काबा के पर्दों से लिपट-लिपट कर रोते हैं। उनकी गर्म आहों और दिल हिला देने वाले नालों ने मक्का मुकर्रमा के बाशिन्दों को ग़मज़दा कर दिया। मक्का मुकर्रमा का बच्चा-बच्चा अह्ले बैत के उस क़ाफ़िले को हरम शरीफ़ से रुख़्सत होता देख कर आबदीदह और परेशान हो रहा था मगर वह जांबाज़ों के अमीरे लश्कर और फ़िदाकारों के क़ाफ़िला सालार मरदाना हिम्मत के साथ रवाना हुए। अस्ना-ए-राह (बीच रास्ते) में ज़ाते अर्क़ के मक़ाम पर बशीर इब्ने ग़ालिब असदी बइराद-ए-मक्का मुकर्रमा कूफ़ा से आते मिले। हज़रत इमाम ने उन से अह्ले इराक़ का हाल दरयाफ़्त किया। अर्ज़ किया कि उनके कुलूब आपके साथ हैं और तल्वारें बनी उमैया के साथ। और ख़ुदा जो चाहता है करता है। **यफ़्अलुल्लाहु मायशाओ।** हज़रत इमाम ने फरमाया सच है ऐसी ही गुफ़्तगू फ़रज़्दक़ शाइर से हुई। बतनुर्रमा (नाम एक मक़ाम का) से रवाना होने के बाद उबैदुल्लाह बिन मुतीअ् से मुलाक़ात हुई। वह हज़रत इमाम के बहुत दरपे हुए कि आप इस सफ़र को तर्क फरमाएं और इसमें इन्होंने अन्देशे ज़ाहिर किए। हज़रत इमाम ने फरमाया **लन युसीबना इल्ला मा कतबल्लाहु लना।** हमें वही मुसीबत पहुँच सकती है जो ख़ुदावन्दे आलम ने हमारे लिए मुक़र्रर फ़रमा दी।

राह में हज़रत इमाम आली मक़ाम को कूफ़ियों की ग़द्दारी और हज़रत

मुस्लिम की शहादत की खबर मिल गई। उस वक़्त आपकी जमाअत में मुख़्तलिफ़ राएँ हुईं और एक मरतबा आपने भी वापसी का इरादा ज़ाहिर फरमाया लेकिन बहुत गुफ़्तगुयों के बाद राय यही क़रार पाई कि सफर जारी रखा जाए और वापसी का ख़्याल तर्क किया जाए।

हज़रत इमाम ने भी इस मशवरे से इत्तिफ़ाक़ किया और क़ाफ़िला आगे चल दिया। यहाँ तक कि जब कूफ़ा दो मंज़िल रह गया तब आपकी हुर बिन यज़ीद रबाही मिला। हुर के साथ इब्ने ज़्याद के एक हज़ार हथियार बन्द सवार थे। हुर ने हज़रत इमाम की जनाब में अर्ज़ किया कि उसको इब्ने ज़्याद ने आपकी तरफ़ भेजा है और हुक्म दिया है कि आपको उसके पास ले चले। हुर ने यह भी ज़ाहिर किया कि वह मज्बूराना बादिले नख़्वास्ता आया है और उसको आपकी ख़िदमत में जुरअत बहुत नापसन्द व नागवार है। हज़रत इमाम ने हुर से फरमाया कि मैं इस शहर में खुद-ब-खुद न आया बल्कि मुझे बुलाने के लिए अह्ले कूफ़ा के लगातार खुतूत गये। और लगातार नामे पहुँचते रहे। ऐ अह्ले कूफ़ा! अगर तुम अपने अह्द व बैअ़त पर क़ाइम हो और तुम्हें अपनी ज़ुबानों का कुछ पास हो तो तुम्हारे शहर में दाख़िल हूँ वरना यहीं से वापस चला जाऊं।

हुर ने क़सम खा कर कहा कि हमको उसका कुछ इल्म नहीं कि आपके पास इल्तिजा नामे और क़ासिद भेजे गये और मैं न आपको छोड़ सकता हूँ और न वापस हो सकता हूँ।

हुर के दिल में ख़ानदाने नुबुव्वत और अह्ले बैत की अज़्मत ज़रूर थी और उस ने नमाज़ों में हज़रत इमाम ही की इक़्तिदा की लेकिन वह इब्ने ज़्याद के हुक्म से मज्बूर था और उसको यह अन्देशा भी था कि वह अगर हज़रत इमाम के साथ कोई मुराआत करे तो इब्ने ज़्याद पर यह बात ज़ाहिर हो कर रहेगी कि हज़ार सवार साथ हैं ऐसी सूरत में किसी बात का छुपाना मुम्किन नहीं। और अगर इब्ने ज़्याद को मालूम हुआ कि हज़रत इमाम के साथ ज़रा भी नज़र अंदाज़ी की गई है तो वह निहायत सख़्ती के साथ पेश आएगा। इस अन्देशे और ख़्याल से हुर अपनी बात पर अड़ा रहा। यहाँ तक कि हज़रत इमाम को कूफ़ा की राह से हट कर करबला में नुज़ूल फरमाना पड़ा।

यह मुहर्रम 61 हिजरी की दूसरी तारीख़ थी। आपने उस मक़ाम का नाम दरयाफ़्त किया। तो मालूम हुआ कि इस जगह को करबला कहते हैं।

हज़रत इमाम करबला से वाक़िफ़ थे और आपको मालूम था कि करबला ही वह जगह है जहाँ अह्ले बैते रिसालत को राहे हक़ में अपने ख़ून की नदियाँ बहानी होंगी। आपको उन्हीं दिनों में हुज़ूर हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़्यारत हुई। हुज़ूर अलैहिस्सलात वत्तस्लीमात ने आपको शहादत की ख़बर दी। और आपके सीन-ए-मुबारक पर दस्ते अक़्दस रख कर दुआ फरमाई **अल्लाहुम्मा अअ़्तिल-हुसैना सबरन व अजरन।** अजीब वक़्त है कि सुल्ताने दारैन के नूरे नज़र को सैकड़ों तमन्नाओं से मेहमान बना कर बुलाया है अर्ज़ियों और दर्ख़्वास्तों के ढेर लगा दिए हैं। क़ासिदों और प्यामों की रोज़ बरोज़ डाक लग गई है। अह्ले कूफ़ा रातों को अपने मकानों में इमाम की तशरीफ़ आवरी ख़्वाब में देखते हैं। और ख़ुशी से फूले नहीं समाते। जमाअतें मुद्दतों तक सुबह से शाम तक हिजाज़ की सड़क पर बैठ कर इमाम की आमद का इंतिज़ार किया करती हैं और शाम को बादिले मग़्मूम वापस जाती हैं। लेकिन जब वह करीम मेहमान अपने करम से उनकी ज़मीन में वुरूद (तशरीफ़) फरमाता है तो उन्हीं कूफ़ियों का हथियारबन्द लश्कर सामने आता है और न शहर में दाख़िल होने देता है। न अपने वतन ही को वापस तशरीफ़ ले जाने पर राज़ी होता है। यहाँ तक कि उस मुअज़्ज़ज़ मेहमान को मअ़ा अपने अह्ले बैत के खुले मैदान में रख़्ते इक़ामत डालना पड़ता है। और दुश्मनाने हया को ग़ैरत नहीं आती। दुनिया में ऐसे मुअज़्ज़ज़ मेहमान के साथ ऐसी बेहमीयती का सुलूक कभी न हुआ होगा जो कूफ़ियों ने हज़रत इमाम के साथ किया।

यहाँ तो इन मुसाफ़िराने बेवतन का सामान बेतरतीब पड़ा है और उधर हज़ार सवार का हथियार बन्द लश्कर मुक़ाबिल ख़ेमाज़न है जो अपने मेहमानों को नेज़ों की नोकें और तल्वारों की धारें दिखा रहा है और बजाए आदाब मेज़बानी के ख़ूंख़्वारी पर तुला हुआ है दरियाए फुरात के क़रीब दोनों लश्कर थे और दरियाए फुरात का पानी दोनों लश्करों में से किसी को सैराब न कर सका। इमाम के लश्कर को तो उसका एक क़तरा पहुँचना ही मुश्किल हो गया। और यज़ीदी लश्कर जितने आते गये उन सबको बैते रिसालत के बेगुनाह ख़ून की प्यास बढ़ती गई। आबे फुरात से उनकी तिशनगी में कोई फ़र्क़ न आया। अभी इत्मीनान से बैठने और तकान दूर करने की सूरत भी नज़र न आई थी कि हज़रत इमाम की ख़िदमत में इब्ने

ज़्याद का एक मक्तूब पहुँचा जिसमें उसने हज़रत इमाम से यज़ीद नापाक की बैअ़त तलब की थी। हज़रत इमाम ने वह ख़त पढ़ कर डाल दिया और क़ासिद से कहा, मेरे पास इसका कुछ जवाब नहीं।

सितम है! बुलाया तो जाता है ख़ुद बैअ़त होने के लिए और जब वह करीम दुश्वार तरीन सफर की मशक़्क़तें बर्दाश्त फरमा कर तशरीफ़ ले आते हैं तो उनको यज़ीद जैसे ऐबे मुजस्सम शख़्स की बैअ़त पर मज्बूर किया जाता है। जिसकी बैअ़त को कोई भी वाक़िफ़ हाल दीनदार आदमी गवारा नहीं कर सकता न वह बैअ़त किसी तरह जाइज़ थी। इमाम को उन बेहयायों की इस जुरअत पर हैरत थी और इसी लिए आपने फरमाया कि मेरे पास इसका कुछ जवाब नहीं है। इस से इब्ने ज़्याद का तैश और ज़्यादा हो गया। और उस ने मज़ीद लश्कर व फ़ौज तरतीब दिए। और उन लश्करों का सिपेहसालार अमर बिन सअद को बनाया जो उस ज़माने में मुल्के रय का वाली (गवर्नर) था। रय ख़ुरासान का एक शहर है जो आजकल ईरान का दारुस्सलतनत है और उसको तेहरान कहते हैं।

सितम शिआर मुहारेबीन सबके सब हज़रत इमाम की अ़ज़्मत व फ़ज़ीलत को ख़ूब जानते पहचानते थे। और आपकी जलालत व मर्तबत का हरदिल मोअ़तरिफ़ था। इसी वजह से इब्ने सअद ने हज़रत इमाम के मुक़ातला से गुरेज़ करनी चाही और पहलू तही की वह चाहता था कि हज़रत इमाम के ख़ून से वह बचा रहे मगर इब्ने ज़्याद ने उसे मज्बूर किया कि अब दो ही सूरतें हैं या तो रय की हुकूमत से दस्त बरदार हो वरना इमाम से मुक़ाबला किया जाए दुनियवी हुकूमत के लालच ने उसको इस जंग पर आमादा कर दिया। जिसको उस वक़्त वह नागवार समझता था और जिसके तसव्वुर से उसका दिल काँपता था। आख़िर कार इब्ने सअ़द वह तमाम लश्कर व फौज लेकर हज़रत इमाम के मुक़ाबले के लिए रवाना हुआ और इब्ने ज़्याद बद-निहाद पैहम व मुतवातिर मदद पर मदद भेजता रहा। यहाँ तक कि अमर बिन सअद के पास बाइस हज़ार सवार व पैदल सिपाही जमा हो गये और उस ने उस जम्ईयत के साथ करबला में पहुँच कर फ़ुरात के किनारे पड़ाव किया और अपना मरकज़ क़ाइम किया।

हैरतनाक बात है और दुनिया की किसी जंग में इसकी मिसाल नहीं मिलती कि कुल बयासी तो आदमी, उन में बीवियाँ भी, बच्चे भी बीमार भी, फिर वह भी बइराद-ए-जंग नहीं आए थे और इंतिज़ामे हर्ब काफ़ी न रखते

थे। उनके लिए बाइस हज़ार की जर्रार फौज भेजी जाए, आखिर वह इन ब्यासी नुफूस को अपने ख़्याल में क्या समझते थे। और उनकी शुजाअत व बसालत के कैसे-कैसे मनाज़िर उनकी आंखों ने देखे थे कि इस छोटी सी जमाअत क लिए दौगनी चौगुनी, दसगुनी तो क्या सौ गुनी तादाद को भी काफी न समझा। बेअंदाज़ा लश्कर भेज दिए। फौजों के पहाड़ लगा डाले उस पर भी दिल ख़ौफ़ज़दा हैं। और जंग आज़मावों, दिलावरों, के हौसले पस्त हैं और वह यह समझते हैं कि शेराने हक़ के हमले की ताब लाना मुश्किल है मज्बूरन यह तदबीर करना पड़ी कि लश्करे इमाम पर पानी बन्द किया जाए। प्यास की शिद्दत और गर्मी की हिद्दत से ताक़तें कमज़ोर हो जाएं कमज़ोरी इंतिहा को पहुँच चुके तब जंग शुरू की जाए।

वह रेगे गरम और वह धूप और वह प्यास की शिद्दत
करें सब्र व तहम्मुल मीरे कौसर ऐसे होते हैं!

अह्ले बैते किराम पर पानी बन्द करने और उनके ख़ूनों के दरिया बहाने के लिए बेग़ैरती से सामने आने वालों में ज़्यादा तादाद उन्हीं बेहयाओं की थी जिन्होंने हज़रत इमाम को सैकड़ों दर्ख़्वास्तें भेज कर बुलाया था। और मुस्लिम बिन अक़ील के हाथ पर हज़रत इमाम की बैअ़त की थी मगर आज दुश्मनाने हमीयत व ग़ैरत को न अपने अह्द व बैत का पास था न अपनी दावत व मेज़बानी का लिहाज़। फुरात का बेहिसाब पानी उन सियाह बातिनों ने ख़ानदाने रिसालत पर बन्द कर दिया था। अह्ले बैत के छोटे-छोटे कम उम्र फातमी चमन के नौनिहाल ख़ुश्क लब सूखे मुँह थे। नादान बच्चे एक-एक क़तरे के लिए तड़प रहे थे। नूर की तस्वीरें प्यास की शिद्दत में दम तोड़ रही थीं, बीमारों के लिए दरिया का किनारा बयाबान बना हुआ था। आले रसूल को लबे आब पानी मयस्सर न आता था। सरे चश्मा तयम्मुम से नमाज़ें पढ़नी पड़ती थीं। इस तरह बेआब व दाना तीन दिन गुज़र गये। छोटे-छोटे बच्चे और बीवियाँ सब भूख व प्यास से बेताब व तवां हो गये। इस मअ़रक-ए-ज़ुल्म व सितम में अगर सितम भी होता तो उसके हौसले पस्त हो जाते और सरे नियाज़ झुका देता। मगर फ़रज़न्दे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को मुसीबतों का हुजूम जगह से न हटा सका। और उनके अ़ज़्म व इस्तिक़्लाल में फ़र्क़ न आया। हक़ व सदाक़त का हामी मुसीबतों की भयानक घटाओं से न डरा। और तूफ़ाने बला के सैलाब से उसके पाए सिबात में जुंबिश न हुई। दीन का शैदाई दुनिया की

आफ़तों को ख़्याल में न लाया। दस मुहर्रम तक यही बहस रही कि हज़रत इमाम यज़ीद की बैअ़त कर लें। अगर आप यज़ीद की बैअ़त करते तो तमाम लश्कर आपके जुलू में होता। आपका कमाले इकराम व एहतराम किया जाता। ख़ज़ानों के मुँह खोल दिए जाते और दौलते दुनिया क़दमों पर लुटा दी जातीं मगर जिसका दिल हुब्बे दुनिया से ख़ाली हो और दुनिया की नामाएदारी का राज़ जिस पर ज़ाहिर हो वह इस तिलिस्म पर कब फिदा होता है। जिस आँख ने हक़ीक़ी हुस्न के जल्वे देखे हों वह नुमाइशी रंग व रूप पर क्या नज़र डाले।

हज़रत इमाम ने राहते दुनिया के मुँह पर ठोकर मार दी और वह राहे हक़ में पहुँचने वाली मुसीबतों का ख़ुश दिली से ख़ैर मक़्दम किया और बावजूद इस क़द्र आफ़तों और बलाओं के नाजाइज़ बैअ़त का ख़्याल अपने क़ल्बे मुबारक में न आने दिया। और मुसलमानों की तबाही व बरबादी पसन्द न फरमाई। अपना घर लुटाना और अपने ख़ून बहाना मन्ज़ूर किया मगर इस्लाम की इज़्ज़त में फ़र्क़ आना बर्दाश्त न हो सका।

JANNATI KAUN?

दस मुहर्रम 61 हिजरी के दिल्दोज़ वाक़ेआत

जब किसी तरह शक्ले मुसालेहत पैदा न हुई और किसी शक्ल से जफ़ा शिआर क़ौम सुलह की तरफ़ माइल न हुई और तमाम सूरतें उनके सामने पेश कर दी गईं। लेकिन तिशनगाने ख़ूने अह्ले बैत किसी बात पर राज़ी न हुए और हज़रत इमाम को यक़ीन हो गया कि अब कोई शक्ल सुलह की बाक़ी नहीं है न यह शहर में दाख़िल होने देते हैं न वापस जाने देते हैं न मुल्क छोड़ने पर उनको तसल्ली होती है। वह जान के तलबगार हैं और अब इस जंग को दफ़अ् करने का तरीक़ा बाक़ी न रहा। उस वक़्त हज़रत इमाम ने अपने क़्यामगाह के पास एक ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया। ख़न्दक़ खोदी गई और उसकी सिर्फ़ एक राह रखी गई है जहाँ से निकल कर दुश्मनों से मुक़ाबला किया जाए। ख़न्दक़ में आग जला दी गई ताकि अह्ले ख़ेमा दुश्मनों की ईज़ा (तक्लीफ़) से महफ़ूज़ रहें।

दसवीं मुहर्रम का क़्यामत नुमा दिन आया। जुमा की सुबह हज़रत इमाम ने तमाम अपने रुफ़क़-ए-अह्ले बैत के साथ फज्र के वक़्त अपनी उम्र की आख़िरी नमाज़ बाजमाअत निहायत ज़ौक़ व शौक़ तज़र्रुअ् व ख़ुशूअ् के साथ अदा फरमाई। पेशानियों ने सज्दों में ख़ूब मज़े लिए। ज़ुबानों ने क़िरअत व तस्बीहात के लुत्फ़ उठाए। नमाज़ से फ़राग़त के बाद ख़ेमे में तशरीफ़ लाए। दसवीं मुहर्रम का आफ़ताब क़रीबे तुलूअ् है। इमाम आली मक़ाम और उनके तमाम रुफ़क़ा-ए-अह्ले बैत तीन दिन के भूखे प्यासे हैं, एक क़तर-ए-आब मयस्सर नहीं आया और एक लुक़्मा हलक़ से नहीं उतरा। भूख प्यास से जिस क़द्र ज़ुअफ़ (कमज़ोरी) व नातवानी का ग़लबा हो जाता है उसका वही लोग कुछ अंदाज़ा कर सकते हैं जिन्हें कभी दो तीन वक़्त के फ़ाक़े की नौबत आई हो। फिर बेवतनी, तेज़ धूप, गर्म रेत, गर्म हवायें, उन्होंने नाज़ परवरदिगाने आग़ोशे रिसालत को कैसा पज़्मुरदा कर दिया होगा। इन ग़रीबाने वतन पर जोर व जफ़ा के पहाड़ तोड़ने के लिए बाइस हज़ार फौज और ताज़ा दम लश्कर तीर व बतर तेग़ व सिनां से मुसल्लह सफ़ें बांधे मौजूद। जंग का नक़्क़ारा बजा दिया गया और मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रज़न्द और फ़ातिमा ज़ुहरा के जिगर

बन्द को मेहमान बना कर बुलाने वाली क़ौम ने जानों पर खेलने की दावत दी।

हज़रत इमाम ने मैदाने जंग में तशरीफ़ फरमा हो कर एक खुतबा फरमाया जिस में बयान फरमाया कि ख़ूने नाहक़ हराम और ग़ज़बे इलाही का सबब है। मैं तुम्हें आगाह करता हूँ कि तुम इस गुनाह में मुब्तला न हो। मैंने किसी को क़त्ल नहीं किया है। किसी का घर नहीं जलाया किसी पर हमला आवर नहीं हुआ। अगर तुम अपने शहर में मेरा आना नहीं चाहते हो तो मुझे वापस जाने दो, तुम से किसी चीज़ का तलबगार नहीं। तुम्हारे दर-पय आज़ार नहीं। तुम क्यों मेरी जान के दरपे हो। और तुम किस तरह मेरे ख़ून के इल्ज़ाम से बरी हो सकते हो। रोज़े महशर तुम्हारे पास मेरे ख़ून का क्या जवाब होगा। अपना अंजाम सोचो और अपनी आक़िबत पर नज़र डालो और यह भी समझो कि मैं कौन और बारगाहे रिसालत में किस चश्मे करम का मन्ज़ूरे नज़र हूँ। मेरे वालिद कौन हैं और मेरी वालिदा किस की लख़्ते जिगर हैं। मैं उन्हीं बतूले ज़ुहरा का नूर दीदा हूँ जिनके पुल सिरात पर गुज़रते वक़्त अर्श से निदा की जाएगी कि ऐ अह्ले महशर! सर झुकाओ और आंखें बन्द करो कि हज़रत ख़ातूने जन्नत पुल सिरात से सत्तर हज़ार हूरों को रिकाबे सआदत में लेकर गुज़रने वाली हैं। मैं वही हूँ जिसकी मुहब्बत को सरवरे आलम अलैहिस्सलाम ने अपनी मुहब्बत फरमाया है। मेरे फ़ज़ाइल तुम्हें ख़ूब मालूम हैं। मेरे हक़ में जो अहादीस वारिद हुई हैं उस से तुम बेख़बर नहीं हो।

इसका जवाब यह दिया गया कि आपके तमाम फ़ज़ाइल हमें मालूम हैं मगर इस वक़्त यह मस्अला ज़ेरे बहस नहीं है। आप जंग के लिए किसी को मैदान में भेजिए और गुफ़्तगू ख़त्म फरमाइए।

हज़रत इमाम ने फरमाया कि हुज्जतें ख़त्म करना चाहता हूँ ताकि इस जंग को दफ़अ़ करने की तदाबीर में से मेरी तरफ़ से कोई तदबीर न रह जाए। और जब तुम मज्बूर करते हो तो बमज्बूरी व नाचारी मुझको तल्वार उठाना ही पड़ेगी। अभी गुफ़्तगू हो रही थी कि गिरोहे दुश्मन में से एक शख़्स घोड़ा दौड़ा कर सामने आया। (जिसका नाम मालिक बिन उरवा था) जब उस ने देखा कि लश्करे इमाम के आस-पास ख़न्दक़ में आग जल रही है और शोअ़्ले बुलन्द हो रहे हैं और इस तदबीर से अह्ले ख़ेमे की हिफ़ाज़त की जाती है तू इस गुस्ताख़ बद बातिन ने हज़रत इमाम से कहा

कि ऐ हुसैन तुमने वहाँ की आग से पहले यहीं आग लगा ली। हज़रत इमाम आली मक़ाम अला जदेही अलैहिस्सलाम ने फरमाया **कज़िब्ता या अदुव्वल्लाह।** ऐ दुश्मने खुदा तू काज़िब है। तुझे गुमान है कि मैं दोज़ख़ में जाऊंगा।

मुस्लिम बिन औसजा को मालिक बिन उरवा का यह कलिमा बहुत नागवार हुआ। उन्होंने हज़रत इमाम से उस बद-जुबान के मुँह पर तीर मारने की इजाज़त चाही। सब्र व तहम्मुल और तक़्वा और रास्तबाज़ी और अदालत व इंसाफ़ का एक बे-मिसाल मंज़र है कि ऐसी हालत में जब जंग के लिए मज्बूर किए गये थे। ख़ून के प्यासे तल्वारें खींचे हुए जान के तलबगार थे। बेबाकों ने कमाले बेअदबी व गुस्ताख़ी से ऐसा कलिमा कहा और एक जांनिसार उसके मुँह पर तीर मारने की इजाज़त चाहता है तो उस वक़्त अपने जज़्बात क़ब्ज़े में हैं तैश नहीं आता। फरमाते हैं कि ख़बरदार मेरी तरफ़ से कोई जंग की इब्तिदा न करे ताकि इस ख़ूंरेज़ी का वबाल दुश्मनों ही की गर्दन पर रहे। और हमारा दामन पेश क़दमी से आलूदह न हो लेकिन तेरे जराहते क़ल्ब का मरहम भी मेरे पास है। और तेरे सोज़े जिगर की तशफ़्फ़ी की भी तदबीर रखता हूँ, अब तू देख, यह फरमा कर दस्ते दुआ दराज़ फरमाए और बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि यारब अज़ाबे नार से पहले इस गुस्ताख़ को दुनिया में आतिशे अज़ाब में मुब्तला कर। इमाम का हाथ उठाना था कि उसके घोड़े का पाँव एक सूराख़ में गया और वह घोड़े से गिरा और उसका पाँव रिकाब में उलझा और घोड़ा उसे लेकर भागा और आग की ख़न्दक़ में डाल दिया।

हज़रत इमाम ने सज्द-ए-शुक्र किया और अपने परवरदिगार की हम्द व सना की और फरमाया ऐ परवरदिगार तेरा शुक्र है कि तूने अह्ले बैत रिसालत के बदख़्वाह को सज़ा दी। हज़रत इमाम की ज़ुबान से यह कलिमा सुन कर सफ़े दुश्मन में से एक और बेबाक ने कहा कि आपको पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या निस्बत? यह कलिमा तो इमाम के लिए बहुत तक्लीफ़देह था। आपने उसके लिए भी बद्दुआ फरमाई और अर्ज़ किया या रब इस बद-ज़ुबान को फ़ौरी अज़ाब में गिरफ़्तार कर। इमाम ने यह दुआ फरमाई और इसको क़ज़ाए हाजत की ज़रूत पेश आई। घोड़े से उतर कर एक तरफ़ भागा और किसी जगह क़ज़ाए हाजत के लिए बरहना हो कर बैठा एक सियाह बिच्छू ने डंक मारा तो नजासत आलूदह तड़पता फिरता था। इस रुसवाई के साथ तमाम लश्कर के सामने उस

नापाक की जान निकली मगर सख़्त दिलाने बेहमीयत को ग़ैरत न हुई।

एक शख़्स मुज़नी ने इमाम के सामने आकर कहा कि ऐ इमाम देखो तो दरियाए फ़ुरात कैसा मौजें मार रहा है। खुदा की क़मस खा कर कहता हूँ तुम्हें इसका एक क़तरा न मिलेगा। और तुम प्यासे हलाक हो जाओगे। हज़रत इमाम ने उसके हक़ में फरमाया : **अल्लाहुम्मा अमितहू अतशाना।** यारब इसको प्यासा मार। इमाम का यह फरमाना था कि मुज़नी का घोड़ा चहका, मुज़नी गिरा, घोड़ा भागा और मुज़नी उसके पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ा और प्यास उस पर ग़ालिब हुई, इस शिद्दत की ग़ालिब हुई कि **अल-अतश** पुकारता था और जब पानी उसके मुँह से लगाते थे तो एक क़तरा न पी सकता था यहाँ तक कि इसी शिद्दते प्यास में मर गया।

फ़रज़न्दे रसूल को यह बात भी दिखा देनी थी कि उनकी मक़्बूलियते बारगाहे हक़ पर और उनके कुर्ब व मंज़िलत पर जैसी कि नुसूसे कसीरा व अहादीसे शहीरा शाहिद हैं ऐसे ही उनके ख़्वारिक़ व करामात भी गवाह हैं। अपने इस फ़ज़्ल का अमली इज़्हार भी इत्मामे हुज्जत के सिलसिले की एक कड़ी थी कि अगर तुम आंख रखते हो तो देख लो कि जो ऐसा मुस्तजाबुद्दावात है उसके मुक़ाबले में आना खुदा से जंग करना है। उसका अंजाम सोच लो और बाज़ रहो मगर शरारत के मुजस्समे इस से भी सबक़ न ले सके और दुनियाए नापाइदार की हिर्स का भूत जो उनके सरों पर सवार था उसने उन्हें अन्धा बना दिया। और नेज़े बाज़ लश्करे दुश्मनाँ से निकल कर बड़ाई मारते हुए मैदान में आ कूदे। और तकब्बुर व तबख़्तुर के साथ इतराते हुए घोड़े दौड़ा कर और हथियार चमका कर इमाम से मुबारिज़ के तालिब हुए।

हज़रत इमाम और इमाम के खानदान के नौ निहाल शौक़े जांबाज़ी में सर शार थे। उन्होंने मैदान में पहुँच कर दुश्मनाने अह्ले बैत से शुजाअत व बसालत के साथ मुक़ाबले किए और अपनी बहादुरी के सिक्के जमा दिए और एक-एक ने दुश्मनों की बड़ी तादाद को हलाक करके राहे जन्नत इख़्तियार करना शुरू की। इस तरह बहुत से जांबाज़ फरज़न्दाने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर अपनी जानें निसार कर गये। इन साहिबों के नाम और उनकी जांबाज़ियों के तफ़्सीली तज़्किरे तारीख़ की किताबों में लिखे हैं। यहाँ इख़्तिसारन इस तफ़्सील को छोड़ दिया गया है।

वहब बिन अब्दुल्लाह कलबी का एक वाक़या ज़िक्र किया जाता है। यह

क़बीला-ए-बनी कल्ब के ज़ेबा व नेकख़ू गुल रुख़ हसीन जवान थे, उठती जवानी और उनफ़ुवाने शबाब, उमंगों का वक़्त और बहारों के दिन थे। सिर्फ़ सत्तरह रोज़ शादी को हुए थे और अभी बिसाते इशरत व निशात गरम ही थी कि आपके पास आपकी वालिदा पहुँचीं जो एक बेवह औरत थीं और जिनकी सारी कमाई और घर का चिराग़ यही एक नौजवान बेटा था। उस मुश्फ़िक़ माँ ने प्यारे बेटे के गले में बाहें डाल कर रोना शुरू कर दिया। बेटा हैरत में आकर माँ से दरयाफ़्त करता है कि मादरे मोहतरमा रंज व मलाल का सबब क्या है? मैंने अपनी उम्र में कभी आपकी नाफ़रमानी न की न आइंदा कर सकता हूँ। आपकी इताअत व फरमां बरदारी फ़र्ज़ है और मैं ता-ज़िन्दगी मुतीअ् व फरमांबरदार रहूँगा। आपके दिल को क्या सदमा पहुँचा और आपको किस ग़म ने रुलाया। मेरी प्यारी माँ, मैं आपके हुक्म पर जान फ़िदा करने को तैयार हूँ आप ग़म्गीन न हों।

इक्लौते सआदत मन्द बेटे की यह सआदत मन्दाना गुफ़्तगू सुन कर माँ और चीख़ मार कर रोने लगी। और कहने लगी, ऐ फरज़न्दे दिलबन्द मेरी आंख का नूर दिल का सूरूर तू ही है और ऐ मेरे घर के चिराग़ और मेरे बाग़ के फूल मैंने अपनी जान घुला घुला कर तेरी जवानी की बहार पाई है। तू ही मेरे दिल का क़रार है तू ही मेरी जान का चैन है। एक दम तेरी जुदाई और एक लम्हा तेरा फ़िराक़ मुझे बर्दाश्त नहीं हो सकता।

चू दर ख़्वाब बाशम तूई दर ख़्यालम
चूबेदार गरदम तूई दर ज़मीरम

ऐ जाने मादर मैंने तुझे अपना ख़ूने जिगर पिलाया है। आज मुस्तफ़ा का जिगर गोशा ख़ातूने जन्नत का नौनिहाल, दश्ते करबला में मुब्तलाए मुसीबत व जफ़ा है, प्यारे बेटे क्या तुझ से हो सकता है कि तू अपना ख़ून उस पर निसार करे। और अपनी जान उसके क़दमों पर क़ुरबान कर डाले। इस बेग़ैरत ज़िन्दगी पर हज़ार तुफ़ है कि हम ज़िन्दा रहें और सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लाडला ज़ुल्म व जफ़ा के साथ शहीद किया जाए अगर तुझे मेरी मुहब्बतें कुछ याद हों और तेरी परवरिश में जो मेहनतें मैंने उठाई हैं उनको तो भूला न हो तो ऐ मेरे चमन के फूल तू हुसैन के सर पर सदक़ा हो जा। वहब ने कहा ऐ मादरे महरबान, ख़ूबि-ए-नसीब, यह जान, शहज़ाद-ए-कौनैन पर फिदा हो जाए और यह नाचीज़ हदिया वह आक़ा क़ुबूल कर लें। मैं दिल व जान से आमादा हूँ, एक

लम्हे की इजाज़त चाहता हूँ कि इस बीबी से दो बातें कर लूं जिसने अपनी ज़िन्दगी के ऐश व राहत का सेहरा मेरे सर बांधा है और जिसके अरमान मेरे सिवा किसी की तरफ़ नज़र उठा कर नहीं देखते। उसकी हसरतों के तपड़ने का ख़्याल है, वह अगर सब्र न कर सकी तो मैं उसको इजाज़त दे दूँ कि वह अपनी ज़िन्दगी को जिस तरह चाहे गुज़ारे। माँ ने कहा बेटा औरतें नाक़िसुल-अक़्ल होती हैं, कहीं तू उसकी बातों में आ जाए और यह सआदते सरमदी तेरे हाथों से जाती रहे।

वहब ने कहा, प्यारी माँ, इमाम हुसैन अली जद्देही अलैहिस्सलाम की मुहब्बत की गिरह (गाँठ) दिल में ऐसी मज़्बूत लगी है कि उसको कोई खोल नहीं सकता। और उनकी जांनिसारी का नक़्श दिल पर इस तरह लिखा हुआ है जो दुनिया के किसी भी पानी से नहीं धोया जा सकता है। यह कह कर बीबी की तरफ़ आया और उसे ख़बर दी कि फ़रज़न्दे रसूल मैदाने करबला में बे यार व मददगार हैं और ग़द्दारों ने उन पर नरग़ा किया है। मेरी तमन्ना है कि उन पर जान निसार करूं। यह सुन कर नई दुल्हन ने उम्मीद भरे दिल से एक आह खींची और कहने लगी, ऐ मेरे आराम जां अफसोस है कि इस जंग में तेरा साथ नहीं दे सकती। शरीअ़ते इस्लामिया ने औरतों को जंग के लिए मैदान में आने की इजाज़त नहीं दी है। अफ़्सोस इस सआदत में मेरा हिस्सा नहीं कि तेरे साथ में भी इस जाने जहाँ पर जान क़ुरबान करूँ। जन्नत में हूरें तेरी ख़िदमत की आरज़ूमन्द होंगी। मुझ से वादा कर कि जब सरदाराने अह्ले बैत के साथ जन्नत में तेरे लिए बेशुमार नेमतें हाज़िर की जाएंगी। और बहिशती हूरें तेरी ख़िदमत के लिए हाज़िर हों। उस वक़्त तू मुझे न भूल जाए।

यह नौजवान अपनी इस नेक बीबी और बरगुज़ीदा माँ को लेकर फ़रज़न्दे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। दुल्हन ने अर्ज़ किया, इब्ने रसूल! शुहदा घोड़े से ज़मीन पर गिरते ही हूरों की गोद में पहुँचते हैं और जन्नती हसीन कमाले इताअत शिआ़री के साथ उनकी ख़िदमत करते हैं। मेरा यह नौजवान शौहर हुज़ूर पर जांनिसारी की तमन्ना रखता है और मैं निहायत बेकस हूँ। न मेरी माँ है न बाप है न कोई भाई है न ऐसे क़राबती रिश्तेदार हैं जो मेरी कुछ ख़बर गीरी कर सकें। इल्तिजा यह है कि मैदाने महशर में मेरे इस शौहर से जुदाई न हो। और दुनिया में मुझ ग़रीब को आपके अह्ले बैत अपनी कनीज़ों में रखें। और मेरी

उम्र का आख़िरी हिस्सा आपकी पाक बीवियों की ख़िदमत में गुज़र जाए।

हज़रत इमाम के सामने यह तमाम अह्द हो गये और वहब ने अर्ज़ कर दिया कि ऐ इमाम अगर हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत से मुझे जन्नत मिली तो मैं अर्ज़ करूंगा कि यह बीबी मेरे साथ रहे और मैंने उस से अहद किया है।

वहब इजाज़त चाह कर मैदान में चल दिया। लश्करे दुश्मनाँ ने देखा कि घोड़े पर एक माहिर व सवार है और अजले नागहानी की तरह दुशमन पर ताख़्त लाता है। हाथ में नेज़ा है। कन्धे पर सपर है और दिल हिला देने वाली आवाज़ के साथ यह रज्ज़ पढ़ता आ रहा है।

बर्क़े ख़ातिफ़ की तरह मैदान में पहुँचा। कोहे पैकर घोड़े पर सिपेहगरी के फ़ुनून दिखाए। सफ़े दुश्मनाँ से मुक़ाबिल तलब किया जो सामने आया तल्वार से उसका सर उड़ाया। गर्द व पेश (आगे-पीछे) खुद सरों के सरों का अंबार लगा दिया। और नाकिसों के तन ख़ून व ख़ाक में तड़पते नज़र आने लगे। फौरन ही घोड़े की बाग मोड़ दी और माँ के पास आकर अर्ज़ किया कि ऐ मादरे मुश्फ़ेक़ा तू मुझ से राज़ी हुई और बीवी की तरफ़ जा कर उसके सर पर हाथ रखा जो बेक़रार रो रही थी और उसको सब्र दिलाया उसकी ज़ुबाने हाल कहती थी।

जाने ज़ुअ़मे फरसूदा दारम चूं न नालम आह आह

दिल बदर्द आलूदह दारम चूं न गिरयम ज़ार ज़ार

इतने में दुश्मनों की तरफ़ से आवाज़ आई कि कोई मुक़ाबिल है। वहब घोड़े पर सवार हो कर मैदान की तरफ़ रवाना हुआ। नई दुल्हन टकटकी बांधे उसको देख रही है और आंखों से आंसू के दरिया बहा रही है –

अज़ पेश मन आं यार चू तअ़्जील कुनां रफ़्त

दिल नअ़्रा बर आ वुर्द कि जां रफ़्त रवां रफ़्त

वहब शेरे बबर की तरह तेग़े आबदार व नेज़-ए-जां शिकार लेकर मअ़्रक-ए-कारे ज़ार में साइक़ा वार आ पहुँचा। उस वक़्त मैदान में दुश्मनों की तरफ़ से एक मशहूर बहादुर और नामदार सवार हकम बिन तुफ़ैल गुरूर नबुर्द आज़माई में सरशार था। वहब ने एक ही हमले में उसको नेज़े पर उठा कर इस तरह ज़मीन पर दे मारा कि हड्डियाँ चक्ना चूर हो गई और दोनों लश्करों में शोर मच गया। और मुबारिज़ों में हिम्मते मुक़ाबला न रही। वहब घोड़ा दौड़ाता क़ल्बे दुश्मन पर पहुंचा। जो मुबारिज़ सामने आता

उसको नेज़ा की नोक पर उठा कर खाक पर पट देता। यहाँ तक कि नेज़ा पारा-पारा हो गया। तल्वार म्यान से निकाली और तेगज़ज़नों की गर्दनें उड़ा कर खाक में मिला दीं। जब दुश्मन इस जंग से तंग आ गये तो अमर बिन सअद ने हुक्म दिया कि लोग उसके चारों तरफ़ हुजूम करके हमला करें और हर तरफ़ से यक्बारगी हाथ छोड़ें एसा ही किया और जब वह नौजवान ज़ख़्मों से चूर हो कर ज़मीन पर आया तो सियाह दिलाने बद-बातिन ने उसका सर काट कर लश्कर इमाम हुसैन में डाल दिया। उसकी माँ बेटे के सर को अपने मुँह से मिलती थी और कहती थी ऐ बेटा, बहादुर बेटा अब तेरी माँ तुझ से राज़ी हुई। फिर वह सर उस दुल्हन की गोद में ला कर रख दिया। दुल्हन ने अपने प्यारे शौहर के सर को बोसा दिया। उसी वक़्त परवाने की तरह उस शम-ए-जमाल पर कुरबान हो गई और उसका ताइरे रूह अपने नौशाह के साथ हम आग़ोश हो गया –

सुर ख़ुरूई उसे कहते हैं कि राहे हक़ में
सर के देने में ज़रा तूने तअम्मुल न किया

उनके बाद और सआदतमन्द जांनिसार, दादे जांनिसारी देते और जानें फ़िदा करते रहे। जिन-जिन ख़ुश नसीबों की क़िस्मत में था उन्होंने ख़ानदाने अह्ले बैत पर आनी जानें फ़िदा करने की सआदत हासिल की। इस ज़ुमरे में हुर बिन यज़ीद रबाही क़ाबिले ज़िक्र है। जंग के वक़्त हुर का दिल बहुत परेशान था और उसकी सीमाब और बेक़रारी उसको एक जगह न ठहरने देती थी। कभी वह अमर बिन सअद से जा कर कहते थे कि तुम इमाम के साथ जंग करोगे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क्या जवाब दोगे। अमर बिन सअद को उसका जवाब न बन आता था। वहाँ से हट कर फिर मैदान में आते हैं, बदन काँप रहा है चेहरा ज़र्द है, परेशानी के आसार नुमायाँ हैं दिल धड़क रहा है। उनके भाई मुस्अब बिन यज़ीद ने उनका यह हाल देख कर पूछा कि ऐ भाई आप मशहूर जंग आज़मा और दिलावर व शुजाअ् हैं। आपके लिए यह पहला ही मअ्रका नहीं बारहा जंग के ख़ूनी मनाज़िर आपकी नज़र के सामने गुज़रे हैं और बहुत से देव पैकर आपकी ख़ूं आशाम तल्वार से पैवन्दे ख़ाक हुए हैं। आपका यह क्या हाल है और आप पर इस क़द्र ख़ौफ़ व डर क्यों ग़ालिब है। हुर ने कहा कि ऐ भाईये मुस्तफ़ा के फ़रज़न्द से जंग है। अपनी आक़िबत से लड़ाई है। बहिश्त व दोज़ख़ के दर्मियान खड़ा हूँ। दुनिया पूरी कुव्वत के साथ मुझको

जहन्नम की तरफ़ खींच रही है। और मेरा दिल उसकी हैबत से काँप रहा है। इसी दर्मियान में हज़रत इमाम की आवाज़ आई फरमाते हैं कोई है जो आज आले रसूल पर जान निसार करे और सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हुज़ूर में सुर खुरूई पाए।

यह आवाज़ थी जिसने पाँव की बेड़ियाँ काट दीं। दिले बेताब को क़रार बख़्शा और इत्मीनान हुआ कि शाहज़ाद-ए-कौनैन हज़रत इमाम हुसैन मेरी पहली जुरअत से चश्म पोशी फरमाएं तो अजब नहीं, करीम ने करम से बशारत दी है। जान फ़िदा करने के इरादा से चल पड़ो। घोड़ा दौड़ाया और इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर घोड़े से उतर कर नियाज़मन्दों के तरीक़ों पर रिकाब थामी और अर्ज़ किया कि ऐ इब्ने रसूल फ़रज़न्दे बतूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैं वही हुर हूँ जो पहले आपके मुक़ाबिल आया और जिसने आपको मैदाने बयाबान में रोका। अपनी इस जसारत व मुबादिरत पर नादिम हूँ। शर्मिंदगी और ख़जालत नज़र नहीं उठाने देती। आपको करीमाना आवाज़ सुन कर उम्मीदों ने हिम्मत बंधाई तो हाज़िरे ख़िदमत हुआ हूँ। आपके करम से क्या बईद कि जुर्म माफ़ फरमाएं। और गुलामाने बइख़लास में शामिल करें और अपने अह्ले बैत पर जान कुरबान करने की इजाज़त दें।

हज़रत इमाम ने हुर के सर पर दस्ते मुबारक रखा और फरमाया, ऐ हुर बारगाहे इलाही में इख़्लासमन्दों के इस्तिग़फ़ार मक़्बूल हैं और तौबा मुस्तजाबे उज़्र ख़्वाह महरूम नहीं जाते। **वहुवल्लज़ी यक़्बलुत्तौबतु अन इबादेही।** शाबाश कि मैंने तेरी ग़लती मुआफ़ की। और इस सआदत के हासिल करने की इजाज़त दी।

हुर इजाज़त पाकर मैदान की तरफ़ रवाना हुआ घोड़ा चमका कर सफ़े दुश्मनाँ पर पहुँचा। हुर के भाई मुस्अब बिन यज़ीद ने देखा कि हुर ने दौलते सआदत पाई और नेमते आख़िरत से बहरामन्द हुआ। और हिर्से दुनिया के गुबार से उसका दामन पाक हुआ उसके दिल में भी वलवला उठा और बाग उठा कर घोड़ा दौड़ाता हुआ चला। अमर बिन सअद के लश्कर को गुमान हुआ कि भाई के मुक़ाबला के लिए जाता है। जब मैदान में पहुँचा, भाई से कहने लगा भाई तू मेरे लिए ख़िज़्रे राह हो गया। और मुझे तूने सख़्त तरीन गुहलके से नजात दिलाई, मैं भी तेरे साथ हूँ और रिफ़ाक़ते हज़रत इमाम की सआदत हासिल करना चाहता हूँ। आदाए बदकेश को इस वाक़ये से

निहायत हैरानी हुई।

यह वाक़्या देख कर उमर बिन सअद के बदन पर लरज़ा पड़ गया और वह घबरा उठा और उस ने एक शख़्स को मुन्तख़ब करके उसके लिए भेजा और कहा कि रफ़्क़ व मदारात के साथ समझा बहका कर हुर को अपने मुवाफ़िक़ करने की कोशिश करे और अपनी चालबाज़ी और फ़रेबकारी इंतिहा को पहुँचा दे। फिर भी नाकामी हो तो उसका सर काट कर ले आए। वह शख़्स चला और हुर से आकर कहने लगा, ऐ हुर! तेरी अक़्ल व दानाई पर हम फ़ख़्र किया करते थे मगर आज तूने कमाले नादानी की कि इस लश्करे जर्रार से निकल कर यज़ीद के इन्आम व इकराम पर ठोकर मार कर चन्द बेकस मुसाफिरों का साथ दिया। जिनके साथ नाने खुश्क का एक टुकड़ा और पानी का एक क़तरा भी नहीं है तेरी इस नादानी पर अफ़्सोस आता है।

हुर ने कहा ऐ बेअक़्ल नासेह तुझे अपनी नादानी पर रंज करना चाहिए कि तूने पाक को छोड़ कर नापाक को कुबूल किया और दौलते बाक़ी के मुक़ाबले में दुनियाए फानी के आरज़ी आराम को तरजीह दी। हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इमाम हुसैन को अपना फूल फरमाया है। मैं इस गुलिस्तान पर जान कुरबान करने की तमन्ना रखता हूँ, रज़ाए रसूल से बढ़ कर कौनैन में कौन सी दौलत है।

कहने लगा, ऐ हुर! यह तो मैं ख़ूब जानता हूँ लेकिन हम लोग सिपाही हैं और आज दौलत व माल यज़ीद के पास है।

हुर ने कहा ऐ कम हिम्मत! इस हौसले पर लानत!

अब तो नासेह बदबातिन को यक़ीन हो गया कि उसकी चर्ब जुबानी हुर पर असर नहीं कर सकती। अह्ले बैत की मुहब्बत उसके दिल में उतर गई है। और उसका सीना आले रसूल अलैहिस्सलाम की मुहब्बत से भरा हुआ है कोई मक्र व फ़रेब उस पर न चलेगा। बातें करते-करते एक तीर हुर के सीने पर खींच मारा। हुर ने ज़ख़्म खा कर एक नेज़ा का वार किया जो सीना से पार हो गया और ज़ीन से उठा कर ज़मीन पर टपक दिया। उस शख़्स के तीन भाई थे, यक्बार्गी हुर पर दौड़ पड़े। हुर ने आगे बढ़ कर एक का सर तल्वार से उड़ा दिया। दूसरे की कमर में हाथ डाल कर ज़मीन से उठा कर इस तरह फेंका कि गर्दन टूट गई। तीसरा भाग निकला। और हुर ने उसका तआक़ुब किया। क़रीब पहुँच कर उसकी पुश्त पर नेज़ा मारा वह

सीना से निकल गया अब हुर ने लश्कर इब्ने सअद के मैमना पर हमला किया और ख़ूब ज़ोर की जंग हुई। लश्कर इब्ने सअद को हुर के जंगी हुनर का एतराफ़ करना पड़ा, और वह जांबाज़ सादिक़ दादे ुजाअत देकर फ़रज़न्दे रसूल पर जान फिदा कर गया।

हज़रत इमाम आली मक़ामे हुर को उठा कर लाए और उसके सर को ज़ानुए मुबारक पर रख कर अपने पाक दामन से उसके चेहरे का गुबार दूर फ़रमाने लगे। अभी रमक़े जान बाक़ी थी। इब्ने ज़ुहरा के फूल के महकते दामन की खुशबू हुर के दिमाग़ में पहुँची, मुशामे जां मुअत्तर हो गया, आंखें खोल दीं। देखा कि इब्ने रसूलुल्लाह की गोद में है। अपने बख़्त व मुक़द्दर पर नाज़ करता हुआ फिरदौस बरीं को रवाना हुआ।

हुर के साथ उसके भाई और गुलाम ने भी नौबत ब नौबत दादे शुजाअत देकर अपनी जानें अह्ले बैत पर कुरबान कीं। पचास से ज़्यादा आदमी शहीद हो चुके अब सिर्फ़ ख़ानदाने अह्ले बैअ़त बाक़ी है। और दुश्मनाने बद बातिन की उन्हीं पर नज़र है यह हज़रात परवाना वार हज़रत इमाम पर निसार हैं। यह बात भी क़ाबिले लिहाज़ है कि इमाम आली मक़ाम के इस छोटे से लश्कर में से इस मुसीबत के वक़्त मैं किसी ने भी हिम्मत न हारी। रुफ़क़ा और मवाली में से किसी को भी तो अपनी जान प्यारी न मालूम हुई। साथियों में से एक भी ऐसा न था जो अपनी जान लेकर भागता। या दुश्मनों की पनाह चाहता। जांनिसाराने इमाम ने अपने सिद्क़ व जांबाज़ी में परवाना व बुलबुल के अफ़्साने हैच कर दिए। हर एक की तमन्ना थी और हर एक का इसरार था कि पहले जांनिसारी को उनको मौक़ा दिया जाए। इश्क़ व मुहब्बत के मतवाले शौक़े शहादत में मस्त थे। तनों का सर से जुदा होना और राहे खुदा में शहादत पाना उन पर वज्द की कैफ़ियत तारी करता था। एक को शहीद होता देख कर दूसरे के दिलों में शहादतों की उमंगें जोश मारती थीं।

अह्ले बैत के नौजवानों ने ख़ाके करबला के सफ़्हात पर अपने ख़ून से शुजाअत व जवांमर्दी के वह बेमिसाल नुक़ूश सब्त फरमाए जिनको तब्दील-ए-ज़माने के हाथ के हाथ मिटा पाने से मज्बूर हैं। अब तक नियाज़मन्दों और अक़ीदत केशों की मअ़रका आराइयाँ थीं जिन्होंने अलम्बरदाराने शुजाअत को ख़ाक व ख़ून में लुटा कर अपनी बहादुरी के ग़लग़ले दिखाए थे अब असदुल्लाह के शेराने हक़ का मौक़ा आया। और

अली-ए-मुर्तज़ा के खानदान के बहादुरों के घोड़ों ने मैदाने करबला को जूलानगाह बनाया।

इन हज़रात का मैदान में आना था कि बहादुरों के दिल सीनों में लरज़ने लगे और उनके हमलों से शेर दिल बहादुर चीख़ उठे। असदुल्लाही तल्वारें थीं या शिहाबे साक़िब की आतिश बारी। बनी हाशिम की नबुर्द आज़माई और जां शिकार हमलों ने करबला की तिशना लब ज़मीन को दुश्मनों के ख़ून से सैराब कर दिया। और ख़ुश्क रेगिस्तान सुर्ख़ नज़र आने लगा। नेज़ों की नोंकों पर सफ़ शिकन बहादुरों को उठाना और ख़ाक में मिलाना हाशमी नौजवानों का मामूली करतब था। हर घड़ी नया मुबारिज़ आता था और हाथ उठाते ही फ़ना हो जाता था। उनकी तेग़े बेनियाम मौत का प्याम थी और तल्वार की नोक क़ज़ा का फरमान। तल्वारों की चमक ने निगाहें ख़ीरह कर दीं और हर्ब व ज़र्ब के जौहर देख कर कोहे पैकर तरसां व हरासां हो गये। कभी मैमना पर हमला किया तो सफ़ें दरहम बरहम कर डालीं मालूम होता था कि सवार मक़्तूलों के समुन्द्र में तैर रहा है। कभी मैसरा की तरफ़ रुख़ किया तो मालूम हुआ कि मर्दों की जमाअत खड़ी थी जो इशारा करते ही लौट गई। बिजली की तरह चमकने वाली तेग़ ख़ून में डूब-डूब निकलती थी और ख़ून के क़तरात उस से टपकते रहते थे। इस तरह ख़ानदाने इमाम के नौजवान अपने-अपने जौहर दिखा-दिखा कर इमामे आली मक़ाम पर जान क़ुरबान करते चले जा रहे थे। ख़ेमा से चलते थे तो **बल अह्याउन इनदा रब्बेहिम।** के चमनिस्तान की दिलकश फ़िज़ा उनकी आंखों के सामने होती थी, मैदाने करबला की राह से उस मंज़िल तक पहुँचना चाहते थे।

फ़रज़न्दाने इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मुहारबे ने दुश्मन के होश उड़ा दिए। इब्ने सअद ने एतराफ़ किया कि अगर फ़रेब कारियों से काम न लिया जाता या उन हज़रात पर पानी बन्द न किया जाता तो अह्ले बैत का एक-एक नौजवान तमाम लश्कर को बर्बाद कर डालता। जब वह मुक़ाबले के लिए उठते थे तो मालूम होता था कि क़हरे इलाही आ रहा है। उनका एक-एक हुनर वर सफ़ शिकनी व मुबारिज़ फ़गनी में फर्द था। अल-हासिल अह्ले बैत के नौनिहालों और नाज़ के पालों ने मैदाने करबला में हज़रत इमाम पर अपनी जानें फिदा कीं। और तीर व तल्वार की बारिश में हिमायते हक़ से मुँह न मोड़ा गर्दनें कटवाईं, ख़ून बहाए, जानें दीं, मगर

कलिम-ए-नाहक़ ज़ुबान पर न आने दिया। नौबत-ब-नौबत तमाम शहज़ादे शहीद होते चले गये। अब हज़रत इमाम के सामने उनके नूरे नज़र हज़रत अली अकबर हाज़िर हैं। मैदान की इजाज़त चाहते हैं। मिन्नत व समाजत हो रही है। अजीब वक़्त है चहेता बेटा शफ़ीक़ बाप से गर्दन कटवाने की इजाज़त चाहताहै। और उस पर इसरार करता है। जिसकी कोई हट, कोई ज़िद ऐसी न थी जो पूरी न की जाती। जिस नाज़नीन को कभी पिद्रे मेहरबान ने इंकारी जवाब न दिया था। आज उसकी यह तमन्ना यह इल्तिजा दिल जिगर पर किया असर करती होगी। इजाज़त दें तो किस बात की? गर्दन कटाने और ख़ून बहाने की न दें तो चमनिस्ताने रिसालत का वह गुले शादाब कुम्हलाया जाता है। मगर इस आरज़ूमन्द शहादत का इसरार इस हद पर था और शौक़े शहादत ने ऐसा वारफ़्ता बना दिया था कि चार व नाचार हज़रत इमाम को इजाज़त देना ही पड़ी। हज़रत इमाम ने इस नौजवान जमील को खुद घोड़े पर सवार किया। अस्लहा अपने दस्ते मुबारक से लगाए। फौलादी मिग़फ़र सर पर रखा। कमर पर टपका बाँधा तल्वार हमाइल की। नेज़ा इस नाज़ परवरदह सयादत के मुबारक हाथ में दिया उस वक़्त अह्ले बैत की बीवियों बच्चों पर क्या गुज़र रही थी जिनका तमाम कुनबा व क़बीला बरादर व फ़रज़न्द सब शहीद हो चुके थे। और एक जगमगाता हुआ चिराग़ भी आख़िरी सलाम कर रहा था इन तमाम मुसीबतों को अह्ले बैत ने रज़ाए हक़ के लिए बड़े इस्तिक़्लाल के साथ बर्दाश्त किया और यह उन्हीं का हौसला था। हज़रत अली अकबर ख़ेमे से रुख़्सत हो कर मैदाने कार ज़ार की तरफ़ तशरीफ़ लाए। जंग के मतला में एक आफ़ताब चमका ख़म्दार ज़ुल्फ़ों की खुशबू से मैदान महक गया। चेहरा की तजल्ली ने मअ्रक-ए-कारे ज़ार को आलमे अनवार बना दिया –

नूर निगाह फातिम-ए- आसमां जनाब
सब्रे दिल ख़दीज-ए-पाके इरम क़ुबाब
लख़्ते दिल इमाम हुसैन इब्ने बू तुराब
शेरे खुदा का शेर वह शेरों में इंतिख़ाब
सूरत थी इंतिख़ाब तो क़ामत था लाजवाब
गेसू थे मुश्के नाब तो चेहरा था आफ़ताब
चेहरा से शाहज़ादा के उठा जभी नक़ाब

महरे सेपहर हो गया ख़जलत से आब आब
काकुल की शाम रुख़ की सहर मौसमे शबाब
सुंबुल निसार शामे फ़िदाए सहर गुलाब
शहज़ादा-ए-जलील अली अकबर जमील
बुस्ताने हुस्न में गुले ख़ुश मंज़र शबाब
वाला था अह्ले बैत ने आग़ोश नाज़ में
शर्मिंदा उसकी नाज़ुकी से शीश-ए-हुबाब
सहर-ए-कूफ़ा आलमे अनवार बन गया!
चमका जो रन में फातिमा ज़ुहरा का माहताब
ख़ुर्शीद जल्वागरं हुआ पुश्ते समन्द पर
या हाशमी जवान के रुख़ से उठा नक़ाब
सौलत ने मरहबा कहा शौकत भी रज्ज़ ख़्वां
जुरअत ने बाग थामी शुजाअत ने की रिकाब
जोहरा को उसके देख के आंखें झपक गई
दिल काँप उठे हो गया आदा को इज़्तिराब
सीनों में आग लग गई आदाए दीन के
ग़ैज़ व ग़ज़ब के शोअ्लों से दिल हो गये कबाब
पहरा जिगर शिगाफ़ था उस गुल के हाथ में
या अज़्दहा था मौत का या असवउल-उक़ाब
चमका के तेग़ मर्दों को नामर्द कर दिया
उस से नज़र मिलाता यह थी किस के दिल में ताब
कहते थे आज तक नहीं देखा कोई जवां
ऐसा शुजा होता जो उस शेर का जवाब
मरदाने कार लरज़ा बर अंदाम हो गये
शेर अफ़्गुनों की हालतें होने लगीं ख़राब
कि पैकरों को तेग़ से दो पारा कर दिया
की ज़र्ब ख़ौद पर तो उड़ा डालता रिकाब
तल्वार थी कि साइक़ा बर्क़ बार था
या अज़बराए रज्मे शयातीन था शिहाब
चेहरे में आफताबे नुबुव्वत का नूर था!
आंखों में शान सौलते सरकारे बूतुराब

प्यासा रखा जिन्होंने उन्हें सेर कर दिया
इस जूंद पर है आज तेरी तेग़ ज़हर आब
मैदां में उसके हुस्ने अमल देख के नईम
हैरत से बदहवास थे जितने थे शैख़ व शाब

मैदाने करबला में फातिमी नौजवान पुश्ते समन्द पर जल्वा आरा था। चेहरा की ताबिश माहे ताबां को शरमा रही थी। सर व क़ामत ने अपने जमाल से रेगिस्तान को बुस्ताने हुस्न बना दिया। जवानी की बहारें क़दमों पर निसार हो रही थीं। सुंबुले काकुल से ख़जल बर्गे गुल उसकी नज़ाकत से मुंफइन, हुस्न की तस्वीर, मुस्तफ़ा की तनवीर हबीबे किब्रिया अलैहित्तहीयते वस्सना के जमाले अक़्दस का ख़ुतबा पढ़ रही थी। यह चेहर-ए-ताबां इस रू-ए-दरख़्शां की याद दिलाता था। इन संगदिलों पर हैरत जो इस गुले शादाब के मुक़ाबले का इरादा रखते थे इन बे-दीनों पर बेशुमार नफ़रत जो हबीबे ख़ुदा के नौनिहाल को तक्लीफ़ पहुँचाना चाहते थे। यह असदुल्लाही ेर मैदान में आया। सफ़े दुश्मनाँ की तरफ़ नज़र की। ज़ुल-फ़िक़ारे हैदरी को चमकाया और अपनी ज़ुबाने मुबारक से रज्ज़ शुरू की। **अना अली इब्ने हुसैन बिन अली नहनु अह्लुल-बैते अला बिन्नबीये।** जिस वक़्त शाहज़ाद-ए-आली क़द्र ने यह रज्ज़ पढ़ी होगी करबला का चप्पा-चप्पा और रेगिस्ताने कूफ़ा का ज़र्रा-ज़र्रा काँप गया होगा। इन मुद्दअयाने ईमान के दिल पत्थर से बदरजहा बदतर थे जिन्होंने इस नौबादा चमनिस्ताने रिसालत की ज़ुबाने शीरीं से यह कलिमे सुने फिर भी उनकी आतिशे इनाद ठंडी न हुई और कमीने सीने से कीना दूर न हुआ। लश्करियों ने अमर बिन सअद से पूछा यह सवार कौन है जिसकी तजल्ली निगाहों को ख़ीरह कर रही है। और जिसकी हैबत व सौलत से बहादुरों के दिल हिरासां हैं। शाने शुजाअत उसकी एक-एक अदा से ज़ाहिर है कहने लगा यह हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के फ़रज़न्द हैं। सूरत व सीरत में अपने जद्दे करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से बहुत मुनासिबत रखते हैं यह सुन कर लश्करियों को कुछ परेशानी हुई। और उनके दिलों ने उन पर मलामत की कि इस आक़ा ज़ादे के मुक़ाबिल आना और ऐसे जलीलुल-क़द्र मेहमान के साथ यह सुलूके बेमुरव्वती करना निहायत सुफ़्ला पन और बद-बातिनी है लेकिन इब्ने ज़्याद के वादे और यज़ीद के इन्आम व इकराम की तमअ़

दौलत व माल की हिर्स ने इस तरह गिरफ़्तार किया था कि वह अह्ले बैत अतहार की क़द्र व शान और अपने अफ़आल व किरदार की शामत व नुहूसत जानने के बावजूद अपने ज़मीर की मलामत की परवाह न करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाग़ी बने और आले रसूल के ख़ून से किनारा करने और अपने दारैन की रू-सियाही से बचने की उन्होंने कोई परवाह न की शाहज़ादा आली वक़ार ने मुबारिज़ तलब फरमाया सफ़े दुश्मन में किसी को जुंबिश न हुई। किसी बहादुर का क़दम नहीं बढ़ा। मालूम होता था कि शेर के मुक़ाबिल बकरियों का एक रेवड़ है जो दम-ब-खुद और ख़ामोश है।

हज़रत अली अकबर ने फिर नारा मारा और फरमाया कि ऐ ज़ालिमाने जफ़ा केश अगर बनी फातिमा के ख़ून की प्यास है तो तुम में से जो बहादुर हो उसे मैदान में भेजो, बाज़ुए अली देखना हो तो मेरे मुक़ाबिल आओ मगर किसको हिम्मत थी जो आगे बढ़ता। किसके दिल में ताब व तवां थी कि शेरे बबर के सामने आता। जब आपने मुलाहिज़ा फरमाया कि दुश्मनाने ख़ूंख़्वार में से कोई एक आगे न बढ़ता और उनको बराबर की हिम्मत नहीं है कि एक को एक के मुक़ाबिल करें तो आपने समन्द बादपा की बाग उठाई और तोसन सबा रफ़्तार के ऐड़ लगाई और साइक़ा वार दुश्मन के लश्कर पर हमला किया। जिस तरफ़ हमला किया परे-परे हटा दिये। एक-एक वार में कई-कई देव पैकर गिरा दिए। अभी मैमना पर चमके तो उसको मुन्तशिर किया, अभी मैसरा की तरफ़ पलटे तो सफ़ें दरहम बरहम कर डालीं। कभी क़ल्बे लश्कर में ग़ोता लगाया तो गर्दन उठाने वालों के सर मौसमे ख़िज़ां के पत्तों की तरह तन के दरख़्तों से जुदा हो कर गिरने लगे। हर तरफ़ शोर बरपा हो गये। दिलावरों के दिल छूट गये। बहादुरों की हिम्मतें टूट गईं। कभी नेज़े की मार थी, कभी तल्वारों का वार था। शहज़ादा-ए-अह्ले बैत का हमला न था; अज़ाबे इलाही की बलाए अज़ीम थी। धूप में जंग करते-करते चमनिस्ताने अह्ले बैत के गुले शादाब को तिशनगी का ग़लबा हुआ। बाग मोड़ कर वालिद माजिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए अर्ज़ किया **या अबताहुल-अतश** ऐ पिदरे बुज़ुर्गवार प्यास का बहुत ग़लबा है। ग़लबा की क्या इंतिहा तीन दिन से पानी बन्द है। तेज़ धूप और उसमें जांबाज़ाना दौड़ धूप, गर्म रेगिस्तान, लोहे के हथियार जो बदन पर लगे हुए हैं वह तमाज़ते आफ़ताब से आग हो रहे हैं। अगर उस वक़्त हलक़ तर करने के लिए चन्द

क़तरे मिल जाएं तो फातिमी शेर बितली नुमा दुश्मनों को पैवन्दे ख़ाक कर डाले।

शफ़ीक़ बाप ने जांबाज़ बेटे की प्यास देखी मगर पानी कहाँ था जो इस तिशन-ए-शहादत को दिया जाता। दस्ते शफ़्क़त से चेहर-ए-गुलगुलों का गर्द व गुबार साफ़ किया। और अपनी अंगुश्तरी फ़रज़न्दे अरजुमन्द के दहाने अक़्दस में रख दी। पिद्र मेहरबान की शफ़्क़त से फ़िल-जुम्ला तस्कीन हुई। फिर शहज़ादा ने मैदान का रुख़ किया। फिर आवाज़ दी "हल मिन मुबारिज़" कोई जान पर खेलने वाला हो तो सामने आए। अमर बिन सअद ने तारिक़ से कहा बड़े शर्म की बात है कि अह्ले बैत का अकेला नौजवान मैदान में है और तुम हज़ारों की तादाद में हो। उसने पहली मरतबा मुबारिज़ तलब किया तो तुम्हारी जमाअत में किसी को हिम्मत न हुई। फिर वह आगे बढ़ा तो सफ़ें की सफ़ें दरहम बरहम कर डालीं और बहादुरों को खत्म कर दिया। भूखा है, प्यासा है, धूप में लड़ते-लड़ते थक गया है ख़स्ता और मांदा हो चुका है। फिर मुबारिज़ तलब करता है और तुम्हारी ताज़ा दम जमाअत में से किसी को हिम्मते मुक़ाबला नहीं। अफसोस है तुम्हारे दावए शुजाअत व बसालत पर। हो कुछ ग़ैरत तो मैदान में पहुँच कर मुक़ाबला करके फतह हासिल कर। तो मैं वादा करता हूँ कि तूने यह काम अंजाम दिया तो अब्दुल्लाह इब्ने ज़्याद से तुझको मूसल की हुकूमत दिला दूँगा। तारिक़ ने कहा कि मुझे अन्देशा है कि अगर मैं फ़रज़न्दे रसूल और औलादे बतूल से मुक़ाबला करके अपनी आक़िबत भी ख़राब करूं फिर भी तू अपना वादा वफा न करे तो मैं न दुनिया को रहा न दीन का। इब्ने सअद ने क़सम खाई और पुख़्ता क़ौल व क़रार किया।

इस पर लालची तारिक़ मूसल की हुकूमत के लालच में गुले बुस्ताने रिसालत के मुक़ाबले के लिए चला। सामने पहुँचते ही शहज़ाद-ए-वाला तबार पर नेज़े का वार किया। शाहज़ाद-ए-आलीजाह ने उसका नेज़ा रद्द फरमा कर सीना पर एक ऐसा नेज़ा मारा कि तारिक़ की पीठ से निकल गया और वह एक दम घोड़े से गिर गया। शहज़ादे ने बकमाले हुनर मन्दी घोड़े को एढ़ देकर उसको रौंद डाला और हड्डियाँ चकना चूर कर दीं। यह देख कर तारिक़ के बेटे अमर बिन तारिक़ को तैश आया। और वह झल्लाता हुआ घोड़ा दौड़ा कर शहज़ादे पर हमला आवर हुआ। शाहज़ादे ने एक ही नेज़े में उसका काम भी तमाम किया।

उसके बाद उसका भाई तलहा बिन तारिक़ अपने बाप और भाई का बदला लेने के लिए आतिशे शुअ्ला की तरह शहज़ादे पर दौड़ पड़ा। हज़रत अली अकबर ने उसके गिरेबान में हाथ डाल कर ज़ीन से उठा लिया और ज़मीन पर इस ज़ोर से पटका कि उसका दम निकल गया। शहज़ादे की हैबत से लश्कर में शोर बरपा हो गया।

इब्ने सअद ने एक मशहूर बहादुर मिसराअ् इब्ने ग़ालिब को शहज़ादे के मुक़ाबले के लिए भेजा। मिसराअ् ने शहज़ादे पर हमला किया। आपने तल्वार से नेज़ा क़लम करके उसके सर पर ऐसी तल्वार मारी कि ज़ीन तक कट गई दो टुक्ड़े हो कर गिर गया। अब किसी में हिम्मत न रही कि तन्हा उस शेर के मुक़ाबिल आता। मजबूर होकर इब्ने सअद ने मुहकम बिन तुफ़ैल बिन नौफ़ल को हज़ार सवारों के साथ शाहज़ादे पर यक्बार्गी हमला करने के लिए भेजा। शाहज़ादे ने नेज़ा उठा कर उन पर हमला किया। और उन्हें धकेल कर क़ल्बे लश्कर तक पहुँचा दिया।

इस हमले में शाहज़ादे के हाथ से कितने बदनसीब हलाक हुए कितने पीछे हटे, आप पर प्यास की बहुत शिद्दत हुई। फिर घोड़ा दौड़ा कर पिद्रे आली क़द्र की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया। **अल-अतश अल-अतश** बाबा प्यास की बहुत शिद्दत है। इस मरतबा हज़रत इमाम ने फरमाया ऐ नूर दीदा हौज़े कौसर से सैराबी का वक़्त क़रीब आ गया है दस्ते मुस्तफ़ा अलैहित्तहीया वस्सना से वह जाम मिलेगा जिसकी लज़्ज़त न तसव्वुर में आ सकती है न ज़ुबान बयान कर सकती है। यह सुन कर हज़रत अली अकबर को ख़ुशी हुई और वह फिर मैदान की तरफ़ लौट गये। और लश्करे दुश्मन के दाएँ बाएँ पर हमला करने लगे इस मरतबा लश्करे अश्रार ने यक्बार्गी चारों तरफ़ से घेर कर हमले करना शुरू कर दिए। आप भी हमला फरमाते रहे। और दुश्मन हलाक हो-हो कर ख़ाक व ख़ून में लोटते रहे लेकिन चारों तरफ़ से नेज़ों के ज़ख़्मों ने तने नाज़नीन को चक्ना चूर कर दिया था और चमने फातिमा का गुले रंगीन अपने ख़ून में नहा गया था। बराबर तीर व तल्वार की ज़र्बें पड़ रही थीं। और फातिमी शहसवार पर तीर व तल्वार का मींह बरस रहा था। इस हालत में आप पुश्ते ज़ीन से रूए ज़मीन पर आए और सर व क़ामत ने ख़ाके करबला पर इस्तेराहत की उस वक़्त आपने आवाज़ दी **या अबताहु अदरक्नी** ऐ पिद्र बुज़ुर्गवार मुझको लीजिए। हज़रत इमाम घोड़ा बढ़ा कर मैदान में पहुँचे और

जांबाज़ नौनिहाल को ख़ेमे में लाए। उसका सर गोद में लिया। हज़रत अली अकबर ने आंख खोली और अपना सर वालिद की गोद में देख कर फरमाया। जाने मा नियाज़ मन्दान कुरबाने तू बाद। ऐ पिद्र बुज़ुर्गवार मैं देख रहा हूँ आसमान के दरवाज़े खुले हैं। बहिश्ती हूरें शर्बत के जाम लिए इंतिज़ार कर रही हैं यह कहा और जान, जाने आफ़रीं के सुपुर्द की। **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

अह्ले बैत का सब्र व तहम्मुल अल्लाहु अक्बर! उम्मीद के गुले नौ शगुफ़्ता को कुम्हलाया हुआ देखा और अल्हम्दुलिल्लाह कहा, नाज़ के पालों को कुरबान कर दिया। और शुक्रे इलाही बजा लाए। मुसीबत व अन्दोह की कुछ इंतिहा है। फ़ाक़े पर फ़ाक़े हैं। पानी का नाम व निशान नहीं। भूखे प्यासे फ़रज़न्द तड़प-तड़प कर जानें दे चुके हैं। जलते रेत पर फातिमी नौ निहाल ज़ुल्म व जफ़ा से ज़िबह किए गये। अज़ीज़ व अक़ारिब, दोस्त व अहबाब, ख़ादिम, मवाली, दिलबन्द, जिगर पैवन्द सब आईने वफ़ा अदा करके दोपहर में शर्बते शहादत नोश कर चुके हैं। अह्ले बैत के क़ाफ़िले में सन्नाटा हो गया है। जिनका कलिमा कलिम-ए-तस्कीने दिल व राहते जान था। वह नूर की तस्वीरें ख़ाक व ख़ून में ख़ामोश पड़ी हुई हैं। आले रसूल ने रज़ा व सब्र का वह इम्तिहान दिया जिसने दुनिया को हैरत में डाल दिया है। बड़े से लेकर बच्चे तक मुब्तलाए मुसीबत थे।

हज़रत इमाम के छोटे फ़रज़न्दे अली असग़र जो अभी कम्सिन हैं शीर ख़्वार हैं प्यास से बेताब हैं। शिद्दते तिशनगी से तड़प रहे हैं माँ का दूध खुश्क हो गया है। पानी का नाम व निशान तक नहीं है। इस छोटे बच्चे की नन्हीं ज़ुबान बाहर आती है बेचैनी में हाथ पाँव मारते हैं। और बल खा-खा कर रह जाते हैं। कभी माँ की तरफ़ देखते हैं और उनको सूखी ज़ुबान दिखाते हैं। नादान बच्चा क्या जानता है कि ज़ालिमों ने पानी बन्द कर दिया है। माँ का दिल इस बेचैनी से पाश-पाश हुआ जाता है कभी बच्चा बाप की तरफ़ इशारा करता है वह जानता था कि हर चीज़ यह ला कर दिया करते थे। मेरी इस बेकसी के वक़्त भी पानी ज़रूर पहुँचायेंगे। छोटे बच्चे की बेताबी देखी न गई। वालिदा ने हज़रत इमाम से अर्ज़ किया इस नन्हीं सी जान की बेताबी देखी नहीं जाती इसको गोद में लिए जाइए और उसका हाल ज़ालिमाने संगदिल को दिखाइए इस पर तो रहम आएगा! इसको तो चन्द क़तरे दे देंगे। यह न जंग करने के लाइक़ है न मैदान के

लाइक़ है। इससे क्या अदावत है। हज़रत इमाम इस छोटे नूरे नज़र को सीने से लगा कर सिपाहे दुश्मन के सामने पहुँचे और फरमाया कि अपना तमाम कुन्बा तो तुम्हारी बेरहमी और जौर व जफा के नज़र कर चुका। अब अगर आतिशे बुग्ज़ व इनाद जोश पर है तो उसके लिए मैं हूँ। यह शीर ख़्वार बच्चा प्यास से दम तोड़ रहा है इसकी बेताबी देखो और कुछ शाइबा भी रहम का हो तो उसका हलक़ तर करने को एक घूंट पानी दो। जफ़ाकाराने संगदिल पर उसका कुछ असर न हुआ और उनको ज़रा रहम न आया। बजाए पानी के एक बदबख़्त ने तीर मारा जो अली असग़र का हलक़ छेदता हुआ इमाम के बाज़ू में बैठ गया। इमाम ने वह तीर खींचा। बच्चे ने तड़प कर जान दी। बाप की गोद से एक नूर का पुतला लिपटा हुआ है। ख़ून में नहा रहा है। अह्ले ख़ेमा को गुमान है कि सियाह दिलाने बेरहम उस बच्चे को ज़रूर पानी दे देंगे और उसकी तिशनगी दिलों पर ज़रूर असर करेगी।

लेकिन जब इमाम इस शगूफ़ा तमन्ना को ख़ेमे में लाए और उसकी वालिदा ने अव्वले नज़र में देखा कि बच्चे मैं बेताबाना हरकतें नहीं हैं। सुकून का आलम है न वह इज़्तिराब है न बेक़रारी। गुमान हुआ कि पानी दे दिया होगा। हज़रत इमाम से दरयाफ़्त किया, फरमाया वह भी साक़ी-ए-कौसर के जामे रहमत व करम से सैराब होने के लिए अपने भाईयों से जा मिला। अल्लाह तआला ने हमारी यह छोटी क़ुरबानी भी क़ुबूल फ़रमाई। अल्हम्दुलिल्लहा अला एहसानिही व नेवालिही !

रज़ा व तस्लीम की इम्तिहानगाह में इमाम हुसैन और उनके मुतवस्सेलीन ने वह साबित क़दमी दिखाई कि आलमे मलाइका भी हैरत में आ गया होगा। **इन्नी आलमु माला तालमून।** का राज़ उन पर ज़ाहिर हो गया होगा।

हज़रत इमाम आली मक़ाम की शहादत

अब वह वक़्त आया कि जांनिसार एक-एक करके रुख़्सत हो चुके और हज़रत इमाम पर जानें क़ुरबान कर गये। अब तन्हा हज़रत इमाम हैं और एक फ़रज़न्द हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन वह भी बीमार व ज़ईफ़। बावजूद इस कमज़ोरी व नाताक़ती के ख़ेमे से बाहर आए और हज़रत इमाम को तन्हा देख कर खुद मैदाने जंग जाने और अपनी जांनिसार करने के लिए नेज़ा दस्ते मुबारक में लिया लेकिन बीमारी, सफर की कोफ़्त, भूख, प्यास मुतावातिर फाक़ों और पानी की तक्लीफ़ों से ज़ुअ़फ़ (कमज़ोरी) इस दरजा तरक़्क़ी कर गया था कि खड़े होने से बदने मुबारक लरज़ता था। बावजूद इसके हिम्मते मर्दाना का यह हाल था कि मैदान का इरादा कर लिया।

हज़रत इमाम ने फरमाया, जाने पिदर लौट आओ, मैदान जाने का क़स्द (इरादा) न करो। कुंबा क़बीला अज़ीज़ व अक़ारिब, ख़ुद्दाम, मवाली जो हम्राह थे राहे हक़ में निसार कर चुका और अल्हम्दुलिल्लाह कि इन मुसीबतों को अपने जद्दे करीम के सदक़े में सब्र व तहम्मुल के साथ बर्दाश्त किया अब अपना नाचीज़ हदिया सर राह ख़ुदा में नज़्र करने के लिए हाज़िर है। तुम्हारी ज़ात के साथ बहुत उम्मीदें वाबस्ता हैं। बेकसाने अह्ले बैत को वतन तक कौन पहुँचाएगा। बीबियों की निगहदाश्त कौन करेगा। जद्द व पिद्र की जो अमानतें मेरे पास हैं किस को सुपुर्द की जाएंगी। कुरआने करीम की मुहाफ़ज़त और हक़ाइक़े इरफ़ानिया की तब्लीग़ का फ़र्ज़ किस के सर पर रखा जाएगा। मेरी नस्ल किस से चलेगी। हुसैनी सैय्यदों का सिलसिला किस से जारी होगा। यह सब उम्मीदें तुम्हारी ज़ात से जुड़ी हैं। दूदमाने रिसालत व नुबुव्वत के आख़िरी चिराग़ तुम ही हो। तुम्हारी ही तलअत से दुनिया मुस्तफ़ीद होगी। मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल्दागाने हुस्न तुम्हारे ही रूए ताबां से हबीबे हक़ के अनवार व तजल्लियात की ज़्यारत करेंगे। ऐ नूरे नज़र लख़्ते जिगर यह तमाम काम तुम्हारे ज़िम्मे किए जाते हैं। मेरे बाद तुम ही मेरे जानशीन होगे। तुम्हें मैदान जाने की इजाज़त नहीं है।

हज़रत ज़ैनुल-आबेदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि मेरे भाई तो जांनिसारी की सआदत पा चुके। और हुज़ूर के सामने ही साक़ी-ए-कौसर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आग़ोशे रहमत व करम में पहुँचे। मैं तड़प रहा हूँ मगर हज़रत इमाम ने कुछ पज़ीराना फरमाया और इमाम ज़ैनुल-आबेदीन को इन तमाम ज़िम्मेदारियों का हामिल किया। और खुद जंग के लिए तैयार हुए। कुबाए मिस्री पहनी और अमाम-ए-रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सर पर बांधा। सैय्यदुश्शोहदा अमीर हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु की सपर पुश्त पर रखी। हज़रत हैदरे कर्रार की ज़ुल-फ़िक़ार आबदार हमाइल की। अह्ले खेमा ने इस मंज़र को किन आंखों से देखा। इमाम मैदान जाने के लिए घोड़े पर सवार हुए। इस वक़्त अह्ले बैत की बेकसी इंतिहा को पहुँचती है और उनका सरदा उन से लम्बे अरसे के लिए जुदा होता है। नाज़ परवरदों के सरों से ़ाफ़क़ते पिद्री का साया उठने वाला है। नौनिहालाने अह्ले बैत के पास यतीमी मंडला रही है। बीवियों से सुहाग रुख़्सत हो रहा है। दुखे हुए और मज्रूह दिल इमाम की जुदाई से कट रहे हैं। बेकस काफ़िला हसरत की निगाहों के इमाम के चेहर-ए-अफ़्रोज़ पर नज़र कर रहा है। सकीना की तर्सी हुई आंखें पिद्रे बुज़ुर्गवार की आख़िरी दीदार कर रही हैं। आन दो आन मैं यह जल्वे हमेशा के लिए रुख़्सत होने वाले हैं। अह्ले ख़ेमा के चेहरों से रंग उड़ गये हैं। हसरत व ना उम्मीदी की तस्वीरें खड़ी हुई हैं न किसी से बदन में ज़ुंबिश है, न किसी की ज़ुबान में ताबे हरकत, नूरानी आंखों के आंसू टपक रहे हैं। खानदाने मुस्तफ़ा बेवतनी और बेकसी में अपने सरों से रहमत व करम के साया करने वाले को रुख़्सत कर रहा है। हज़रत इमाम ने अपने अह्ले बैत को तल्क़ीने सब्र फरमाई। रज़ाए इलाही पर साबिर व शाकिर रहने की हिदायत की और सब को सुपुर्दे खुदा करके मैदान की तरफ़ रुख़ किया। अब न क़ासिम हैं न अबू बकर व उमर न उस्मान व औन न जाफर अब्बास जो हज़रत इमाम को मैदान जाने से रोकें और अपनी जानों को इमाम पर फ़िदा करें। अली अकबर भी आराम की नींद सो गये जो हुसूले शहादत की तमन्ना में बेचैन थे तन्हा इमाम हैं और आप ही को दुश्मनों के मुक़ाबिल जाना है।

ख़ेमे से चले और मैदान में पहुँचे। हक़ व सदाक़त का रौशन आफताब सरज़मीने शाम में तुलू हुआ। उम्मीदे ज़िन्दगानी व तमन्नाए ज़ीस्त का गर्द व गुबार उसके जलवे को छुपा न सका। हुब्बे दुनिया व आसाइशे हयात

की रात के सियाह पर्दे आफ़ताबे हक़ की तजल्लियों से चाक-चाक हो गये। बातिल की तारीकी उसकी नूरानी किरनों से ख़त्म हो गई। मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फरज़न्दे राहे हक़ में घर लुटा कर कुन्बा कटा कर सर बकफ़ मौजूद है। हज़ारहा सिपह गिरां नबुर्द आज़मा लश्करे गिरां सामने मौजूद है। और उसकी पेशानी-ए-मुसफ़्फ़ा पुरशिकन भी नहीं। दुश्मन की फौजें पहाड़ों की तरह घेरे हुए हैं और इमाम की नज़र में परकाह के बराबर भी उनका वज़न नहीं। आपने एक रज्ज़ पढ़ी जो आपके ज़ाती व नसबी फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल थी। और इस में शामियों को रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की नाखुशी व नाराज़गी और जुल्म के अंजाम से डराया गया था उसके बाद आपने एक खुतबा फरमाया और उस में हम्द व सलात के बाद फरमाया, ऐ क़ौम खुदा से डरो जो सबका मालिक है जान देना, जान लेना सब उसके कुदरत व इख़्तियार में है अगर तुम खुदावन्दे आलम जल्ला जलालुहू पर यक़ीन रखते और मेरे जद्द हज़रत सैय्यदुल-अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए हो तो डरो कि क्यामत के दिन मीज़ाने अद्ल क़ाइम होगी। आमाल का हिसाब किया जाएगा। मेरे वालिदैन महशर में अपनी आल के बेगुनाह ख़ूनों का मुतालबा करेंगे। हुज़ूर सैय्यदुल-अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जिनकी शफ़ाअत गुनहगारों की मग्फ़िरत का ज़रिया है। और तमाम मुसलमान जिनकी शफ़ाअत के उम्मीदवार हैं वह तुमसे मेरे और मेरे जांनिसारों के ख़ूने नाहक़ का बदला चाहेंगे। तुम मेरे अह्ल व अयाल अइज़्ज़ह व बच्चों दोस्तों और साथियों में से सत्तर से ज़्यादा को शहीद कर चुके और अब मेरे क़त्ल का इरादा रखते हो। ख़बरदार हो जाओ कि इस दुनिया में पाइदारी व क़्याम नहीं। अगर सल्तनत की तमअ़ (लालच) में मेरे दरपे आज़ार हो तो मुझे मौक़ा दो कि मैं अरब छोड़ कर दुनिया के किसी और हिस्सा में चला जाऊं। अगर यह कुछ मन्ज़ूर न हो और अपनी हरकात से बाज़ न आओ, तो हम अल्लाह तआला के हुक्म और उसकी मर्ज़ी पर साबिर व शाकिर हैं।

अल-हुक्मु लिल्लाहे व रज़ीना बेक़ज़ाइल्लाहे।

हज़रत इमाम की ज़ुबान गौहरे फ़िशां से यह कलिमात सुन कर कूफ़ियों में से बहुत लोग रो पड़े दिल सबके जानते थे कि वह बरसरे जुल्म व जफ़ा हैं और हिमायते बातिल के लिए उन्होंने दारैन की रूसियाही की

है। और यह भी सबको यक़ीन था कि इमामे मज़्लूम हक़ पर हैं, इमाम के ख़िलाफ़ एक-एक जुंबिश दुश्मनाने हक़ के लिए आख़िरत की रुस्वाई व ज़िल्लत का सबब है। इसलिए बहुत से लोगों पर असर हुआ। और ज़ालिमाने बद बातिन ने भी एक लम्हा के लिए उस से असर लिया। उनके बदनों पर एक फुरेरी सी आ गई और उनके दिलों में एक बिजली सी चमक गई। लेकिन शिम्र वग़ैरह बद सीरत व पलीद तबीअ़त रज़ील कुछ मुतअस्सिर न हुए बल्कि यह देख कर कि लश्करियों पर हज़रत इमाम की तक़रीर का कुछ असर मालूम होता है कहने लगे कि आप क़िस्सा ख़त्म कीजिए और इब्ने ज़्याद के पास चल कर यज़ीद की बैअ़त कर लीजिए। तो आप से कोई आप से तआरुज़ न करेगा वरना सिवाय जंग के कोई चारा नहीं है। हज़रत इमाम को अंजाम मालूम था। लेकिन यह तक़रीर इक़ामते हुज्जत के लिए फरमानी थी कि उन्हें कोई उज़्र बाक़ी न रहे।

सैय्यदे अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नूरे नज़र, ख़ातूने जन्नत फातिमा ज़ुहरा का लख़्ते जिगर बेकसी, भूख प्यास की हालत में आल व अस्हाब की जुदाई का ज़ख़्म दिल पर लिए हुए गर्म रेगिस्तान में बीस हज़ार लश्कर के सामने तशरीफ़ फरमा है। तमाम हुज्जतें क़तअ़ कर दी गईं अपने फ़ज़ाइल और अपनी बेगुनाही से दुश्मनों को अच्छी तरह आगाह कर दिया और बार-बार बता दिया कि मैं बक़स्दे जंग नहीं आया और उस वक़्त तक इराद-ए-जंग नहीं है अब भी मौक़ा दो तो वापस चला जाऊं मगर बीस हज़ार की तादाद इमाम को बेकस व तन्हा देख कर जोशे बहादुरी दिखाना चाहती है।

जब हज़रत इमाम ने इत्मीनान फरमाया कि सियाह दिलाने बद बातिन के लिए कोई उज़्र बाक़ी न रहा और वह किसी तरह ख़ूने नाहक़ व ज़ुल्म बेनिहायत से बाज़ आने वाले नहीं तो इमाम ने फरमाया कि तुम जो इरादा रखते हो पूरा करो। और जिसको मेरे मुक़ाबले के लिए भेजना चाहते हो भेजो। मशहूर बहादुर और यगाना नबुर्द आज़मा जिनको सख़्त वक़्त के लिए महफूज़ रखा गया था मैदान में भेजे गये थे। एक बेहया इब्ने ज़ुहरा के मुक़ाबिल तल्वार चमकाता आता है इमाम तिशना काम को आबे तेग़ दिखाता है। पेशवाए दीन के सामने अपनी बहादुरी की डींगें मारता है। गुरूरे व कुव्वत में सरशार है। कसरते लश्कर और तन्हाई-ए-इमाम पर नाज़ां है। आते ही हज़रत इमाम की तरफ़ तल्वार खींचता है। अभी हाथ

उठा ही था कि इमाम ने ज़र्ब फरमाई। सर कट कर दूर जा पड़ा। और गुरूर शुजाअत खाक में मिल गया। दूसरा बढ़ा और चाहा कि इमाम के मुक़ाबले में हुनरमन्दी का इज़्हार करके सियाह दिलों की जमाअत में सुर्ख़ रूई हासिल करे। एक नअ़रा मारा और पुकार कर कहने लगा कि बहादुराने कोहे शिकन शाम व इराक़ में मेरी बहादुरी का ग़लग़ला है और मिस्र व रूम में मैं शौहर-ए-आफ़ाक़ हूँ। दुनिया भर क बहादुर मेरा लोहा मानते हैं, आज तुम मेरे ज़ोर व कुव्वत को और दाव पेच को देखो।

इब्ने सअद के लश्करी उस मुतकब्बिर सरकश की डींगों से बहुत खुश हुए। और सब देखने लगे कि किस तरह इमाम से मुक़ाबला करेगा। लश्करियों को यक़ीन था कि हज़रत इमाम पर भूख प्यास की तक्लीफ़ हद से गुज़र चुकी है। सदमों ने कमज़ोर कर दिया है ऐसे वक़्त इमाम पर ग़ालिब आ जाना कुछ मुश्किल नहीं है। जब सिपाहे शाम का गुस्ताख़ जफाकार सरकशाना घोड़ा कुदाता सामने आया। हज़रत इमाम ने फरमाया तू मुझे जानता नहीं जो मेरे मुक़ाबिल इस दिलेरी से आता है होश में हो। इस तरह एक-एक मुक़ाबिल आया तो तेग़े ख़ूँ आशाम से सबका काम तमाम कर दिया जाएगा। हुसैन को कम्ज़ोर व बेकस देख कर हौसला मन्दियों का इज़्हार कर रहे हो। नामर्दो मेरी नज़र में तुम्हारी कोई हकीक़त नहीं। शामी जवान यह सुन कर और तैश में आया। और बजाए जवाब के हज़रत इमाम पर तल्वार का वार किया। हज़रत इमाम ने उसका वार बचा कर कमर पर तल्वार मारी, मालूम होता था खीरा था काट डाला। अह्ले शाम को अब यह इत्मीनान था कि हज़रत के सिवा अब और तो कोई बाक़ी न रहा। कहाँ तक न थकेंगे प्यास की हालत, धूप की तपिश कमज़ोर कर चुकी थी। ब्हादुरी के जौहर दिखाने का वक़्त है। जहाँ तक हो एक-एक मुक़ाबिल किया जाए कोई तो कामयाब होगा इस तरह नए-नए दम बदम शेरे सौलत, पीले पैकर, तेग़ज़न हज़रत इमाम के मुक़ाबिल आते रहे मगर जो सामने आया एक ही हाथ में उसका क़िस्सा तमाम फरमाया। किसी के सर पर तल्वार मारी तो ज़ीन तक काट डाली। किसी के हमाइले हाथ मारा तो क़ल्मी तराश दिया। ख़ौद व मग़्फ़िर काट डाले। जोशन व आईने क़तअ़ कर दिए। किसी को नेज़ा पर उठाया और ज़मीन पर पटक दिया। किसी के सीने में नेज़ा मारा और पार निकाल दिया।

ज़मीने करबला में बहादुराने कूफ़ा का खेत बो दिया। नामवराने सफ़

शिकन के ख़ूनों से करबला के प्यासे रेगिस्तान को सैराब फरमा दिया। लाशों के अंबार लग गये, बड़े-बड़े फख्रे रोजगार बहादुर काम आ गये। लश्करे दुश्मनों में शोर बरपा हो गया कि जंग का यह अंदाज़ रहा तो हैदर का शेर कूफ़ा के औरतों व बच्चों को बेवह व यतीम बना कर छोड़ेगा। और उसकी तेग़ बेपनाह से कोई बहादुर जान बचा कर न ले जा सकेगा। मौका मत दो और चारों तरफ़ से घेर कर यक्बारगी हमला करो। बाकीमाँदा रूबाह सीरत हज़रत इमाम के मुक़ाबला से आजिज़ आए और यही सूरत इख़्तियार की और माहे चर्खे हक़्क़ानियत पर जौर व जफा की तारीक घटा छा गई और हज़ारों नौजवान दौड़ पड़े और हज़रत इमाम को घेर लिया। और तल्वार बरसानी शुरू की और हज़रत इमाम की बहादुरी की सताइश हो रही थी और आप ख़ूंख़्वारों के घेरे में अपनी तेग़े आबदार के जौहर दिखा रहे थे। जिस तरफ़ घोड़ा बढ़ा दिया परे के परे काट डाले। दुश्मन हैबतज़दह हो गये और हैरत में आ गये कि इमाम के हमल-ए-जानिस्तां से रिहाई की कोई सूरत नहीं। हज़ारों आदमियों में घिरे हुए हैं और दुश्मनों का सर इस तरह उड़ा रहे हैं जिस तरह बादे ख़िज़ां के झोंके दरख़्तों से पत्ते गिराते हैं इब्ने सअद और उसके चाहकारों को बहुत परेशानी हुई कि अकेले इमाम के मुक़ाबिल हज़ारों की जमाअतें कम हैं। कूफ़ियों की इज़्ज़त ख़ाक में मिल गई। तमाम नामवराने कूफ़ा की जमाअतें एक हिजाज़ी जवान के हाथ से जान न बचा सकीं। तारीख़े दुनिया में हमारी नामर्दी का यह वाक़या अह्ले कूफ़ा को हमेशा रुसवाए आलम करता रहेगा। कोई तदबीर करना चाहिए। तज्वीज़ यह हुई कि दस्त बदस्त जंग में हमारी सारी फौज भी इस ेरे हक़ से मुक़ाबला नहीं कर सकती। सिवाय उसके कि कोई सूरत नहीं है कि हर चहार तरफ़ से इमाम पर तीरों का मींह बरसाया जाए। और जब ख़ूब ज़ख़्मी हो चुकीं तो नेज़ों के हमलों से तने नाज़नीन को ज़ख़्मी किया जाएं तीर अंदाज़ों की जमाअतें हर तरफ़ से घिर आईं और इमाम तिश्ना काम को गरदाबे बला में घेर कर तीर बरसाने शुरू कर दिए। घोड़ा इस क़द्र ज़ख़्मी हो गया कि उसमें काम करने की कुव्वत न रही नाचार हज़रत इमाम को एक जगह ठहरना पड़ा। हर तरफ़ से तीर आ रहे हैं और इमामे मज़्लूम का तने नाज़ परवर निशाना बना हुआ है। नूरानी जिस्म ज़ख़्मों से चक्नाचूर और लहूलहान हो रहा है। बेशर्म कूफ़ियों ने संगदिली से मोहतरम मेहमान के साथ यह सुलूक किया। एक तीर

पेशानीए-अक्दस पर लगा यह पेशानी-ए-मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बोसा गाह थी। यह सीमाए नूर हबीबे खुदा के आरज़ू मन्दाने जमाल का क़रार दिल है। बे-अदबाने कूफ़ा ने उस पेशानी-ए-मुस्तफ़ा और उस जबीने पुर ज़िया को तीर से घायल किया। हज़रत को चक्कर आया और घोड़े से नीचे आए अब नामर्दाने सियाह बातिन ने नेज़ों पर रख लिया, नूरानी पैकर ख़ून में नहा गया और आप शहीद हो कर ज़मीन पर गिर पड़े।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।

ज़ालिमाने बदकेश ने इसी पर इक्तिफ़ा नहीं किया। और हज़रत इमाम की मुसीबतों का इसी पर ख़ात्मा नहीं हो गया। दुश्मनाने ईमान ने सरे मुबारक को तने अक़्दस से जुदा करना चाहा और नज़्र इब्ने खरशा इस नापाक इरादे से आगे बढ़ा मगर इमाम की हैबत से उसके हाथ काँप गये और तल्वार छूट पड़ी। ख़ौली इब्ने यज़ीद पलीद ने या शिम्र या इब्ने यज़ीद ने बढ़ कर सरे अक़्दस को तने मुबारक से जुदा किया।

सादिक़ जांबाज़ ने अह्दे वफ़ा पूरा किया। और दीने हक़ पर क़ाइम रह कर अपना कुन्बा, अपनी जान, राहे खुदा में इस ऊलुल-अज़्मी से नज़्र की। सूखा गला काटा गया। और करबला की ज़मीन सैय्यदुश्शोहदा के ख़ून से गुलज़ार बनी। सर व तन को ख़ाक में मिला कर अपने जद्दे करीम के दीन की हक़्क़ानियत की अमली शहादत दी। और रेगिस्ताने कूफ़ा के सफ़हात पर सिद्क़ व अमानत पर जान कुरबान करने के लिए नुक़ूश सब्त फरमाए।

करबला के बयाबान में ज़ुल्म व जफा की आंधी चली, मुस्तफ़ाई चमन के गुंचा व गुल बादे समूम की नज़्र हो गये। ख़ातूने जन्नत का लहलहाता बाग़ दोपहर में काट डाला गया। कौनेन के मताअ़ बेदीनी व बेहमीयती के सैलाब से ग़ारत हो गये। फ़रज़न्दाने आले रसूल के सर से सरदार का साया उठा। बच्चे उस ग़रीबुल-वतनी में यतीम हुए। बीबियाँ बेवह हुई। मज़्लूम बच्चे और बेकस बीवियाँ गिरफ़्तार किए गये।

मुहरम 61 हिजरी की दसवीं तारीख़ जुमा के रोज़ छप्पन साल पाँच माह पाँच दिन की उम्र में हज़रत इमाम ने इस दारे नापाइदार से रहलत फरमाई। और दाई-ए-अजल को लब्बैक कहा। इब्ने ज़्याद बद-निहाद ने सरे मुबारक को कूफ़ा के कूचा व बाज़ार में फिरा दिया। और इस तरह अपनी बे-हमीयती व बेहयाई का इज़्हार किया। फिर हज़रत सैय्यदुश्शोहदा और उनके तमाम जांबाज़ शुहदा के सरों को असीराने अह्ले बैत के साथ

शिम्र नापाक की हम्राही यज़ीद के पास दमिश्क भेजा। यज़ीद ने सरे मुबारक और अह्ले बैत को हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के साथ मदीना-तैयबा भेजा। और वहाँ हज़रत इमाम का सरे मुबारक आपकी वालिदा माजिदा हज़रत ख़ातूने जन्नत रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा या हज़रत इमाम हसन के पहलू में मदफून हुआ। इस ख़ूनी वाक़ये से हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को जो रंज पहुँचा और क़ल्बे मुबारक को जो सदमा पहुँचा, अंदाज़े और क़्यास से बाहर है। इमाम अहमद और बैहकी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की। एक रोज़ में दोपहर के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलातु वत्तस्लीमात की ज़्यारत से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुआ। मैंने देखा कि सुंबुले मुअंबर गैसुए मुअत्तर बिखरे हुए और गुबार आलूद हैं। दस्ते मुबारक में एक ख़ून भरी शीशी है। यह हाल देख कर दिल बेचैन हो गया। मैंने अर्ज़ किया ऐ आक़ा! कुर्बानते शोम यह क्या हाल है। फरमाया हुसैन और उनके रफ़ीकों (साथियों) का ख़ून है। मैं उसे आज सुबह से उठा रहा हूँ। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं मैंने इस तारीख़ व वक़्त को याद रखा। जब ख़बर आई तो मालूम हुआ कि हज़रत इमाम उसी वक़्त शहीद किए गये। हाकिम ने बैहक़ी में हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से एक हदीस रिवायत की। उन्होंने भी इसी तरह हुज़ूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीमात को ख़्वाब में देखा कि आपके सरे मुबारक व रेशे अक़्दस पर गर्द व गुबार है अर्ज़ किया, जान मा कनीज़ान निसारे तू बाद। या रसूलल्लाह! यह क्या हाल है। फरमाया अभी इमाम हुसैन के मक़्तल में गया था बैहक़ी अबू नुऐम ने बसरा अज़्दीया से रिवायत की कि जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु शहीद किये गये तो आसमान से ख़ून बरसा। सुबह को हमारे मटके, घड़े और तमाम बर्तन ख़ून से भरे हुए थे। बैहक़ी अबू नुऐम ने जुहरी से रिवायत की कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जिस रोज़ शहीद किए गये उस रोज़ बैतुल-मुक़द्दस में जो पत्थर उठाया जाता था उसके नीचे ताज़ा ख़ून पाया जाता था। बैहक़ी ने उम्मे हिब्बान से रिवायत की है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत के दिन अंधेरा हो गया और तीन रोज़ कामिल अंधेरा रहा। और जिस शख़्स ने मुँह पर ज़ाफ़रान (ग़ाज़ा) मला उसका मुँह जल गया और बैतुल-मुक़द्दस के पत्थरों के नीचे ताज़ा ख़ून

JANNATI KAUN?

पाया गया। बैहक़ी ने जमील बिन मुर्रा से रिवायत की कि यज़ीद के लश्करियों ने लश्करे इमाम में एक ऊंट पाया और इमाम की शहादत के रोज़ उसको ज़िबह किया। और पकाया तो इन्दरायन की तरह कड़वा हो गया और उसको कोई न खा सका। अबू नुऐम ने सुफ़्यान से रिवायत की वह कहते हैं कि मुझको मेरी दादी ने ख़बर दी कि हज़रत इमाम की शहादत के दिन मैंने देखा रस (कुसुम) राख हो गया और गोश्त आग हो गया। बैहक़ी ने अली बिन शेर से रिवायत की कि मैंने अपनी दादी से सुना वह कहती थीं कि मैं हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के ज़माने में जवान लड़की थी, कई रोज़ आसमान रोया। यानी आसमान से ख़ून बरसा। कुछ मुअर्रेख़ीन (इतिहासकारों) ने कहा कि सात रोज़ तक आसमान ख़ून रोया। उसके असर से दीवारें और इमारतें रंगीन हो गईं और जो कपड़ा इस से रंगीन हुआ इसकी सुर्ख़ी पुरज़े-पुरज़े होने तक न गई। अबू नुऐम ने हबीब बिन साबित से रिवायत की कि मैंने जिन्नों को हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु पर इस तरह नौहा ख़्वानी करते सुना।

मसहन-नबीयु जबीनहू
फ़लहू बरीक़ुन फ़िल-ख़ुदूदे
इस जबीन को नबी ने चूमा था
है वही नूर उसके चेहरे पर
अबवाहु मिन उल्या क़ुरैश
जद्दहू ख़ौरल-जूदूदे
उसके माँ बाप बर तरीन क़ुरैश
उसके नाना जहाँ से बेहतर

अबू नुऐम ने हबीब बिन साबित से रिवायत की कि उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने फरमाया कि मैंने हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद से सिवाए आज के कभी जिन्नों को नौहा करते और रोते न सुना था। मगर आज सुना तो मैंने जाना कि मेरा फ़रज़न्द हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु शहीद हो गया। मैंने अपनी लौंडी को भेज कर ख़बर मंगाई तो मालूम हुआ कि हज़रत इमाम शहीद हो गये जिन्न इस नौहा के साथ ज़ारी करते थे।

इल्ला या ऐना फ़ब्तहली बेजहदे
वमन यब्का अलश्शुहदाइ बअ्दी

हो सके जितना रो ले तू ऐ चश्म
कौन रोएगा फिर शहीदों को
अला रह्तिन तकूदुहुमुल-मनाया
इला मुतजिब्रिन फ़ी मलके अहदी
पास ज़ालिम के खींच कर लाई
मौत उन बेकसों ग़रीबों को

इब्ने असाकिर ने मिन्हाल बिन अमर से रिवायत की वह कहते हैं। वल्लाह मैंने बचश्मे खुद देखा कि जब सरे मुबारक इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को लोग नेज़े पर लिए जाते थे उस वक़्त मैं दमिश्क़ में था। सरे मुबारक के सामने एक शख़्स सूरः कहफ़ पढ़ रहा था जब वह इस आयत पर पहुँचा। **इन्ना असहाबल-कह्फ़े वर्रक़ीमे कानू मिन आयातिना अजबन।**

(असहाबे कहफ़ व रक़ीम हमारी निशानियों में से थे।) उस वक़्त अल्लाह तआला ने सरे मुबारक को गोयाई दी। बजुबाने फ़सीह फरमाया। **आजबु मिन असहाबिल-कह्फ़े क़त्ली व हम्ली।** (अस्हाबे कहफ़ के क़त्ल के वाक़ये से मेरा क़त्ल और मेरे सर को लिए फिरना अजीब तर है) दरहक़ीक़त बात यही है क्योंकि असहाबे कहफ़ पर काफिरों ने जुल्म किया था और हज़रत इमाम को उनकी जद्द की उम्मत ने मेहमान बना कर बुलाया। फिर बेवफ़ाई से पानी तक बन्द कर दिया आल व अस्हाब को हज़रत इमाम के सामने शहीद किया। फिर खुद हज़रत इमाम को शहीद किया। अह्ले बैत को क़ैद किया। सरे मुबारक को शहर-शहर फिराया। अस्हाबे कहफ़ सालहा साल के लम्बे ख़्वाब के बाद बोले। यह ज़रूर अजीब है मगर सरे मुबारक का तन से जुदा होने के बाद कलाम फ़रमाना उस से अजीब तर है।

अबू नुऐम ने बतरीक़े इब्ने लहीआ अबी हंबल से रिवायत की कि हज़रत इमाम की शहादत के बाद जब बदनसीब कूफ़ी सरे मुबारक को लेकर चले और पहली मंज़िल में एक पड़ाव पर बैठ कर शर्बते खुरमा पीने लगे उस वक़्त एक लोहे का क़लम नमूदार हुआ उस ने ख़ून से यह शेअ़्र लिखा क्या हुसैन को क़त्ल करने वाली उम्मत यह उम्मीद रखती है कि क़यामत के दिन उनके नाना शफ़ाअत पाये।

यह भी मन्क़ूल है कि एक मंज़िल में जब इस क़ाफ़िला ने क़याम किया वहाँ एक देर था। देर के राहिब ने उन लोगों को अस्सी हज़ार दिरहम देकर

सरे मुबारक को एक रात अपने पास रखा। गुस्ल दिया, इत्र लगाया। अदब व ताज़ीम के साथ तमाम रात ज़्यारत करता और रोता रहा। और रहमते इलाही के जो अनवार सरे मुबारक पर नाज़िल हो रहे थे उनका मुशाहदा करता रहा हत्ता कि यही उसके इस्लाम का बाइस हुआ। ज़ालिमों ने जब दराहिम तक़्सीम करने के लिए हथेलियों को खोला तो देखा सब में ठीकरियाँ भरी हुई हैं और उनके एक तरफ़ लिखा है। **वला तहसबन्नल्लाहा ग़ाफ़िलन अम्मा यअ्मलुज़्ज़ालिमून।** (ख़ुदा को ज़ालिमों के किरदार से ग़ाफ़िल न जानो) और दूसरी तरफ़ यह आयत लिखी हुई है! **व सयअ्लमुल्लज़ीना ज़लमू अय्या मुन्क़लबिन यन्क़लिबूना।** (और जुल्म करने वाले अन्क़रीब जान लेंगे कि किस करवट बैठते हैं)

ग़रज़ ज़मीन व आसमान में एक मातम बरपा था। तमाम दुनिया रंज व ग़म में गिरफ़्तार थी। शहादते इमाम के दिन आफ़ताब को गिरहन लगा। ऐसी तारीकी हुई कि दोपहर में तारे नज़र आने लगे आसमान रोया, ज़मीन रोई, हवा में जिन्नात ने नौहा ख़्वानी की। राहिब तक इस हादसा-ए-क़्यामत नुमा से काँप गये और रो पड़े। फ़रज़न्दे रसूल जिगर गोश-ए-बतूल, सरदारे क़ुरैश इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का सरे मुबारक इब्ने ज़्याद मुतकब्बिर के सामने तश्त में रखा जाए और वह फ़िरऔन की तरह मसनदे तकब्बुर पर बैठे, अह्ले बैत अपनी आंखों से यह मंज़र देखें, उनके दिलों का क्या हाल हुआ होगा। फिर सरे मुबारक और तमाम शुहदा के सरों को शहर-शहर नेज़ों पर फिराया जाए। और वह यज़ीद पलीद के सामने ला कर इसी तरह रखे जाएं। और वह खुश हो! उसको कौन बर्दाश्त कर सकता है। यज़ीद की रिआया भी बिगड़ गई और उन से यह न देखा गया। उस पर इस नाबकार ने इज़्हारे शर्मिंदगी किया मगर यह शर्मिंदगी अपनी जमाअत को क़ब्ज़े में रखने के लिए थी। दिल तो उस नापाक का अह्ले बैते किराम के हसद से भरा हुआ था। हज़रत इमाम पर जुल्म व सितम के पहाड़ टूट पड़े और आपने और आपके अह्ले बैत ने सब्र व रज़ा का वह इम्तिहान दिया जो दुनिया को हैरत में डाल देता है। राहे हक़ में वह मुसीबतें उठाई जिनके तसव्वुर से दिल काँप जाता है। यह कमाले शहादत्त व जांबाज़ी है और इस में उम्मते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए हक़ व सदाक़त पर इस्तिक़ामत व इस्तिक़लाल की बेहतरीन तालीम है।

❖❖❖

वाक़ेआत बादे शहादत

हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का वुजूदे मुबारक यज़ीद की बेक़ाइदगियों के लिए एक ज़बरदस्त मुहतसिब था। वह जानता था कि आपके ज़मान-ए-मुबारक में उसको बे-मुहारी का मौक़ा मयस्सर न आएगा। और उसकी कजरवी (टेढ़ेपन) और गुम्राही पर हज़रते इमाम सब्र न फरमायेंगे उसको नज़र आता था कि इमाम जैसे दीनदार का ताज़ियान-ए-तअ्ज़ीर (हन्टर) हर वक़्त उसके सरपर घूम रहा है इसी वजह से वह और भी ज़्यादा हज़रत इमाम की जान का दुश्मन था और इसी लिए हज़रत इमाम की शहादत उसके लिए बाइसे मुसर्रत हुई। हज़रत इमाम का साया उठना था यज़ीद खुल गया और तरह-तरह के मुआसी (गुनाहों) की गर्म बाज़ारी हो गई। ज़िना, लिवातत, हराम कारी, भाई बहन का ब्याह, सूद, शराब, धड़ल्ले से राइज हुए। नमाज़ों की पाबन्दी उठ गई। तमर्रुद व सरकशी इंतिहा को पहुंची। शैतानियत ने यहाँ तक ज़ोर किया कि मुस्लिम बिन उक़्बा को बारह हज़ार या बाइस हज़ार का लश्करे गिरां लेकर मदीना तैयबा की चढ़ाई के लिए भेजा। यह ६३ हिजरी का वाक़या है। इस नामुराद लश्कर ने मदीना तैयबा में वह तूफ़ान बरपा किया कि अल-अज़्मतु लिल्लाह, क़त्ल व ग़ारत और तरह-तरह के मज़ालिम हम्साइगान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सहबेही व बारिक व सल्लिम पर किए। वहाँ के रहने वाले के घर लूट लिए। सात सौ सहाबा को शहीद किया और दूसरे आम बाशिन्दे मिला कर दस हज़ार से ज़्यादा को शहीद किया। लड़कों को क़ैद कर लिया। ऐसी-ऐसी बद-तमीज़ियाँ कीं जिनका ज़िक्र करना नागवार है। मस्जिदे नबवी शरीफ़ के सुतूनों में घोड़े बांधे। तीन दिन तक लोग मस्जिद शरीफ़ में नमाज़ से मुशर्रफ़ न हो सके। सिर्फ़ हज़रत सईद इब्ने मुसैय्यिब रज़ि अल्लाहु अन्हु दीवाने बन कर वहाँ हाज़िर रहे। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने हन्ज़ला इब्ने गुसैल ने फरमाया कि यज़ीदियों के नाशाइस्ता हरकात का इस हद पर पहुँचे हैं कि हमें अन्देशा होने लगा कि उनकी बदकारियों की वजह से कहीं आसमान से पत्थर न बरसें। फिर यह लश्कर शरारते असर मक्का मुकर्रमा की तरफ़ रवाना हुआ। रास्ते में अमीरे लश्कर

मर गया। और दूसरा शख़्स उसका क़ाइम मुक़ाम किया गया। मक्का मुअज़्ज़मा पहुँच कर उन बेदीनों ने मिंजिनीक़ से संगबारी की (मिन्ज़ीनीक़ पत्थर फेंकने का आला होता है जिस से पत्थर फेंक कर मारा जाता है उसकी ज़द बड़ी ज़बरदस्त और दूर की मार होती है) इस सग बारी से हरम शरीफ़ का सहने मुबारक पत्थरों से भर गया। और मस्जिदे हराम के सुतून टूट पड़े और काब-ए-मुक़द्दसा के ग़िलाफ़ शरीफ़ और छत को उन बेदीनों ने जला दिया। उन छत में उस दुंबे के सींग भी तबर्रुक के तौर पर महफ़ूज़ थे। जो सैय्यदना हज़रत इस्माईल अला नबीय्येना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम के फ़िदिये में कुरबानी किया गया था वह भी जल गये काबा-ए-मुक़द्दसा कई रोज़ तक बेलिबास रहा और वहाँ के बाशिन्दे सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे।

आख़िर कार यज़ीद पलीद को अल्लाह तआला ने हलाक फरमाया और वह बद-नसीब तीन बरस सात महीने तख़्ते हुकूमत पर शैतानियत करके **15** रबीउल-अव्वल **64** हिजरी को जिस रोज़ उस पलीद के हुक्म से काब-ए-मुअज़्ज़मा की बेहुरमती हुई थी, शहर हम्स मुल्के शाम में उन्तालीस बरस की उम्र में हलाक हुआ। हुनूज़ क़त्ल जारी था कि यज़ीद नापाक की हलाकत की ख़बर पहुँची हज़रत इब्ने ज़ुबैर ने निदा दी कि अह्ले शाम तुम्हारा ताग़ूत हलाक हो गया। यह सुन कर वह लोग ज़लील व ख़्वार हुए और लोग उन पर टूट पड़े और वह गिरोह नाहक़ पुज़्दा ख़ाइब व ख़ासिर हुआ। अह्ले मक्का को उनके ज़ुल्म से नजात मिली। अह्ले हिजाज़, यमन व इराक़ व खुरासान ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की और अह्ले मिस्र व शाम ने मुआविया बिन यज़ीद के हाथ पर रबीउल-अव्वल **64** हिजरी में। यह मुआविया अगरचे यज़ीद पलीद की औलाद से था मगर आदमी नेक और सालेह था। बाप के नापाक कामों को बुरा जानता था। इनाने हुकूमत हाथ में लेते वक़्त से तादमे मौत बीमार ही रहा और किसी काम की तरफ़ नज़र न डाली और चालीस या दो तीन माह की हुकूमत के बाद इक्कीस साल की उम्र में मर गया। आख़िरे वक़्त में उस से कहा गया कि किसी को ख़लीफ़ा करे उसका जवाब उसने यह दिया कि मैंने ख़िलाफ़त में कोई मिठास नहीं पाई तो मैं इस तल्ख़ी में किसी दूसरे को क्यों मुब्तला करूं।

मुआविया बिन यज़ीद के इंतिक़ाल के बाद अह्ले मिस्र व शाम ने भी

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की बैअत की फिर मरवान बिन हकम ने खुरूज किया और उसको शाम व मिस्र पर कब्ज़ा हुआ। 65 हिजरी में उसका इंतिकाल हुआ और उसकी जगह उसका बेटा अब्दुल-मलिक उसका काइम मुकाम हुआ। अब्दुल-मलिक के ज़माने में मुख़्तार बिन उबैद सक्फ़ी ने अमर बिन सअद को बुलाया। इब्ने सअद का बेटा हफ्स हाज़िर हुआ। मुख़्तार ने दरयाफ़्त किया तेरा बाप कहाँ है? कहने लगा कि वह ख़ल्वत नशीन हो गया है घर से बाहर नहीं निकलता। उस पर मुख़्तार ने कहा अब वह "रय" की हुकूमत कहाँ है जिसकी चाहत में फ़रज़न्दे रसूल से बेवफ़ाई की थी अब क्यों उस से दस्त बरदार हो कर घर में बैठा है। हज़रत इमाम के शहादत के रोज़ क्यों खाना नशीन न हुआ। उसके बाद मुख़्तार ने इब्ने सअद और उसके बेटे और शिम्र नापाक की गर्दन मारने का हुक्म दिया और उन सबके सर कटवा कर हज़रत मुहम्मद बिन हन्फ़ीया बरादर हज़रत इमाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास भेज दिए और शिम्र की लाश को घोड़ों के सुमों से रौंदवा दिया जिस से उसके सीने और पसली की हड्डियाँ चकना चूर हो गईं। शिम्र हज़रत इमाम के क़ातिलों में से है। और इब्ने सअद उस लश्कर का क़ाफ़िला सालार व कमानदार था जिसने हज़रत इमाम पर मज़ालिम के तूफ़ान तोड़े आज उन ज़ालिमाने सितम शिआर व मग़रूराने नाबकार के सर तन से जुदा करके गली कूचे में फिराए जा रहे हैं। और दुनिया में कोई उनकी बेकसी पर अफसोस करने वाला नहीं। हर शख़्स मलामत करता है। और नज़रे हिक़ारत से देखता है और उनकी इस ज़िल्लत व रुसवाई की मौत पर खुश होता है। मुसलमानों ने मुख़्तार के इस कारनामे पर खुशी का इज़्हार किया। और उसको दुश्मनाने इमाम से बदला लेने पर मुबारकबाद दी।

ऐ इब्ने सअद रय की हुकूमत तो क्या मिली
जुल्म व जफा की जल्द ही तुझको सज़ा मिली
ऐ शिम्रे नाबकार शहीदों के ख़ून की
कैसी सज़ा तुझे अभी ऐ ना सज़ा मिली
ऐ तिशनगाने ख़ून जवानाने अह्ले बैत
देखा कि तुम को जुल्म की कैसी सज़ा मिली
कुत्तों की तरह लाशे तुम्हारे सड़ा किए
घूरे पे भी न गोर को तुम्हारी जा मिली

रुस्वाए खल्क़ हो गये बरबाद हो गये
मरदूदो! तुम को ज़िल्लते हर दोसरा मिली
तुमने उजाड़ा हज़रते ज़ुहरा का बोस्तां
तुम खुद उजड़ गये तुम्हें यह बद्दुआ मिली
दुनिया परस्तो! दीन से मुँह मोड़ कर तुम्हें
दुनिया मिली न ऐश व तरब की हवा मिली
आख़िर दिखाया रंग शहीदों के ख़ून ने
सर कट गये अमां न तुम्हें इक ज़रा मिली
पाई है क्या नईम उन्होंने अभी सज़ा
देखेंगे वह जहीम में जिस दिन सज़ा मिली

इसके बाद मुख़्तार ने एक हुक्मे आम दिया कि करबला में जो शख़्स अमर बिन सअद का शरीक था वह जहाँ पाया जाए, मार डाला जाए। यह हुक्म सुन कर कूफ़ा के जफ़ा शिआर सूरमा बसरा भागना शुरू हुए मुख़्तार के लश्कर ने उनका पीछा किया जिसको जहाँ पाया ख़त्म कर दिया। लाशें जला डालीं। घर लूट लिए। ख़ौली बिन यज़ीद वह ख़बीस है जिस ने हज़रत इमाम आली मक़ाम का सर मुबारक तने अक़्दस से जुदा किया था। यह रूसियाह भी गिरफ़्तार करके मुख़्तार के पास लाया गया। मुख़्तार ने पहले उसके चारों हाथ पैर कटवाए फिर सूली चढ़ाया। आख़िर आग में झोंक दिया। इस तरह लश्कर इब्ने सअद के तमाम ज़ालिमों को तरह-तरह के अज़ाबों के साथ हलाक किया। छः हज़ार कूफ़ी जो हज़रत इमाम के क़त्ल में शरीक थे उनको मुख़्तार ने तरह-तरह के अज़ाबों के साथ हलाक कर दिया।

इब्ने ज़्याद की हलाकत

अब्दुल्लाह बिन ज़्याद, यज़ीद की तरफ़ से कूफ़ा का वाली (गवर्नर) बनाया गया था। इसी बद-निहाद के हुक्म से हज़रत इमाम और आपके अह्‌ले बैत को यह तमाम तक्लीफ़ें पहुँचाई गईं। यही इब्ने ज़्याद मूसल में तीस हज़ार फौज के साथ उतरा। मुख़्तार ने इब्राहीम बिन मालिक अश्तर को उसके मुक़ाबला के लिए एक फौज को देकर भेजा मूसल से पन्द्रह कोस के फासिले पर दरियाए फ़ुरात के किनारे दोनों लश्करों में मुक़ाबला हुआ और सुबह से शाम तक ख़ूब जंग रही। जब दिन ख़त्म होने वाला था और आफ़ताब क़रीबे ग़ुरूब था उस वक़्त इब्राहीम की फौज ग़ालिब आई। इब्ने ज़्याद को शिकस्त हुई उसके हम्राही भागे।

इब्राहीम ने हुक्म दिया कि फौजे मुख़ालिफ़ में से जो हाथ आए उसको ज़िन्दा न छोड़ा जाए। चुनांचे बहुत से हलाक किए गये। इसी हंगामे में इब्ने ज़्याद भी फ़ुरात के किनारे मुहर्रम की दसवीं तारीख़ 67 हिजरी में मारा गया और उसका सर काट कर इब्राहीम के पास भेजा गया इब्राहीम ने मुख़्तार के पास कूफ़ा में भेजवा दिया। मुख़्तार ने दारुल-इमारत कूफ़ा को आरास्ता किया और अह्‌ले कूफ़ा को जमा करके इब्ने ज़्याद का सरे नापाक उसी जगह रखवाया। जिस जगह इस मग़रूर हुकूमत व बन्द-ए-दुनिया ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का सरे मुबारक रखा था। मुख़्तार ने अह्‌ले कूफ़ा को ख़िताब करके कहा कि ऐ अह्‌ले कूफ़ा देख लो कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ख़ून नाहक़ ने इब्ने ज़्याद को न छोड़ा। आज इस नामुराद का सर ऐसी ज़िल्लत व रुसवाई के साथ यहाँ रखा हुआ है। छेः साल हुए हैं वही तारीख़ है वही जगह है खुदावन्दे आलम ने इस मग़रूर फ़िरऔन ख़िसाल को ऐसी ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ हलाक किया। उसी कूफ़ा और उसी दारुल-इमारत में उस बेदीन के क़त्ल व हलाकत पर जश्न मनाया जा रहा है।

तिर्मिज़ी शरीफ़ की सही हदीस में है कि जिस वक़्त इब्ने ज़्याद और उसके सरदारों के सर मुख़्तार के सामने ला कर रखे गये तो एक बड़ा साँप नमूदार हुआ और उसकी हैबत से लोग डर गये वह तमाम सरों पर फिरा फिर जब अब्दुल्लाह बिन ज़्याद के सर के पास पहुँचा उसके नथुनों में घुस

गया और थोड़ी देर ठहर कर उसके मुँह से निकला। इस तरह तीन बार साँप उसके सर के अन्दर दाख़िल हुआ और ग़ायब हो गया।

इब्ने ज़्याद, इब्ने सअद, शिम्र, कैस इब्ने अश्अश किन्दी, ख़ौली इब्ने यज़ीद, सिनान इब्ने अनस नख़्ई, अब्दुल्लाह बिन कैस, यज़ीद बिन मालिक और बाक़ी तमाम अश्क़िया जो हज़रत इमाम के क़त्ल में शरीक थे और शामिल थे तरह-तरह की अकूबतों से क़त्ल किए गये और उनकी लाशें घोड़ों की टापों से पामाल कराई गईं।

हदीस शरीफ़ में अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ से वादा है कि ख़ूने हज़रत इमाम के बदले सत्तर हज़ार शक़ी मारे जाएंगे वह पूरा हुआ दुनिया परस्ताराने सियाह बातिन और मग़रूराने तारीक दरूं क्या उम्मीदें बांध रहे थे और हज़रत इमाम अला जद्देही व अलैहिस्सलातु वस्सलाम की शहादत से उन दुश्मनाने हक़ को कैसी कुछ उम्मीदों थीं। लश्करियों को गिरां क़द्र इन्आमों के वादे दिए गये। सरदारों को ओहदे और हुकूमत का लालच दिया गया था। यज़ीद और इब्ने ज़्याद वग़ैरह के दिमाग़ों में जहाँगीर सलतनत के नक़्शे खिंचे हुए थे। वह समझते थे कि फ़क़त इमाम ही का वजूद हमारे लिए ऐशे दुनिया से माने (रोकने वाला) है, यह न हों तो तमाम रू-ए-ज़मीन पर यज़ीदियों की सलतनत हो जाए। और हज़ारों बरस के लिए उनकी हुकूमत का झण्डा गड़ जाए मगर जुल्म के अंजाम और क़हरे इलाही की तबाहकुन बिजलियों और दर्द रसीदगाने अह्ले बैत की जहाँ बरहम कुन आहों की तासीरात से बेख़र थे।

उन्हें नहीं मालूम था कि ख़ूने शोहदा रंग लाएगा और सलतनत के पुरज़े उड़ जाएंगे एक-एक शख़्स जो क़त्ले इमाम में शरीक हुआ है तरह-तरह के अज़ाबों से हलाक होगा। वही फ़ुरात का किनारा होगा वही आशूरा का दिन वही ज़ालिमों की क़ौम होगी और मुख़्तार के घोड़े उन्हें रौंदते होंगे उनकी जमाअतों की अक्सरीयत उनके काम न आएगी। उनके हाथ पाँव काटे जाएंगे घर लौटे जाएंगे। सूलियाँ दी जाएंगी। लाशें सड़ेंगी। दुनिया में हर शख़्स तुफ़-तुफ़ करेगा। इस हलाकत पर खुशी मनाई जाएगी। मअ्रक-ए-जंग में अगरचे उनकी तादाद हज़ारों की होगी मगर वह दिल छोड़ कर हिजड़ों की तरह भागेंगे और चूहों और कुत्तों की तरह उन्हें जान बचानी मुश्किल होगी। जहाँ पाए जाएंगे मार दिए जाएंगे। दुनिया में क़यामत तक उन पर नफ़रत व मलामत की जाएगी।

हज़रम इमाम की शहादत हिमायते हक़ के लिए है इस राह की तक्लीफ़ें इज़्ज़त हैं। और फिर वह भी इस शान के साथ कि इस ख़ानदाने आली का बच्चा-बच्चा शेर बन कर मैदान में आया मुक़ाबिल से उसकी

नज़र न झपकी। दमे आख़िर तक मुबारिज तलब करता र..। और जब नामर्दों के हुजूम ने उसको चारों तरफ़ से घेर लिया तब भी उसके पाए सबाते इस्तिक़्लाल को लग़्ज़िश न हुई उस ने मैदान से बाग न मोड़ी न हक़ व सदाक़त का दामन हाथ से छोड़ा। न अपने दावे से दस्त बरदारी की। मर्दाना जांबाज़ी का नाम दुनिया में ज़िन्दा कर दिया।

हक़ व सदाक़त का नाक़ाबिले फ़रामोश दर्स दिया। और साबित कर दिया कि फ़्यूज़े नुबुव्वत के परतव से हक़्क़ानियत की तजल्लियाँ उन बातिनों के रग व पे में ऐसी पैवस्त हो गई हैं कि तीर व तल्वार के हज़ार गहरे-गहरे ज़ख़्म भी उनको ख़ौफ़ नहीं पहुँचा सकते। आख़िरत की ज़िन्दगी का दिल्कश मंज़र उनकी चश्मे हक़ बीं के सामने इस तरह रोकश है कि आसाइशे हयाते दुनियवी को वह बेइल्तिफ़ाती की ठोकरों से ठुकरा देते हैं।

हज्जाज बिन यूसुफ़ के वक़्त में जब दोबारा हज़रत ज़ैनुल-आबेदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु क़ैद किए गये और लोहे की भारी क़ैद व बन्द का बारे गिरां उनके तने नाज़नीन पर डाला गया और पहरेदार मुतऐयन कर दिए गये ज़ोहरी इस हालत को देख कर रो पड़े और कहा कि मुझे तमन्ना थी कि मैं आपकी जगह हो ताकि आप पर यह बारे मसाइब (मुसीबतों का अंबार) दिल को गवारा नहीं है।

इस पर इमाम ज़ैनुल-आबेदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया, कि तुझे यह गुमान है कि इस क़ैद व बन्दिश से मुझे कर्ब व बेचैनी है। हक़ीक़त यह है कि अगर मैं चाहूँ तो इसमें से कुछ भी न रहे मगर इसमें अज्र है और तज़क्कुर है और अज़ाबे इलाही की याद है। यह फरमा कर बेड़ियों में से पाँव और हथकड़ियों में से हाथ निकाल दिए।

यह इख़्तियारात हैं! जो अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ से करामतन उन्हें अता फरमाए गये और वह सब्र व रज़ा है कि अपने वुजूद और आसाइश वजूद, घर बार माल व मतअ् सब से रज़ाए इलाही के लिए हाथ उठा लेते हैं और उसमें किसी चीज़ की परवाह नहीं करते। अल्लाह तआला उनके ज़ाहिरी व बातिनी बरकात से मुसलमानों को मालामाल और फ़ैज़याब फरमाए और उनकी इख़्लास मन्दाना कुरबानियों की बरकत से इस्लाम को हमेशा मुज़फ़्फ़र व मन्सूर रखे। आमीन!

वसल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरे ख़ल्क़ेही मुहम्मदिन व आलेही व इतरातिही अज्मईन।

❖❖❖❖